आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2013 ★ फाल्गुन, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

दूध की धरती खून से लथपथ..!
गोमांस निर्यात का कड़वा सच
सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात
सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात
सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात
सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात
वियतनाम,मलेशिया,फिलिपाइल्स,कुवैत, अंगोला,ओमन,इराक,कोंगो,सिरिया,इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई
इजिप्त, सऊदी अरब,अरब अमिराती,जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल,घाणा,कतार पाकिस्तान, बहरीन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्बॅनिया,नामिबिया, चीन,अफगानिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है ।
पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?
अहिंसा तीर्थ
रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ',कुसुंबा,अजंता रोड,जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212
सौजन्य
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव ✆ 0257-2223903
''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद ✆ 0240-2244520
''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ✆ 0253-2315644
जहाँ विश्वास ही परंपरा है ।
मानवीय आहार शाकाहार ।

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

न चित्ता तायए भासा,
कुओ विज्जाणुसासणं।
विसन्ना पावकम्मेहिं,
बाला पंडियमाणिणो ॥
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.11

नाना भाषा और विद्या के,
बल से भी त्राण नहीं पाते।
पापकर्म में सने मूढ़
पण्डितमानी धोखा खाते॥

मार्च, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
फाल्गुन, 2069

वर्ष 71 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वर्तमान है वरदान	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(13)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	काम-भोग की लालसा और अप्राप्त की चिन्ता	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	14
	सच्चे गुरु का स्वरूप	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	19
	साधना के चार बलों से शोभित आचार्य हीरा	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	45
भावाभिव्यक्ति-	अकिञ्चनता के धनी आचार्यश्री हीरा	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	24
गवेषणा-	आदित्य संवत्सर के अनुसार कालगणना : एक विमर्श	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	29
संगोष्ठी-आलेख-	जैनदर्शन में जीवन-प्रबन्धन के तत्त्व	-प्रो. सागरमल जैन	50
	आगमों में उल्लिखित प्रमुख श्रावकों की जीवन शैली	-श्री प्रकाशचन्द जैन	56
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Significance of the six Avashyakas (essentials)	-Dr Priyadarshana Jain	61
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (79)	-श्री धर्मचन्द जैन	65
युवा-स्तम्भ-	Jain Monks and Nuns	-Sh. Sajjanraj Mehta	68
नारी-स्तम्भ-	सद्गुणों के पुंज आचार्य श्री हीरा	-श्री अनिलकुमार जैन	73
बाल-स्तम्भ -	आतंकवाद खतम करना है	-डॉ. दिलीप धींग	85
दीक्षा अर्द्धशती -	'स्वप्निका' संबंधी जिज्ञासा-समाधान	-श्री नमन मेहता	81
दीक्षा अर्द्धशती-	आचार्य हीरा के संयम का प्रभाव	-श्री विमलचन्द सुराणा	83
कविता/गीत-	मैना गुरुणी प्यारा है	-श्री धर्मचन्द जैन	18
	वही बना श्रद्धेय हमारा	-श्री अरिहन्त चौपड़ा	23
	तेरे नाम की प्रीत गुरुवर	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	28
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.	44
	जिनके कण-कण में है विराट्ता	-सुश्री खुशबू पटवा	77
	हस्ती गुरु के पट्टधर, तुमको लाखों प्रणाम	-श्री जवाहरलाल कर्णावट	78
	चरण कमलों में करते वन्दना	-श्री देवेन्द्र नाथ मोदी	79
	स्वीकारो मेरी वन्दना	-श्री बाबूलाल जैन	80
	गरीब की होली	-रेणु सिरोया	88
	मुक्ति पथ का चयन	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	89
विचार-	Elders : A need of our family	-Sneha Sukhlecha	49
	अर्जन के साथ विसर्जन आवश्यक	-श्री नरेन्द्र कक्कड़	120
प्रेरक-प्रसंग-	गरीब कौन ?	-श्री जशकरण डागा	60
	रात्रि-भोजन त्याग से मिली स्वास्थ्य को शक्ति	-श्री सुरेश जैन	72
परिचर्चा-स्तम्भ-	संवाद (2)	-संकलित	90
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (35)	-संकलित	92
परिणाम-	आ. शिक्षणबोर्ड का परिणाम	-संकलित	96
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	101
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	103
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

सम्पादकीय

वर्तमान है वरदान

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

प्रायः हर व्यक्ति चाहता है कि उसका भविष्य सुन्दर हो, किन्तु वह वर्तमान में तदनुरूप प्रयत्न नहीं करता। वह इस तथ्य का आदर नहीं करता कि वर्तमान के सदुपयोग पर ही भविष्य की सुन्दरता निर्भर करती है। जो मानव वर्तमान की उपेक्षा करता है उसका भविष्य कभी भी सुन्दर नहीं हो सकता। वर्तमान का अभिप्राय वर्तमानकाल तथा उसमें उपलब्ध योग्यता, परिस्थिति आदि से है। जो भी वर्तमान में उपलब्ध है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भविष्य का द्वार वर्तमान ही है।

बहुत से व्यक्ति भूतकाल की स्मृति के आधार पर वर्तमान को खराब करते रहते हैं। जिनका भूतकाल सुनहरा रहा है वे वर्तमान में उस भूतकाल की बातें याद करके अथवा दूसरों को सुनाकर संतुष्ट होते रहते हैं। किन्तु भविष्य की सुन्दरता हेतु वर्तमान में प्रायः निष्क्रिय रहते हैं। कुछ व्यक्ति अपने पूर्वजों की यशोगाथा सुनाकर अपने गौरव का प्रतिपादन करते हैं, किन्तु स्वयं उस पथ पर चलने से कतराते हैं। बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो भूतकाल में हुए दोषों की स्मृति से वर्तमान को बिगाड़ते रहते हैं। अथवा भूतकाल में हुए विनाश का स्मरण कर वर्तमान को कलुषित करते रहते हैं। वर्तमान वरदान है इसे भूतकाल की स्मृतियों के आधार पर खराब करना किसी भी प्रकार उचित नहीं है। चाणक्य नीति में कहा गया है:-

गते शोको न कर्त्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्त्तन्ते विचक्षणाः।।

-चाणक्यनीति, 13.2

जो बीत गया उसका शोक नहीं करना चाहिए तथा भविष्य में क्या होगा इसकी व्यर्थ चिन्ता भी नहीं करनी चाहिए। जो वर्तमानकाल में ठीक से प्रवृत्ति करते हैं वे विचक्षण हैं। किसी का भूतकाल कितना भी बुरा रहा हो, किन्तु वह वर्तमान में निर्दोष रहकर भविष्य को सुन्दर बना सकता है। यही जैन दर्शन के कर्म-सिद्धान्त का सार है। भूतकाल की घटनाओं के संस्कार व्यक्ति के चित्त को घेरे रहते हैं। उसका मन भूत और भविष्य में विचरण करता रहता है। भूतकाल में कुछ अनिष्ट भी हो गया तो उसका शोक व्यर्थ है। व्यर्थ ही नहीं, अपितु भविष्य को बिगाड़ने वाला है। इसलिए आचारांग सूत्र में कहा गया हैं-**खणं जाणाहि पंडिए।** अर्थात् हे पंडित! वर्तमान क्षण को जानो। जो वर्तमान में जीता है वही

वर्धमान बनता है। भगवान महावीर हो या अन्य कोई महापुरुष, सभी वर्तमान का सदुपयोग करके ही महान बने हैं। कथन भी है- **वर्तमान वरते सदा, सो ज्ञानी जग मांहि।** अर्थात् जो वर्तमान में जीते हैं वे इस जगत में ज्ञानी पुरुष हैं। अज्ञानी व्यक्ति वर्तमान की उपेक्षा कर भूत और भविष्य में विचरण करता रहता है। किन्तु ज्ञानी पुरुष वर्तमान को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं। आचारांगसूत्र कहता है-**सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति।** अज्ञानी सदा सोते रहते हैं तथा ज्ञानी जागते रहते हैं। वर्तमान में सजग न रहना ही सोना है तथा वर्तमान में सजग बने रहना ही जागना है। भगवद् गीता में भी इसी प्रकार का कथन प्राप्त होता है- **या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाग्रति संयमी।** जो समस्त प्राणियों के लिए रात्रि होती है अन्धकार होता है, उसमें संयमी पुरुष जागते रहते हैं, उनके लिए वह समय प्रकाशमय होता है।

वर्तमान की उपेक्षा अज्ञानदशा में होती है। भूतकाल का शोक और भविष्य की चिन्ता भी अज्ञानदशा में होती है। किन्तु ज्ञानी पुरुष भूतकाल के शोक और भविष्य की चिन्ता से मुक्त रहकर वर्तमान को सुन्दर तरीके से जीते है।

किसी का अतीत कितना भी सुन्दर रहा हो, यदि वह वर्तमान में दोष करता है तो अतीत की सुन्दरता किस काम की? दोष होना मानव जीवन में अस्वाभाविक नहीं है। किन्तु उस दोष के जाल से ऊपर उठकर निर्दोष जीवन जीने की अभिलाषा और संकल्प शक्ति मनुष्य के दोषों को दूर कर उसे सदा के लिए निर्दोष बनाने में सक्षम है। अतीतकाल अनुभव का काल है। अनुभवों से सीख लेने में ही सार है। भूतकाल से शिक्षा लेकर वर्तमान को सुन्दर बनाता हुआ व्यक्ति भविष्य को निश्चित ही उज्ज्वल कर लेता है। यह तथ्य व्यापार, उद्योग एवं जीवन व्यवहार के सभी क्षेत्रों में लागू होता है। अध्यात्म के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव देखा जाता है। व्यापार, उद्योग आदि क्षेत्रों में वही व्यक्ति प्रगति करता है जो भूतकाल से शिक्षा लेकर वर्तमान को अच्छा बनाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वही व्यक्ति निर्दोषता की ओर आगे बढ़ता है जो भूतकाल की भूलों से शिक्षा ग्रहण करता है। भूतकाल में घटित घटनाओं से दिशाबोध प्राप्त होता है तथा उससे वर्तमान में ऊर्जा प्राप्त होती है। वर्तमान की शक्ति सबसे बढ़कर है जो भविष्य को उज्ज्वल भी बना सकती है और पतन के मार्ग पर भी धकेल सकती है।

जो व्यक्ति यह सोचता है कि मेरे जीवन के बीस, तीस,चालीस, पचास वर्ष बीत गये, अब मैं शेष जीवन में क्या कर लूँगा? यह सोच प्रगति की सूचक नहीं है। व्यक्ति चाहे तो जीवन के उत्तरकाल में भी जीवन की नई शुरूआत कर सकता है। उसे भूतकाल से शिक्षा लेकर वर्तमान को सही ढंग से जीना है। शनैःशनैः जीवन सुन्दर बनता जाता है। ऐसे कई व्यक्ति मिल जायेंगे जिन्होंने सेवा-निवृत्ति के पश्चात् स्वाध्याय में संलग्न होकर अपने

जीवन को नई दिशा प्रदान की है।

यह जान लेना चाहिए कि जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है। यह जीवन कब समाप्त हो जायेगा, इसका निश्चित बोध किसी को नहीं है। इसलिए जीवन के वर्तमान क्षण का सदुपयोग आवश्यक है। कबीरदास जी कहते हैं-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगो कब।।

आज का कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। उसे यथासंभव आज ही पूर्ण कर लेना चाहिए, क्योंकि जीवन पल भर में समाप्त हो सकता है। कबीरदास जी का यह संदेश उन लोगों के लिए है जो अच्छाई के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। उन लोगों के लिए नहीं जो पाप और उपद्रव के मार्ग पर चल रहे हैं। भगवान महावीर ने कहा था कि जो धर्म के मार्ग पर चलने वाले हैं उनका जागना अच्छा है तथा जो अधर्म के मार्ग पर चलने वाले हैं उनका सोना अच्छा है। काल अपनी गति से चल रहा है। आयु कब पूर्ण हो जायेगी यह ज्ञात नहीं है। उसका क्षण बढ़ाना हमारे हाथ में नहीं है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ।।

जो-जो रात्रि व्यतीत हो जाती है वह लौट कर नहीं आती है। जो जीवन में धर्म का आचरण करता है, उसकी रात्रियाँ सफल हो जाती हैं। धर्म का आचरण करने का तात्पर्य है- कर्तव्य का सही पालन, दूसरे प्राणियों के प्रति अहिंसा का व्यवहार, सत्य के प्रति निष्ठा, अचौर्य का व्यवहार, कामवासनाओं पर संयम, ममत्व एवं संग्रह पर नियन्त्रण, मन में दुष्चिन्तन पर संयम, वचन व्यवहार में संयम, इन्द्रियों पर विजय, शरीर में अनालस्य, बाह्य एवं आभ्यन्तर तप का आचरण आदि।

वर्तमान का सदुपयोग करने के लिए जिन तत्त्वों की आवश्यकता है, वे हैं- सही दृष्टि, जागरूकता, सकारात्मक सोच, संकल्प शक्ति और पुरुषार्थ। सही दृष्टि (Vision) जब तक न हो तब तक वर्तमान का सदुपयोग संभव नहीं है। व्यापार में भी कोई विजन लेकर चलता है तभी वह आगे प्रगति कर पाता है। इसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में विजन की आवश्यकता है। विजन के कारण ही नये आविष्कार हो पाते हैं। विजन के कारण ही व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर पाता है। विजन होने पर वह समय का उपयोग करने में अपनी शक्ति लगाता है। अब प्रश्न यह है कि जीवन में किस व्यक्ति का क्या लक्ष्य है? वह अपने लक्ष्य के अनुरूप ही प्रयत्न करता है। आध्यात्मिक लक्ष्य होने पर व्यक्ति को अपने काषायिक परिणामों को द्रष्टा बनकर देखना होता है तथा फिर सम्यग् दृष्टि के साथ

जागरूकतापूर्वक उनके बढ़ने को रोकना होता है। जागरूकता वह दूसरा आवश्यक तत्त्व है जो वर्तमान का सदुपयोग करने में सहायक है। जो व्यापार, उद्योग अथवा जीवन के किसी भी क्षेत्र में जागरूक रहता है वह ही आगे बढ़ पाता है। आध्यात्मिक उन्नति के क्षेत्र में भी जागरूक व्यक्ति ही आगे बढ़ता है। जागरूक व्यक्ति वर्तमान में निर्दोष रहने की कला सीख लेता है। वह पर से सुख की आशा का त्यागकर प्राप्त वस्तु, व्यक्ति आदि से भी ममत्व का छेदन करता है। प्रमादवश भूतकाल में की हुई बुराई से सदा अपने को बुरा मानना एवं भविष्य को बिगाड़ना किसी भी तरह उचित नहीं है। बुराई का प्रायश्चित्त लेकर भविष्य में बुराई को न दोहराना उस बुराई के निराकरण का उपाय है। वर्तमान के सदुपयोग का तीसरा आवश्यक तत्त्व है सकारात्मक सोच। यह सोच निराशा के अन्धकार में डूबे हुए व्यक्ति के लिए एक बड़ा सहारा है। यदि वह स्वयं निराशा की प्रगाढ़ता के कारण सकारात्मक सोच को न अपना सके तो दूसरा व्यक्ति भी सकारात्मक सोच के द्वारा उसे ऊर्जा से युक्त कर सकता है तथा निराश जीवन को उबार सकता है। भूतकाल में कैसा भी दोष किया हो उसका निराकरण संभव है यह सोच सकारात्मक सोच है। इसके साथ ही त्याग करने योग्य प्रवृत्तियों के त्याग तथा अपनाने योग्य प्रवृत्तियों के आचरण का संकल्प भी वर्तमान के सदुपयोग के लिए आवश्यक है। यह संकल्प शक्ति जिस प्रकार व्यापार आदि में प्रगति कारक होती है उसी प्रकार जीवन निर्माण के क्षेत्र में भी व्रत नियमों के माध्यम से कार्यकारी होती है। जैन धर्म में व्रत-नियमों पर जो बल दिया जाता है वह व्यक्ति की संकल्प शक्ति को सही मार्ग की ओर ले जाने के लिए प्रबल माध्यम है। संकल्प-शक्ति के साथ पुरुषार्थ का होना भी आवश्यक है। पुरुषार्थ से तात्पर्य लक्ष्य के अनुरूप प्रयत्न करने से है। जो अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए जितना पराक्रम या पुरुषार्थ करता है वह उतना ही आगे बढ़ पाता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में यह नियम लागू होता है। जो जीवन में आगे बढ़ना चाहता है उसे भय, क्रोध, आलस्य, प्रमाद आदि का त्याग करना चाहिए। जो ध्यान के माध्यम से द्रष्टाभाव का जितना विकास करता है उसमें वर्तमान के सदुपयोग की उतनी ही योग्यता बढ़ती जाती है। इसलिए ध्यान साधना को जीवन में स्थान देना चाहिए। इससे मन तो नियन्त्रण में होता ही है आत्मिक शक्ति का भी विकास अनुभव में आता है। बुद्धिमान पुरुष वही है जो वर्तमान को खराब न कर भविष्य को सुन्दर बनाता है। आचारांग सूत्र में ठीक ही कहा है- **धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए। वओ अच्चेति जोव्वणं च।** अर्थात् धीर पुरुष थोड़े काल का भी प्रमाद नहीं करता, क्योंकि उम्र और यौवन बीतते जाते हैं। इसलिए वर्तमान को वरदान मानकर वर्तमान के सदुपयोग हेतु पूरी ऊर्जा के साथ तत्पर रहने में ही हमारा हित है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

दुःखनाश

**अधुवे असासयंमि, संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाऽहं दोग्गइं न गच्छेज्जा।।
विजहित्तु पुव्वसंजोगं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह सिणेहकरेहिं, दोस-पओसेहिं मुच्चए भिक्खू।।
तो नाणदंसणसमग्गो, हिय निस्सेसाए सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगयमोहो।।
सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पइ ताई।।
भोगामिस-दोसविसन्ने, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झइ मच्छिया व खेलंमि।।
दुपरिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जो तरंति अतरं वणिया व।।**

पद्यानुवादः-

यह नश्वर और अशाश्वत जग, जो प्रचुर दुःख का स्थानक है।
मैं करूँ यहाँ पर कौन कर्म, जो दुर्गति-दुःखनिवारक है।।
छोड़ पूर्वसम्बन्ध साधुजन, स्नेह किसी से करे नहीं।
स्नेहियों पर स्नेह रहित हो, दोष द्वेष से हो मुक्त यहीं।।
फिर पूर्णज्ञान-दर्शन से युत, सब जीवों के श्रेयस्कामी।
उनके विमोक्षार्थ मुनि वीतमोह ने, धर्म कहा आत्मारामी।।
बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ सब, तजे तथाविध कलहों को।
सर्व कामगुण दोषयुक्त लख, त्राता मुनि दूर रखे मन को।।
भोगरूप आमिषरत प्राणी, हितपथ से उलटी बुद्धि धरे।
मूढ़ मन्दमति अज्ञानी, मक्खी-सम कफ में उलझ पड़े।।
दुस्त्यज हैं ये काम-भोग जो, न सहज त्याज्य कायरजन से।
पोतवणिक्‌सम साधु सुव्रत जो, तरते दुस्तर भवसागर से।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अष्टम अध्ययन, कापिलीय, गाथा-1-6

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

ज्ञान

- यदि ज्ञान के जलाशय में गोता लगाया जाये तो हमारा सन्ताप मन्द पड़ेगा तथा जो क्रोध, मान, माया एवं लोभ की ज्वालाएँ उठ रही हैं, दिल-दिमाग को परेशान कर रही हैं, उन्हें हम शान्त कर पायेंगे। दूसरा लाभ इससे यह है कि हमारे मन का मैल दूर होगा, अज्ञान दूर होगा, ज्ञान की कुछ उपलब्धि होगी, जानकारी होगी। तीसरा लाभ है वीतराग वाणी ज्ञान का अंग है तो प्राणी का जो तृष्णा का तूफान है, वह तूफान भी जरा हलका होगा जिससे मन में जो अशान्ति है, बेचैनी है, आकुलता है वह दूर होगी। इसलिये हमारा प्राथमिक और जरूरी कर्तव्य है कि हम प्रातःकाल शारीरिक कर्मों से निवृत्त होकर जो लोकोत्तर कर्म है- स्वाध्याय का, वीतराग की भक्ति का, धर्म-चिन्तन का, गुरु-सेवा का, उसकी भी आराधना करने में तत्पर रहें।
- विद्या का सार है वास्तव में सही निश्चय का हो जाना। दुनिया भर के पोथे पढ़ लेना, यह विद्या का सार नहीं है। अच्छा बोल लेना, अच्छा लिख लेना, यह विद्या का सार नहीं है। बोलना, लिखना, पढ़ना, समझना और समझाना यह तो एक प्रकार की कला है, अक्षर ज्ञान है। लेकिन वास्तविक ज्ञान वास्तविक विद्या और ही चीज है। वास्तविक विद्या तो वही है, जिसके द्वारा मानव अपने स्वरूप को समझता है, आत्मोन्मुख होता है और उसको निश्चय हो जाता है कि संसार में सार क्या है।
- जिसका ज्ञान ही ढक गया, जिसके ज्ञान पर पर्दा आ गया, जिसकी समझ समाप्त हो गई तो वह आदमी अपने किसी काम को सुन्दर ढंग से नहीं कर सकता है।
- अक्षर-ज्ञान में पण्डित बन जाने पर भी और पी-एच्.डी. की डिग्री हासिल कर लेने पर भी कोई ज्ञान पा गया है, यह नियम नहीं है। यदि वह अपनी आत्मा की शुद्धि करेगा, विषय-कषायों को हटाएगा, वीतराग-वाणी का चिन्तन करेगा तो ज्ञान पाएगा।
- जब द्रव्य, गुण एवं पर्याय का सही ज्ञान होगा तो बदलते हुए पर्यायों में से कौनसा पर्याय शुभ है, कौनसा अशुभ है, कौनसा आत्मगुणों को अभिवृद्ध करने वाला है, कौनसा आत्मगुणों की हानि करने वाला है, किस तरह का जीवन मूल में कायम रहना चाहिए, इन सब बातों को परखने का विवेक उत्पन्न होगा। इस प्रकार के विवेक के उत्पन्न होने पर जिन पर्यायों से आत्मा के मूल गुण सुरक्षित रहते हैं, अभिवृद्ध होते हैं, उन पर्यायों को अपने दैनिक आचरण में ढालने का और जिन पर्यायों से आत्म गुणों की हानि होती है, उन पर्यायों से पूर्णतः बचने का प्रयास किया जाएगा तो परम सुन्दर भविष्य का, सुन्दर आध्यात्मिक जीवन का निर्माण होगा। इस प्रकार अन्ततोगत्वा चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो सकेगी।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (13)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते हैं और श्रावक भी।
- वासना दुःख का मूल है।
- नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।
- अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं अशान्ति नहीं हो सकती।
- विकृति का सबसे बड़ा कारण व्यक्ति के अहंकार की तुष्टि में रहा हुआ है।
- अन्याय से उपार्जित धन से अहंकार का पोषण होता है।
- विकृति की जड़ अन्यायोपार्जित धन है।
- स्वाध्याय से सद्विचारों का चिन्तन होता है और सद्विचारों से सदाचरण बनता है।
- सामायिक, स्वाध्याय और आत्मचिन्तन का बल जिसके पास है, वहाँ विकृतियाँ नहीं रह सकतीं।
- न्यायोपार्जित धन बुरा नहीं है।
- पिछले जन्मों में जिसने अपने हाथों से लुटाया है, उसके चरण जहाँ भी पड़ेंगे, वहाँ कमल खिलेंगे।
- अन्यायोपार्जित धन के कारण विवाह, खान-पान, रहन-सहन सबमें विकृतियाँ आई हैं।
- सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध कहने की हिम्मत होनी चाहिये।
- समाज को संगठित होकर बुराइयों को दूर करने की व्यवस्था बनानी होगी।
- जिस ज्ञान से हेय-ज्ञेय-उपादेय को जाना जाता है, वह सच्चा ज्ञान है।
- सामायिक-प्रतिक्रमण रूप आत्म-साधना से भीतर रही हुई गन्दगी दूर की जा सकती है।
- आचरण ऐसा हो, जिससे दूसरों की स्वतंत्रता में बाधा नहीं आए।
- आत्मा को जीत लेने पर सबको जीत लिया जाता है।
- इकट्ठे हो जाना समाज नहीं है। जहाँ समाज है, वहाँ नियम हैं, क़ायदे-क़ानून हैं, अनुशासन है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-3 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

काम-भोग की लालसा और अप्राप्त की चिन्ता

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

आर्त्तध्यान का वर्णन आपके समक्ष चल रहा है। उसके तीसरे कारण पर विचार किया गया, अब यहाँ आर्त्तध्यान के चौथे कारण पर विचार किया जा रहा है। शास्त्र में आर्त्तध्यान का चतुर्थ चरण बताया गया है-

परिझूसिय कामभोग-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागए या वि भवइ। काम-भोग की सामग्री प्राप्त होने पर उसके संरक्षण की चिंता करना कि कभी उसका वियोग न हो, इस प्रकार की सतत चिंतन धारा से आर्त्तध्यान उत्पन्न होता है।

आर्त्तध्यान के इस कारण में तीन बातें गर्भित हैं, प्रथम- कामभोग की असीम लालसा, दूसरी- उसे प्राप्त करने की सतत चिंता, और तीसरी- प्राप्त हुई विषय सामग्री के संरक्षण की चिंता।

इच्छाएँ असीम हैं

मनुष्य की इच्छाएँ असीम हैं। संसार में वह जो-जो सुन्दर वस्तु देखता है, सुनता है, उसे प्राप्त करने को ललचाता है। किसी वस्तु के मधुर रस की प्रशंसा सुनता है तो उसके मुँह में पानी छूट आता है। सोचता है अमुक खाद्य वस्तु चख कर देखूँ, पेय वस्तु को पीकर आनन्द लूँ। कोई सुन्दर रूप देखता है तो सतत उसे देखते रहने की इच्छा रखता है। वैसे ही किसी भी भोग्य व उपभोग्य वस्तु को देखकर उसका उपभोग करने को आतुर हो उठता है। ऐसे बहुत से मनुष्य देखे जाते हैं, जिन्हें पेट में भूख नहीं है, किन्तु यदि कोई स्वादिष्ट वस्तु सामने आ गई तो उसे खाये बिना नहीं रह सकते। पेट में जगह नहीं होने पर भी मन ललचाता रहता है। कहते हैं कि रोम का एक बादशाह अत्यन्त रसलोलुप था। वह नित्य नयी वस्तु खाने का शौकीन था। पेट की भूख तो सीमित होती है, कुछ ही वस्तु खाने से भर जाता है, और वस्तुएँ असीम होती हैं, अतः कोई वस्तु खाए बिना रह न जाये इसलिए वह दवा लेकर वमन करता। पहले खाई हुई चीजें निकाल देता और फिर नयी-नयी चीजें खाता। उसे जिन्दगी का यही शौक था।

वस्तु-भोग की यह लालसा मनुष्य के अन्तर्द्वन्द्व की प्रतीक है। उसके भीतर में इच्छाओं का द्वन्द्व चलता रहता है। एक इच्छा दूसरी इच्छा को काटती है, और फिर उसी में

कोई तीसरी इच्छा पैदा हो जाती है। इच्छाओं के इस द्वन्द्व में मानव अपनी शक्ति को भूल जाता है, अपना सामर्थ्य नहीं विचारता और रात-दिन उनकी पूर्ति करने में संलग्न हो जाता है।

किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में भोगेच्छा प्रबल होती है, वे नित नई सुन्दर वस्तु का भोग करना चाहते हैं, शरीर में शक्ति नहीं होते हुए भी दवाएँ खाकर, वाजीकरण की गुटिकाएँ खाकर भोगेच्छा की पूर्ति करने में पागल हुए रहते हैं। सामाजिक एवं धार्मिक मर्यादाओं की भी वे अवगणना कर देते हैं, बस एक ही ध्येय उनके समक्ष होता है, येन-केन प्रकारेण इच्छाओं की पूर्ति करना।

कुछ दिन पहले एक पत्र में आया था। सऊदी अरब के बादशाह इब्नसऊद ने अपने जीवन में आठ सौ शादियां कीं। कुरान में चार पत्नियों से अधिक रखने का निषेध बताते हैं, इसलिए वह पुरानी पत्नियों को तलाक देता जाता और नई-नई शादियाँ करता जाता।

यह है इच्छाओं की दासता। लालसा एवं वासना की अधीनता। चाहे कोई चक्रवर्ती हो, बादशाह हो या सम्राट् हो, जो इच्छाओं के पीछे दौड़ता है, वह इच्छाओं का दास होता है। कवि ने कहा है-

आशायाः ये दासास्तो दासा सर्वलोकस्य।
आशा दासी कृता येषां, तेषां दासायते जगत्।।

जो इच्छाओं का दास है, वह सब संसार का दास है। जो इच्छा का स्वामी है, वह समस्त संसार का स्वामी है।

मनुष्य का मन प्राप्त वस्तु से कभी तृप्त नहीं होता। वह सदा अप्राप्त की अभिलाषा करता रहता है। सोचता है, यह तो है, पर यह नहीं है, यह भी मिलनी चाहिए। मन की अन्तरवृत्तियों का चयन किस प्रकार चलता रहता है, इसका दिग्दर्शन कराते हुए उत्तराध्ययन में बताया है-

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्चं इमं अकिच्चं।
ते एवमेवं लालप्पमाणे, नरा हरंति त्ति कहं पमाए।।

मनुष्य सोचता है, मेरे पास यह तो है, किन्तु यह नहीं है। पेट भरने योग्य कमाई तो है, किन्तु ऐश आराम करने योग्य कमाई नहीं है। रहने को दो कमरे हैं, किन्तु बहुत बड़ा आलीशान बंगला नहीं है। चलने के लिए दो पहियों की गाड़ी तो है, किन्तु मोटर कार और वह भी बढ़िया विलायती नहीं है। तो जो नहीं है वह प्राप्त करना है, ऐसा कुछ काम करना है कि सब लोग मुझे जानने लगें कि हां कोई बहुत बड़ा आदमी हुआ है। तो इस प्रकार हर एक मनुष्य धन्ना सेठ बनने की सोचता है, करोड़ों और अरबों की संपत्ति पाने के स्वप्न देखता है

और उस लालसा की दौड़ में सतत दौड़ने लगता है। जिस मनुष्य को 'है' पर संतोष नहीं होता, वह 'नहीं' का गड्ढा भरने का प्रयत्न करता है। और यह नहीं है का गड्ढा ऐसा ब्रह्मगर्त है कि इसे साधारण मनुष्य तो क्या, बड़े-बड़े चक्रवर्ती और इन्द्र भी नहीं भर सके।

सुभूम चक्रवर्ती, जिसके पास छह खंड का साम्राज्य था, क्या कमी थी उसको? इतना विशाल साम्राज्य। इतना अपार वैभव! किन्तु जो साम्राज्य एवं वैभव संप्राप्त था उससे मन नहीं भरा, और सातवां खण्ड साधने के लिए दौड़ा। रावण के अन्तःपुर में क्या कमी थी? सुन्दर से सुन्दर हजारों नारियां थी और दिलोजान से उसकी सेवा करने वाली थी। किन्तु उनके सौन्दर्य से उसकी तृप्ति नहीं हुई और सीता के पीछे दौड़ा। तो एक नहीं, हजारों ऐसे उदाहरण हमारे सामने हैं। जिन्हें प्राप्त वस्तु से तृप्ति नहीं हुई और अप्राप्त की तृष्णा में दौड़ लगाने लगे और अन्त में हाय-हाय करते प्राण गंवा बैठे।

मनुष्य की तृष्णा अनन्त है। उसे समस्त भूमंडल का साम्राज्य भी मिल जाये तब भी वह सोचेगा अब स्वर्ग लोक पर और अपनी विजय ध्वजा फहरा दूँ। वह जितना भी प्राप्त करता जायेगा, भीतर से उसकी भूख बढ़ती जायेगी, अपने को खाली अनुभव करता जायेगा। शास्त्र में कहा है-

कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स
तेणावि से न संतुस्से
इह दुप्पूरए इमे आया।

- उत्तराध्ययन सूत्र 8.16

धन धान्य से भरा हुआ यह समग्र विश्व भी यदि किसी एक व्यक्ति को दे दिया जाये तब भी वह उससे संतुष्ट नहीं होगा, क्योंकि आत्मा की यह तृष्णा-लालसा बड़ी दुष्पूर है। कबीर ने कहा है-

कबीरा औंधी खोपड़ी, कबहु धापे नाय।
तीन लोक की सम्पदा, कब आवे घर माय।

मनुष्य की खोपड़ी उलटी है, उलटे घड़े पर चाहे जितना पानी डालो वह क्या भरेगा? इसी प्रकार इस मनुष्य को चाहे जितनी सपत्ति मिल जाये, फिर भी कभी तृप्त नहीं होता।

वास्तव में इस तृष्णा की दौड़ में मनुष्य अनन्त काल से दौड़ता रहा है, पर कभी भी इस दौड़ का अन्त नहीं आया। कभी भी उसे विश्राम नहीं मिला, उसे कभी भी धाप नहीं आई। बस बहुत पा चुका, अब नहीं चाहिए।

अभी सुख से क्यों नहीं रहते ?

जिसके पास हजार की पूंजी है, वह सोचता है एक लाख रुपया हो जाये तो फिर सुख से रहेंगे। एक लाख वाला सोचता है यदि दस लाख हो जाये तो फिर आनन्द ही आनन्द है, और दस लाख वाला सोचता है एक करोड़ रुपये हो जायेंगे तो फिर आनन्द करेंगे। किन्तु भाई! जो आनन्द, दस लाख में नहीं मिला वह एक करोड़ से कैसे मिलेगा। यदि सुख से ही रहना है, आनन्द ही करना है तो अभी से क्यों नहीं कर लेते ? अभी सुख से क्यों नहीं रहते ? क्या एक लाख रुपये में सुख से नहीं रह सकते ? यदि सुख है तो एक हजार में भी सुख मिल सकता है, और नहीं तो एक करोड़ में भी नहीं मिल सकता।

कहते हैं रोम में एक पाइरस नाम का बादशाह हुआ था। उसने एक बार इटली पर आक्रमण किया और चढ़ाई करने जा रहा था। वहाँ के एक संत ने उससे पूछा- ''आप कहाँ जा रहे हैं ?''

बादशाह ने गर्वपूर्वक कहा- ''इटली को विजय करने।''

संत- ''फिर क्या करेंगे?''

बादशाह- ''फिर अफ्रीका पर विजय ध्वजा फहरायेंगे।''

''और फिर क्या करेंगे ? संत ने पुनः पूछा, तो बादशाह ने मूँछों पर हाथ रखते हुए कहा- ''उसके बाद आनन्द से रहेंगे।''

संत ने गंभीरता के साथ कहा- '' महाराज! फिर अभी आनन्द से क्यों नहीं रहते ? अभी आपको कौनसी कमी है ? निरर्थक ही युद्ध की अशांति मोल ले रहे हैं ?

यही स्थिति आज प्रायः मानव मन की हो रही है। जिसके पास जो कुछ है, वह अपनी स्थिति में संतुष्ट नहीं है, वह अपने से आगे वाले को देखता है, और उससे भी आगे निकलना चाहता है। सोचता है इतना बड़ा आदमी बन के फिर आनन्द से रहूँगा। इस प्रकार छोटे आदमी बड़े बनना चाहते हैं, और बड़े अधिक बड़े बनना चाहते हैं- यह दौड़ अनादिकाल से चलती आ रही है, मनुष्य थककर चूर-चूर हो गया है, अशांति और चिंताओं के भार से दब गया है, किन्तु फिर भी दौड़ता ही जा रहा है, कहीं इस दौड़ का अन्त नहीं दिखाई देता। जिसको भी देखो, चिंता से व्याकुल है, आर्त्तध्यान में लीन है। रात-दिन एक ही चिन्तन चल रहा है-

कैसे बड़ा बनूँ दुनियां में धन से भरूँ खजाने।
नौकर-चाकर रहें बड़े नित आण हमारी पाने।
बंगले आलीशान बनाऊँ मोटर गाड़ी लाऊँ।
पत्नी को मन चाहे जेवर देकर मुदित बनाऊँ।

इसी ध्यान में चिंता रत था सुख नहीं तिल भर पाया।
इतने में आ काल राज ने गर्दन पकड़ उठाया।

और इस चिंता में डूबा मनुष्य, जो धन सामग्री मिली है उसका भी उपयोग नहीं कर सका, सोच-सोच में बावला बना रहा, और मौत ने आकर कंठ पकड़ लिया।

तो आर्त्तध्यान का चौथे लक्षण हुआ- कामभोग की लालसा और अप्राप्त की चिन्ता। तृष्णा के वशीभूत हुआ रागी मनुष्य सतत इस चिंता में डूबा रहता है और आर्त्तध्यान करने लगता है।

67 वें दीक्षा-दिवस

मैना गुरुणी प्यारा है....।

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्जः- जीया बेकरार है........।)

मैना गुरुणी प्यारा है, संयम जीवन धारा है।
दीक्षा-दिवस आज मनायें, जीवन धन्य हमारा है।।
मैना गुरुणी प्यारा है.....।। टेर।।

रिड़मल जी पिता आपके, माँ जतनी की जाया जी-2,
सायर जी के संग दीक्षा लेकर, संयम का पद पाया जी-2,
विनय भाव को धारा है, सम्यक् ज्ञान संवारा है।
दीक्षा-दिवस.......।। 1।।

बदनकंवर जी की निश्रा में, अध्ययन खूब बढाया जी-2,
गज गुरु का आशीष पाय, निज जीवन सफल बनाया जी-2,
जिनवाणी को धारा है, वचनों में तेज निराला है।
दीक्षा-दिवस.......।। 2।।

दूर-दूर तक विचरण करके, शासन को चमकाया जी-2,
निर्मल संयम रखके शासन, प्रभाविका पद पाया जी-2,
निर्भयता को धारा है, जीवन को संवारा है।
दीक्षा-दिवस.......।। 3।।

जोधाणा पर मेहर करी ने, ज्ञान-ध्यान विकसाया जी-2,
'हीरा-मान' के उपदेशों को, जन-जन में सरसाया जी-2,
सड़सठ संयम प्यारा है, धर्म ही सहारा है।
दीक्षा-दिवस.......।। 4।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

प्रवचन

सच्चे गुरु का स्वरूप

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 30 जुलाई 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर ने तिरने और तारने वाले तीन तत्त्वों का निरूपण किया है। वे तीन तत्त्व हैं- देव, गुरु और धर्म। इन तीनों तत्त्वों में सही मार्ग समझाने वाले, तारने वाले और शक्ति के स्रोत गुरुदेव हैं। प्रत्येक मत, प्रत्येक परम्परा अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताती आयी है। आदर्श रूप में देवाधिदेव अरिहन्त एवं सिद्ध भगवन्त हमारे देव हैं। साधना में सिद्धि दिखाने वाले धर्म का कथन भी प्रत्येक परम्परा करती है। जैसा गुरु है, वैसा धर्म बताया जाता है। यदि गुरु की दृष्टि बदल गई तो वह धर्म की दृष्टि भी बदल देगा। यदि गुरु ने अपने पथ में मोड़ दे दिया है तो वह भगवान के स्वरूप को भी बदलने की चेष्टा करेगा। इसीलिए अनुभवी गुरुओं ने, तत्त्व के चिन्तक सन्तों ने देव और धर्म के स्वरूप को समझाने के लिए गुरु को मध्य में रखा है। सबसे पहले गुरु कैसा हो, यह समझने की आवश्यकता है।

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने गुरु के प्रति अपना समर्पण करने से पहिले गुरु के स्वरूप को समझा है। मानव सामान्य से सामान्य मौके पर भी अपने निर्णय की परीक्षा करता है। मिट्टी के घड़े को खरीदने के मौके पर भी वह उसका रंग-रूप देखता है। वह देखता है कि घड़ा कैसी और कहाँ की मिट्टी का बना हुआ है। मिट्टी की जानकारी कर लेने के बाद वह देखता है कि घड़े में कहीं कोई छिद्र तो नहीं है और फूटा तो नहीं है। इस तरह वह घड़े की परीक्षा करता है। इसी प्रकार सब्जी खरीदते समय भी आदमी देखता है कि सब्जी सड़ी या बासी तो नहीं है। मात्र पानी छिड़ककर तो इसे ताजा जैसा नहीं बनाया गया है। पानी ढँकने के लिए छोटा-सा कपड़ा लाना है तो उसको भी देखते हैं। यानी हम सामान्य वस्तुओं को भी देखकर खरीदते हैं। तो फिर तिरने और तारने वाले गुरु को मात्र नाम, गादी, वेश-भूषा, बाहरी व्यवस्था आदि से नहीं देखना चाहिये। गुरु में यह देखना चाहिये कि वे सदाचारी हैं या नहीं। कामना और कामिनी के त्यागी हैं या नहीं। तीर्थंकर भगवान महावीर के बताए हुए महाव्रत, समिति और गुप्ति की आराधना करने वाले हैं या नहीं। यदि इनमें ऐसे गुण हैं, शुभ योग के धारक हैं और इन्द्रियों को वश में रखकर चलने

वाले हैं तो वे अपने भक्तों का भी हित और कल्याण कर सकेंगे।

संसार में सैकड़ों, हजारों गुरु ऐसे हैं, जो भक्त का वित्त-हरण करने वाले हैं। गुरु कहलाने वालों के जीवन में ह्रास के अनेक रूप हैं। तकिये और मखमल पर बैठने वाले इन गुरुओं को दक्षिणाएँ दी जा रही हैं। ऐसे पदार्थ जो सरलता से मिल नहीं पाते हैं, सामान्य रूप से काम में नहीं आते हैं, वे पारणे में काम में लाये जाते हैं। घर में बच्चों को खिलाने के लिए बिस्किट नहीं, लेकिन गुरुओं को बादाम और काजू दिये जा रहे हैं। एक कवि ने कहा-

घास-पात जो खात है, उन्हें सताए काम।
जो खाते हलुआ-पुड़ी, उनकी जाने राम।।

आप मन से भक्ति करने जा रहे हैं, श्रद्धा बता रहे हैं तो आपकी श्रद्धा, धर्म को दिपाने वाली है, बढ़ाने वाली है। गुरु स्वयं यदि जितेन्द्रिय है, अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखकर चलने वाला है तो संसार में एक भी शब्द या पद ऐसा नहीं मिलेगा जो ऐसे गुरु का मुकाबला करने वाला हो। शिक्षक, मास्टर, कलाचार्य, प्रोफेसर और न जाने किन-किन नामों और सम्बन्धों से आप कहें, लेकिन सच्चे गुरु का मुकाबला करने वाला कोई शब्द नहीं। गुरु को इतना महत्त्व क्यों दिया जाता है? क्योंकि सच्चा गुरु शिष्य के वित्त का हरण नहीं करता है। जो शिष्य के भीतर रहे हुए कषाय के ताप को, कषाय की आग को, अज्ञान के अंधकार को हरण करके उसे स्वमुखी बनाने के लिए आत्मा का स्वरूप समझाता है, तिरने और तारने के मार्ग पर लगाता है, वह ही सच्चा गुरु है। व्याकरण की दृष्टि से गुरु का शब्दार्थ है जो अंधेरे से उजाले में लाए, वह गुरु है।

गुरुदेव आचार्य हस्ती के मुख से सुना है कि ऐसे-ऐसे योगी थे, जो सोते नहीं थे। पहाड़ों और जंगलों में आदमी उनकी तलाश करता था। आप सौभाग्य वाले हैं कि आपको घर बैठे गुरु मिल जाते हैं। लेकिन किसी समय गुरु पाने के लिए वर्षों तक खोज करनी पड़ती थी। आचार्य धन्नाजी को धर्मगुरु की खोज करने के लिए कितने वर्षों तक भटकना पड़ा था। पोथियाँ बाँटने वाले, जीभ मीठी करने वाले, राज्य में पैठ जमाने वाले कई गुरु मिले, लेकिन अज्ञान अंधकार हरने वाले गुरु नहीं मिले। आचार्य एक-एक घर में खोज करते हुए फिरे तब उन्हें गुरु मिले।

लोग कहा करते हैं कि खेती योग्य बरसात नहीं आई। खेत की सफाई की, कंकर-पत्थर अलग किये, हल भी चलाया, इतना सब कुछ करने के बाद भी बरसात नहीं आई। एक ऋतु खराब हो गई। कभी अचार डालते हैं और वह खराब हो जाता है तो एक साल खराब हो जाता है। सम्बन्ध जोड़ने में लड़की का रूप देखा, धन देखा, परन्तु यह नहीं देखा कि कन्या कुलीन, शीलवती और गुणवान है या नहीं। केवल पैसे के लिए सम्बन्ध कर लेते

हैं और जिन्दगी खराब हो जाती है, घर में लड़ाई-झगड़े होते हैं। किन्तु यदि गुरु खराब निकल गये तो सबकुछ खराब हो जाता है। अतः गुरु की परीक्षा की जानी चाहिये। गुरु का स्वरूप जानना चाहिये। यह माथा कोई नारियल नहीं कि जिधर लुढ़काओ उधर ही लुढ़क जाए। यदि मुझ में गुरुत्व नहीं तो मुझे मत मानिये। मानिये उन्हें, जो गुरु पद के लायक हो।

गुरु वह है जो शिष्य के समस्त विकारों को दूर करता है। भीतर में रहे हुए अज्ञान को दूर करने वाला गुरु है। एक अंधकार है द्रव्य अंधकार। सूर्य, चन्द्र और दीपक के नहीं रहने पर जो तम छा जाता है, वह द्रव्य अंधकार है। द्रव्य अंधकार यदि घना है तो हाथ की अंगुलियाँ देखना भी संभव नहीं होता है। दीवार, चित्रकारी से रंगी हुई है, सजी हुई है, लेकिन अंधकार है। ऐसी अंधेरी रंगशाला में नाट्य की अनेक विधाओं का जानकार कुशल नृत्यकार भी नाच नहीं सकता है। ऐसे अंधकार को दीपक जलाकर दूर किया जा सकता है। सूर्य के उदय होने पर द्रव्य अंधकार नष्ट हो जाता है। लेकिन सैकड़ों चन्द्रमा और लाखों सूर्य भी भीतर में रहे हुए अंधकार को दूर नहीं कर सकते हैं। भीतर के अंधकार को मिटाने वाले गुरु होते हैं। वे हमें भौतिकता से दूर हटा देते हैं। जड़ से चेतन की ओर लगाने वाले, बाहर से हटाकर भीतर की ओर दृष्टि लगाने वाले यदि कोई हैं तो वे गुरु हैं। ऐसे गुरु का संयोग मिलने पर जीवन का विकास होता है।

जातीयता के नाते द्रोणाचार्य ने एकलव्य को पढ़ाया नहीं, किन्तु एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य के प्रति इतनी श्रद्धा और भक्ति वाला है कि उसने गुरु की प्रतिमा बनाकर सीखा। यद्यपि गुरु ने नहीं सिखाया था, किन्तु प्रतिमा को ही सर्वस्व समझकर, मानकर धनुर्विद्या सीखी। जब वह गुरु-चरणों में गया तो द्रोणाचार्य ने उससे दक्षिणा के रूप में उसका अँगूठा माँग लिया। धनुष चलाने की प्रशंसा करने वाले ने यदि अँगूठा माँग लिया तो भी खुशी और भक्तिभाव के साथ एकलव्य ने वह अँगूठा काटकर भेंट कर दिया, जो उसकी धनुर्विद्या के लिए सबकुछ था। देखिये, एकलव्य की गुरुभक्ति कि उसने इसमें भी ननुनच नहीं किया और अपना सर्वस्व गुरु के चरणों में भेंट कर दिया। अरे भाई! अब मैं आपसे अपने लिए नहीं, आपके स्वास्थ्य के लिए कहता हूँ, माँगता हूँ कि रात्रिभोजन छोड़ दीजिये। इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप अनेक जीवों की हिंसा के पाप से बच जायेंगे।

आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने फरमाया कि रात में खाने से गलत पदार्थ भी खाने में आ सकते हैं। यदि खाने में चींटी आ गई तो स्वर भंग हो जायेगा। यदि जीरे के भरोसे जूँ खाने में आ गई तो जलोदर रोग हो जायेगा और आपके जीवन के लिए खतरा बन जायेगा। अखाद्य पदार्थ खाने में आने से अनेक रोग हो जाते हैं। मैं आप लोगों की क्या बात कहूँ, कभी हमारे पात्र में भी किसी चीज़ के साथ छिपकली आ गई थी। शायद करेले या भिण्डी

के रूप में आ गई होगी; तो ध्यान से देखने पर पता चला। आँखें टीवी पर रखकर और सब्जी बनाते हो तो खयाल नहीं रहता है। खाने में भी फुर्सत नहीं रहती है कि खाना देखें। ऐसी स्थिति में दिन में भी देखना मुश्किल हो जाता है तो रात के अंधेरे में या रात की अल्प रोशनी में क्या दिखेगा? किसी ने बनाया और किसी ने खा लिया। इसलिए गुरु संयम और सजगता की शिक्षा देते हैं।

जो समझदार होता है, वह ठोकर लगने पर संभल जाता है। अगला आदमी ठोकर खा जाए और पीछे वाला संभल जाए तो यह भेड़ चाल नहीं है। कुछ वर्षों पहले जीमण (सामूहिक भोज) होता था तो वह दिन में होता था और सगाई-सम्बन्ध के कार्यक्रम भी दिन में होते थे। अब रात्रि में शादियाँ हो रही हैं, जीमण हो रहे हैं। धनाढ्य वर्ग, प्रदर्शन करता है तो मध्यम वर्ग वाले भी देखादेखी में अपव्यय करते हैं। जब दिन में भोजन होता है तो सबसे पहली बात होती है कि फिजूलखर्ची नहीं होती है। रात में खूब लाइटें जलाई जाती हैं, पटाखें छोड़े जाते हैं। फिजूलखर्ची के साथ स्थावरकाय और छोटे-बड़े त्रस जीवों की हिंसा होती है।

मैं पूछूँ कि क्या आपके बुजुर्गों के समय में शादी-विवाह नहीं होते थे? आपके बड़ेरे कुँवारे ही थे क्या? आप एक-एक बात पर चिन्तन करें। आप अहिंसक, गुणवान और धनी कहलाते हैं। आपके सुई चुभाए तो दुःख होगा और अन्य जीवों का गला घोंट दें तो भी तकलीफ नहीं होगी, यह संभव नहीं है। परिवर्तन की हवा में दया की भावना लुप्त नहीं होनी चाहिये। द्रोणाचार्य ने अँगूठा माँगा और एकलव्य ने दे दिया। मैं तो आपसे जीवों की दया माँग रहा हूँ। इस सम्बन्ध में समाज के सामने एक अपील रखी गई। जयपुर में थोड़ा प्रयास किया गया तो कुछ करोड़पतियों ने भी दिन में जीमण करने की बात स्वीकार की। कहीं मूर्तिपूजक समाज ने भी रात्रिभोजन बन्द कर दिया है। मैं अपने लिए नहीं, जीवों की दया के लिए माँग रहा हूँ। आप दयाधर्मी हैं, अहिंसा को परम धर्म मानने वाले हैं। आपको चाहिये कि दिखावे के नाम पर बल्बों की रोशनी नहीं करें और जीवों की रक्षा करें। आज गुरु पूर्णिमा है और न जाने कहाँ-कहाँ से लोग आज गुरु चरणों में पहुँचते हैं। अपने अज्ञान को हटाने के लिए, एक-एक विकार को दूर करने के लिए और आध्यात्मिक दृष्टि के लिए लोग गुरु-चरणों में पहुँचते हैं।

बालोतरा में यह रिवाज है, सगाई में हजार या कुछ अधिक दिया जाना। सब इतना ही देंगे। दहेज में इतना ही देना है और इतना ही देने की जरूरत है। मध्यमवर्गीय लोगों को चिन्तन करना चाहिये और महसूस करना चाहिये कि उनके कमाने वाला एक और खाने वाले दस हैं। ऐसी स्थिति में आज गुरु पूर्णिमा के दिन सभी मिलकर चिन्तन करें कि हम

अपने लिए एवं स्वधर्मी भाइयों के लिए सामाजिक विकृतियों को दूर करें, जिससे आप समाज में प्रतिष्ठा के साथ जी सकें।

मैं सामायिक के लिए, श्रावक के व्रतों के लिए कह रहा हूँ। इनके साथ समकित के लिए भी कह रहा हूँ। आज कई जनों ने दया भी की है। इन सबकी सार्थकता के लिए समाज की कुरीतियों और व्यसनों को दूर करने का प्रयास करें तथा नियम ग्रहण करें। यदि आप समाज सुधार के लिए तहेदिल से प्रयत्न करेंगे तो आपका और समाज का कल्याण होगा।■

वही बना श्रद्धेय हमारा

श्री अरिहन्त चौपड़ा

सतत साधना महासमर में अड़ा खड़ा जो वीर,
संघर्षों के बीहड़ पथ पर, जो चलता मति धीर,
सूत्रों के मन्थन चिन्तन में, उतरा जो बनकर गंभीर,
मरुस्थली को सरस बनाने, बहते सदा जो बनकर नीर,
महावीर के कृत कृत्यों पर, चलना ही हो ध्येय हमारा,
वही बना श्रद्धेय हमारा।।

निहित अहिंसा में ही सारी, दान दया पावन मीमांसा,
जगत बना तेरा आभारी, पाकर यह अभिनव परिभाषा,
समाधान समुचित पाते हैं, आते जो लेकर जिज्ञासा,
परोपकृति में जुटे हुए हैं, कभी नहीं फल की प्रत्याशा,
कर सर्वस्व समर्पण तुमने, लिया वीर वाणी का सहारा,
वही बना श्रद्धेय हमारा।।

जो कल तक प्रतिकूल रहा, अनुकूल वही बनकर मिलता है,
ऐसे मेरे 'हीरा' गुरुवर, जिनके दर्शन से जीवन खिलता है,
वही अमा का घोर तिमिर अब, सप्त शिखा बनकर जलता है,
सम्प्रदाय का अधिनायक जो, यदि सेवक बनकर पलता है,
अभिनन्दन शतबार गुरुवर, आज बना नयनों का तारा,
वही बना श्रद्धेय हमारा।।

-5-डी-11, न्यू हाउसिंग बोर्ड, पाली-मारवाड़-306401 (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

अकिञ्चनता के धनी आचार्य श्री हीरा

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वैराग्य, अकिञ्चनता आदि विशिष्ट गुणों की भावाभिव्यक्ति का संकलन एवं सम्पादन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली ने किया है।-**सम्पादक**

हे अनासक्त महावैरागी!
हे अकिंचन!
आपके अतीत के अवलोकन से कुछ मुक्ता-कण हाथ लगे।
लघु भगिनी के असामयिक देहावसान ने
आपके जीवन की दशा और दिशा बदली।
चिन्तन चला-
इस संसार में मोह से बन्धे जीव
एक शरीर से दूसरे शरीर में ऐसे चले जाते हैं जैसे
पक्षी उड़कर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर चले जाते हैं।
मार्ग में पथिक जनों का संयोग क्षणिक होता है, वैसे ही
बन्धुजनों का संयोग भी अस्थिर है।
प्राणी अकेला आता है और अकेला जाता है,
अतः पर-पदार्थों से और बन्धुजनों से ममत्व
दुःख का कारण है।
अनित्यानुप्रेक्षा के चिन्तन के प्रकाश में-
प्रश्न उठा- "इस अस्थिर संसार में किसका जीवन सफल?"
उत्तर मिला- "जिसका दुबारा जन्म न हो।"
फिर प्रश्न उठा- "कैसे?"
"जन्म और मृत्यु के कारणों को समाप्त करने से।"
अनित्यानुप्रेक्षा के चिन्तन के पश्चात् आपने निर्णय लिया-

"ऐसी राह पर चला जाए जहाँ कर्म बन्धन न हो और
बन्धे हुए कर्म समाप्त हो जाएँ, क्योंकि
जन्म और मृत्यु का कारण कर्म बन्धन है।"

अन्तर से वैराग्य की बूँदें गिरने लगी और
संयम के बीज उगने लगे।
आप चले उस योगी के पास जो मोह बन्धनों से मुक्त था,
आचार्य हस्ती।
वैराग्य ने आपके मन में उजाला भर दिया।
परिवार से नाता तोड़ा, विश्व प्रेम से नाता जोड़ा,
प्रस्थान किया सीमित से असीमित की ओर, जहाँ
सुख का लोभ नहीं, दुःख का क्षोभ नहीं।
ममत्व का विसर्जन बना अपरिग्रह की ओर पहला कदम।
मोहरूपी जल से परिपूर्ण इस संसार सागर में
आप वैराग्य की नाव में बैठ गये,
गुरुदेव की सन्निधि में ज्ञान की पतवार को थाम लिया।

आगम में परिग्रह दो प्रकार का कहा है-
बाह्य और आभ्यन्तर।
बाह्य परिग्रह तो आपने उसी समय छोड़ दिया
जब अनित्य भावना से अनुप्राणित होकर आपने
निर्ग्रंथ पथ का वरण किया।
मिथ्यात्व, कषायादि कर्मबन्ध के कारण हैं,
क्योंकि ये आत्मा के अपने नहीं है।
आत्मा इन विकारों को ग्रहण करती है तो
यह 'पर' का ग्रहण करना हुआ, अतः परिग्रह है।
आत्मा का 'पर' की गिरफ्त में आना परिग्रह है।
व्यवहार से 'पर' पदार्थों और बन्धुजनों में ममत्व,
बाह्य परिग्रह जो आपने संयम लेते ही त्याग दिया।
आगम वाङ्मय में निश्चय नय की अपेक्षा से
मिथ्यात्व को त्यागना ही निर्ग्रन्थता है।

बाह्य और अभ्यन्तर दोनों परिग्रहों को त्यागना ही पूर्ण अपरिग्रह है।
जो पूर्ण अपरिग्रही होता है, वही निर्ग्रंथ होता है।
प्रभु ने इसको आकिंचन्य धर्म कहा है और
इस धर्म को धारण करने वाला अकिंचन है।

ज्ञान प्राप्ति की यात्रा में आपने बाह्य परिग्रह के सिद्धान्त का
प्रायोगिक रूप चरणानुयोग के ग्रन्थों का
गहन अध्ययन करके किया और फिर
आपने रंच मात्र भी बाह्य परिग्रह नहीं रखा।
द्रव्यानुयोग आदि ग्रन्थों से आभ्यन्तर परिग्रह का
सम्यक् बोध लिया और उसे आपने जीवन में चरितार्थ किया।

जड़ और चेतन का यथार्थ स्वरूप जानना,
मानना और तदनुकूल श्रद्धान करना सम्यक्त्व है,
विपरीत श्रद्धान करना मिथ्यात्व है।
आपने अपने जीवन में आगमानुकूल
यथार्थ श्रद्धान को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उतारा है,
अतः आप पूर्ण अपरिग्रही हैं,
इसलिए अकिंचन है।
अकिंचन का अर्थ लघुता से है, आत्मा को हल्का करने से है।
अकिंचन की आत्मा पापों से भारी नहीं होती है
इसलिए अकिंचनता मुक्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण सोपान है।

एक निर्ग्रंथ के रूप में आकिंचन्य आपका
सबसे बड़ा गुण है।
क्षमा क्रोध के अभाव का नाम है,
मार्दव मान के, आजर्व माया के, संतोष लोभ के अभाव का नाम है,
परन्तु अकिंचनता इन सबके अभाव का नाम है।
आप अकिंचनता के धनी हैं।
परिग्रह मिथ्यात्व रूपी जड़ को सींचने से पनपता है और
आपने मिथ्यात्व की जड़ को ही काट दिया।

जड़ काटने से पेड़ के फूल-पत्ते अपने आप ही सूख जाते हैं।

आपने अनुकूल-प्रतिकूल संयोगों-वियोगों में
कभी ममत्व बुद्धि नहीं रखी।
प्रमाद साधना का शत्रु है,
जीवन का प्रदूषण है।
सतत अप्रमादी जीवन आपकी आत्मसाधना का
मंगलमय रूप है।
अप्रमाद जागरण का पथ है, अमृत का पथ है।
यह पथ मिथ्यात्व को नष्ट करने और
सम्यक्त्व के वरण से मिलता है।
दूसरे शब्दों में अपरिग्रह मुक्ति का पथ है।
अकिंचन की आत्मा हल्की होती है इसलिए
वह संसार से उठकर जीती है जो
मुक्ति का आधार है।

अकिंचनता के प्रोज्ज्वल प्रकाश में
आपने निर्ग्रंथ जीवन के श्रेष्ठ प्रतिमान स्थापित किये हैं।
आपका जीवन आचरण के आदर्श रूप की
उत्कृष्ट निष्पत्ति का संदेश देता है,
हमारे लिये वह अपरिग्रह का प्रकाश स्तम्भ है

हे श्रमण परम्परा के महान् साधक!
आपके दिल का दीपक सदा आत्मा की ही
आरती उतारता है,
इसलिए आप उपाधियों के राजपथ पर कभी नहीं भटके।
आपके शुद्धाचरण से हमारे संस्कार पुष्ट हो रहे हैं।
आप आचार सम्पदा के अधीक्षक हैं,
जिसमें पांचों चारित्र साक्षात् दिखते हैं।

तीर्थंकर के दूत में, झलक रहा है शुद्ध स्वरूप।
भाव भरे वन्दन हैं मेरे, तुम हो वन्दन के अनुरूप।।

(क्रमशः)

दीक्षा अर्द्धशतीवर्ष

तेरे नाम की प्रीत गुरुवर

श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्जः- मेरा जीवन कोरा कागज......।)

तेरे नाम की प्रीत गुरुवर, हो गयी मुझको,
फीकी लगती दुनिया सारी, देखकर तुझको,
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।। टेर।।
पथ हो तुम, पाथेय भी हो, तीर्थ हो मेरे-2,
साध्य हो आराध्य हो तुम, मंत्र हो मेरे-2,
मेरी साँसों में समाये, ध्याऊँ मैं तुझको।।
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।। 1।।
चौथे आरे के नजारे, मिलते हैं पल-पल-2,
देख के संयम की चर्या, बढ़ता श्रद्धाबल-2,
भाग्य अच्छे चरण छाया, मिल गयी मुझको।।
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।। 2।।
जीना सीखूँ, नमना सीखूँ, सीखूँ मैं सहना,
ओ गुरु! मुझको सिखा दो, प्रेम से रहना-2,
तेरी शिक्षाओं पे चल के, पाऊँ मंजिल को।।
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।। 3।।
औरों से क्या मांगना है, तुम से ही माँगू,
तुझसे भी क्या माँगू गुरुवर, तुमको ही माँगू-2,
सिद्धि पथ ले चलना संग में, प्यास है मुझको।।
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।। 4।।
मन के मंदिर में बसी है, तेरी ही तस्वीर,
तुमको पाकर आज मेरी, जग गई तकदीर-2,
जैसे गौतम को मिले प्रभु, मिल गये मुझको।।
तेरे नाम की प्रीत गुरुवर.....।।

-संकलयित्रीः श्रीमती सुनीता नरेन्द्र डागा, बोरिवली, मुम्बई (महा.)

गवेषणा

आदित्य संवत्सर के अनुसार कालगणना : एक विमर्श

गवेषक : तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी

(जिनवाणी, अप्रेल-2012 का अंक सम्वत्सरी अंक के रूप में प्रकाशित हुआ था, जिसमें कालगणना के विविधरूपों की चर्चा की गई थी। उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मार्गदर्शन में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा आदित्य संवत्सर के अनुसार कालगणना का महत्त्व प्रतिष्ठापित किया गया है। उनके गवेषणा पूर्ण चिन्तन का आलेखन मुमुक्षु नेहा चोरड़िया, जलगांव एवं श्री त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर द्वारा किया गया है।)

भगवतीसूत्र शतक 11 उद्देशक 11 में सुदर्शनश्रेष्ठी के प्रश्न के उत्तर में अद्धाकाल के विवेचन में जम्बूद्वीप, अनुयोगद्वार, चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि में वर्णित प्रमाण काल जैसा ही विवेचन आया है।

सूर्य, चन्द्र की गति एवं स्थिति आदि के आधार पर वर्ष, मास, अयन, ऋतु, दिन का निर्धारण होता है। लगभग 22 दिसम्बर को सबसे छोटे दिन से 21 जून के सबसे बड़े दिन तक के 6 माह में सूर्य उत्तरायण रहता है। ये 181 दिन होते हैं तथा लीप ईयर में 182 दिन होते हैं और 21 जून से 22 दिसम्बर तक 184 दिन होते हैं। लौकिक ज्योतिषी और वैज्ञानिक गणना वालों के द्वारा गतिशील पृथ्वी मानने पर भी पृथ्वी से की जाने वाली गणना होने के कारण पृथ्वी को स्थिर मानते हुए सूर्य की गति को दर्शाया जाता है। तिथि, वार, करण आदि के निर्धारण में सूर्य, चन्द्र की प्रधानता है और चन्द्र के मास, वर्ष आदि भी कुछ रूपों में सूर्य पर अवलम्बित हैं। इन गणनाओं में तो राहू, केतु को ग्रह नहीं मानते हुए दो बिन्दुओं के रूप में स्वीकार किया गया है। पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ, चन्द्र सूर्य की परिक्रमा के मार्ग पर उत्तरी हिस्से को जहाँ छुए अथवा काटे उसे राहू तथा दक्षिणी हिस्से को जहाँ छुए अथवा काटे उसे केतु कहा गया। (आगम में नित्य राहू व पर्व राहू व उनके विमानों की चर्चा आयी है।) अर्थात् चन्द्रमा को पृथ्वी का एक उपग्रह मानते हुए चन्द्र द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा व बुध, शुक्र, पृथ्वी आदि के द्वारा सूर्य की परिक्रमा को ही स्वीकार किया गया और पृथ्वी की परिक्रमा पूर्ण होने वाले 365 दिन झाझेरे समय को वर्ष के रूप में स्वीकार किया गया। चन्द्र संवत्सर को सूर्य संवत्सर के तुल्य बनाने के लिए अभिवर्धित संवत्सर की गणना की गई। इस प्रकार इन दोनों की काल गणना में आदित्य वर्ष की

प्रधानता रही। आगमीय गणना में भी इसी आदित्य वर्ष की प्रधानता है। जिनवाणी के अप्रैल 2012 के अंक में यह स्पष्ट किया गया था।

बरवाला सम्प्रदाय के आचार्य श्री सरदारमुनिजी म.सा. सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज की संवत्सरी एक हो इस भावना के पुरजोर हिमायती हैं। उन्होंने दरियापुरी सम्प्रदाय के आचार्य प्रवर श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. के द्वारा लगभग 100 वर्ष पूर्व दरियापुरी सम्प्रदाय के मुनि पुंगव श्री जीवाजी म.सा. द्वारा किए गए विशिष्ट पुरुषार्थ की प्रतिलिपि प्राप्त की, जो सुश्रावकों के सहयोग से देखने को मिली। उसमें दर्शाया गया है कि दिन का कर्त्ता सूर्य और तिथि का कर्त्ता चन्द्र है। साथ ही उन्होंने खोजकर पंचम आरक के प्रथम युग के प्रथम दिवस का वार सोमवार होना बताया है। उनके अनुसार 7 युग के पश्चात् का युग पुनः उसी वार से प्रारम्भ होता है अर्थात् वे प्रत्येक आरक का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा सोमवार को होने का संकेत कर रहे हैं।

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में विचरण करने वाले प्रवर्तक स्व.श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के सुशिष्य श्री जयमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर श्री सोहनलालजी म.सा. के अभिप्राय की लगभग 100 वर्ष पूर्व प्रकाशित प्रतिलिपि श्रावकों के माध्यम से उपलब्ध करवायी। आचार्य प्रवर का स्पष्ट मन्तव्य है कि कर्क संक्रान्ति (21 जून) के आस-पास ही आषाढ़ की पूर्णिमा होती है, और उसके 50वें दिन संवत्सरी करना अनिवार्य है। सायन गणना के हिसाब से वह संवत्सरी 25-26 अगस्त तक हो जानी चाहिए। उन्होंने तो ना केवल चौमासे में महीने बढ़ाने को अनुचित कहा, अपितु निरयन गणना के उस समय लगभग 22 दिन पश्चात् सूर्य की संक्रान्ति की गणना वाले पंचागों को भी लोकोत्तर गणना के आधार से अप्रामाणिक ठहराया और संवत्सरी, चौमासी, पक्खी की शुद्धि के साथ आगम आज्ञा (विशेष रूप से निशीथ के 10वें उद्देशक में वर्णित) सांवत्सरिक लोच, उपवास, प्रतिक्रमण आदि कार्यों की शुद्धि हेतु विशेष बल दिया।

नानक सम्प्रदाय के आचार्य प्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. ने भी संसूचित किया कि प्रवर्तक श्री कुन्दनमलजी म.सा. ने जैन पंचांग बनाने का प्रयास किया था, पर वह पूर्ण नहीं हो पाया। शायद अपूर्ण पन्ने भिनाय के भण्डार में सुरक्षित हैं और भी अनेक प्रयास हुए होंगे।

(क) आचार्य प्रवर श्री सोहनलालजी म.सा. के अभिप्राय की पुष्टि जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्र प्रज्ञप्ति व भगवती सूत्र के पाठों से हो रही है-**जया णं भंते! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ......... सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि सव्वब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ। एस णं आइच्चे**

संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे पण्णत्ते ।। कर्क संक्रान्ति के दिन अभिनव वर्ष का कथन उपलब्ध है, तो भगवती शतक 11 उद्देशक 11 में **आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।** यानी आषाढ़ी पूर्णिमा को 18 मुहूर्त्त का दिन उसी 21 जून के आस-पास होने को सूचित कर रहा है। प्रायः विश्व के प्रमुख-प्रमुख सम्प्रदायों में तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न मान्यता के पंचांग प्रचलित हैं। उन सबकी काल गणना भी चन्द्र, सूर्य की गति सापेक्ष है। आदित्य वर्ष की प्रधानता को प्रदर्शित करते हुए चन्द्र, सूर्य की गति के आकलन से निर्धारित मापदण्डों के आधार पर गणना की रीति प्रतिपादित होती है। जन्मभूमि पंचांग में भी अनेकों संवत्सरों का उल्लेख आता है। उनमें से दो प्रमुख मुस्लिम और ईसाई सम्प्रदाय के तिथि पत्रकों की चर्चा के साथ अप्रैल 2012 के संवत्सरी अंक में वर्णित तथ्यों की पर्याप्त पुष्टि होती है।

आगम समवेत स्वर से आदित्य वर्ष की प्रधानता बता रहा है। समवायांग सूत्र के 61वें समवाय में युग में 61 ऋतुमास कहे। यहाँ मात्र युग शब्द का प्रयोग हुआ है और 61 ऋतुमास के 1830 दिन (संशोधित 1831 दिन) आदित्य वर्ष की प्रधानता से ही बन सकते हैं। यहाँ युग के पहले आदित्य शब्द नहीं लगाया अर्थात् आदित्य युग से ऋतु संवत्सर का मेल बिठाने की बात नहीं कही। 20 युग में 16 या 17 युग जो 1831 दिन के होते हैं उस युग की बात कही है। अर्थात् आगमकारों को युग की गणना में 60 ऋतु संवत्सर के 1800 दिन वाले युग से आयुष्य व काल चक्र की गणना करना इष्ट नहीं है। 62वें समवाय में उसी युग में 62 चन्द्रमास व 67वें समवाय में उसी युग में 67 नक्षत्र मास कहे गए।

61 ऋतुमास = 62 चन्द्रमास = 67 नक्षत्र मास = 1 युग।

आचार्य भगवन्त इन सूत्रों से ध्वनित होने वाले अर्थ के अनुरूप ही कालगणना कर प्रत्येक आरे का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को प्रतिपादित करते हैं। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति का सातवाँ वक्षस्कार 60 मास की गिनती करके भी उसमें 1830 दिन बता रहा है और एक-एक दिन के 30 मुहूर्त्त से इन्हीं 1830 दिन के 54900 मुहूर्त्त का एक युग कह रहा है। क्या यह भी आदित्य संवत्सर से कालगणना एवं आयुष्य की गणना को द्योतित नहीं कर रहा है ?

चन्द्रप्रज्ञप्ति 12वाँ प्राभृत इसे और भी स्पष्ट कर रहा है। **ता कया णं एए आइच्चउडुचंदणक्खत्तो संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा ? ता सट्ठिं एए आइच्चमासा एगट्ठिं एए उडुमासा बावट्ठिं एए चंदमासा सत्तट्ठिं एए णक्खत्तमासा, एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा दुवालसभइया सट्ठिं**

एए आइच्चा संवच्छरा एगट्ठि एए उडुसंवच्छरा बावट्ठि एए चंदा संवच्छरा सतट्ठि एए णक्खत्ता संवच्छरा, तया णं एए आइच्चउडुचंदणक्खत्तो संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जो।

ता कया णं एए अभिवड्ढियआइच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा ? ता सत्तावण्णं मासा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा सट्ठि एए आइच्चमासा............ समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा। (चंदपण्णत्ती पाहुड 12, सूत्र 72वाँ)

विशेषता है इन सूत्रों में प्रारम्भ में नक्षत्र संवत्सर, चन्द्र संवत्सर और ऋतु संवत्सर को सूर्य संवत्सर से सम्बद्ध कर इनका समान प्रारम्भ व समान अन्त बताया गया। सूर्य संवत्सर इन चारों में सबसे बड़ा है। अत: उसकी निश्चित संख्या (60 सूर्य मास में, 61 ऋतुमास, 62 चन्द्रमास, 67 नक्षत्र मास) बताने की विवशता है और उसी के आधार से दिखाया गया। परन्तु इसके तुरन्त पश्चात् सूर्य संवत्सर से बड़ा होने पर भी अभिवर्धित संवत्सर को आधार बना शेष चारों की गणना नहीं की गई। यहाँ पर सूर्य संवत्सर के आधार से ही शेष चारों की गणना की गयी। कितना स्पष्ट है कालचक्र, आयुष्य की गणना में सूर्य संवत्सर का ही उपयोग होता है और उसी के साथ में बाकी चारों संवत्सर को समायोजित करके दिखाया जाता है।

89वें समवाय के आधार पर जिज्ञासु जिज्ञासा उत्पन्न करता है कि जब वहाँ पहले व अन्तिम तीर्थंकर के निर्वाण के 89 पक्ष पश्चात् क्रमश: तीसरे चौथे आरे के परिवर्तन होने का उल्लेख है तब प्रत्येक आरे का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को कैसे हो सकता है ? पूर्व में सूक्ष्म गणना के आधार पर 89वाँ पक्ष श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को भली-भाँति दर्शाया जा चुका है। जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के दूसरे वक्षस्कार में वर्णित 89 पक्ष के उल्लेख के साथ कल्पसूत्र आदि में वर्णित 3 वर्ष $8^1/_2$ मास को बढ़े हुए महीनों को गौण करते हुए सामान्य (24 पक्ष को 1 वर्ष के) अभिप्राय से भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् 89 पक्ष के रूप में दर्शाया जाना सम्भव है। भगवान श्री ऋषभदेवजी व भगवान श्री महावीर स्वामीजी की गणना में सूक्ष्मता स्थूलता होने से आगम के ऊपर वर्णित अनेक स्थलों से पूरी तरह परिपुष्ट श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को आरक परिवर्तन में बाधा नहीं आ सकती।

ऋतुमास की गणना से ये 89 पक्ष भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से पहले ही पूर्ण हो जाते हैं। लौकिक या लोकोत्तर किसी भी गणना से 89 पक्ष के 1335 दिन के आधार से कार्तिक कृष्णा अमावस्या से श्रावण कृष्णा प्रतिपदा नहीं आ

सकती है। इसे पूर्व में स्पष्ट किया गया, आगे और भी दिखाने का प्रयास किया जा रहा है।

सूक्ष्मदृष्टि से प्रथम तीर्थंकर के पश्चात् 89वें पक्ष में और स्थूल दृष्टि से 24वें तीर्थंकर के पश्चात् 89 पक्ष पूर्ण होने पर क्रमशः तीसरा-चौथा आरा पूर्ण हुआ। अन्यत्र स्थलों पर भिन्न-भिन्न रूप से दर्शाया गया। 89 पक्ष तथा 3 वर्ष $8^1/_2$ मास की भिन्न शैली को यहाँ संगृहीत कर एक साथ दिखा देना कोई समस्या पैदा नहीं करता। 81 पक्ष (जम्बूद्वीप वाले) सूक्ष्म गणना के होने से कहीं पर भी तीन वर्ष साढ़े आठ मास के नहीं कहे गए। सामान्य जन से पूछा जाए कि वर्ष में कितने दिन ? तो 365 दिन का ही उत्तर आयेगा। इसी प्रकार सामान्य जनों से पूछा जाए की 3 वर्ष $8^1/_2$ मास में कितने पक्ष तो 89 पक्ष ही उत्तर आयेगा। एक ही सूत्र में निबद्ध एक सरीखे दिखने वाले शब्दों के होने पर भी उनका अभिप्राय अलग-अलग हो सकता है।

अभिवर्धित मास विशिष्ट प्रकार का चन्द्रमास होने से उसे भी आकाश की घटना पर अवलम्बित कहा जा सकता है, पर ऋतुमास अढ़ाई द्वीप में विचरण करने वाले ज्योतिष्कचक्र पर अवलम्बित न होकर पर्याय परिणति अथवा एक परमाणु की एक आकाश प्रदेश से जुड़े हुए दूसरे आकाश प्रदेश पर जाने में लगने वाले काल के अविभाज्य अंश समय पर निर्भर करती है।

अतः ऋतुमास से निष्पन्न ऋतु संवत्सर से कालचक्र, आयुष्य आदि की गणना नहीं होती है। पूर्व में वर्णित भगवान के मुक्तिगमन के पश्चात् 3 वर्ष $8^1/_2$ मास और उनके छद्मस्थकाल के समय को आज की तारीखों के सन्दर्भ सहित देखा जाए तो भी स्पष्ट है कि यह काल ऋतुसंवत्सर से प्रतिबद्ध नहीं है। (व्यंकटेश पञ्चाग के अनुसार तारीखें दर्शायी जा रही हैं)-

(अ) कार्तिक कृष्णा अमावस्या से आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तक के 3 वर्ष $8^1/_2$ मास

	वि. सं.	तारीख	वि. सं.	तारीख	
(1)	2059	4 नवम्बर 2002 से	2063	11 जुलाई 2006 तक	1345 दिन
(2)	2060	25 अक्टूबर 2003 से	2064	30 जुलाई 2007 तक	1374 दिन
(3)	2061	12 नवम्बर 2004 से	2065	18 जुलाई 2008 तक	1344 दिन
(4)	2062	1 नवम्बर 2005 से	2066	07 जुलाई 2009 तक	1344 दिन
(5)	2063	21 अक्टूबर 2006 से	2067	26 जुलाई 2010 तक	1374 दिन

उक्त समय की गणना में कदाचित् 1-2 दिन का अन्तर पड़े तो भी किसी भी हालत में 89 पक्ष के ऋतुमास के आधार से होने वाले 1335 दिनों से निर्वाण के 89 पक्ष पश्चात्

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को आरक परिवर्तन सिद्ध हो ही नहीं सकता। अतः काल गणना में ऋतुमास की प्रधानता नहीं है। (जिनवाणी अप्रैल 2012 के पृष्ठ 23 के सन्दर्भ से)।

(आ) भगवान महावीर का छद्मस्थ काल

	मिगसर कृष्णा दशमी			वैशाख शुक्ला दशमी	
वि. सं.	तारीख		वि. सं.	तारीख	
(1) 2059	29 नवम्बर 2002	से	2072	28 अप्रैल 2015 तक	4534 दिन
(2) 2060	19 नवम्बर 2003	से	2073	16 मई 2016 तक	4563 दिन
(3) 2061	07 दिसम्बर 2004	से	2074	05 मई 2017 तक	4533 दिन
(4) 2062	26 नवम्बर 2005	से	2075	25 अप्रैल 2018 तक	4534 दिन
(5) 2063	15 नवम्बर 2006	से	2076	14 मई 2019 तक	4564 दिन

इससे भगवान महावीर का छद्मस्थकाल भी आदित्य वर्ष से ही युक्तियुक्त सिद्ध होता है, (जैसा कि जिनवाणी अप्रैल 2012 पृष्ठ 26, 27, 28 से स्पष्ट है) ऋतुसंवत्सर से 4515 दिन ही होते हैं। जबकि वहाँ आदित्य संवत्सर से निकले 4563 दिन यानी 4565 दिन दर्शाये गये, यहाँ भी (2) व (5) में इतने ही दिन आते हैं। वहाँ गणना प्रत्येक युग में दो मास वृद्धि से की गई थी-जबकि यहाँ 19 वर्ष में 7 माह बढ़ने की वास्तविक स्थिति के आधार पर (1), (3), (4) में 30 दिन कम आए, पर इन पाँचों में ऋतुसंवत्सर के 4515 दिन से एक पक्ष अधिक ही आया है, अस्तु काल गणना आदित्य संवत्सर से मानना ही उचित है।

(ख) मुस्लिम समुदाय की गणना युग के 1801 या 1831 दिन बताते हुए आदित्य संवत्सर की पुष्टि कर रही है।

हिजरी सन्-जन्मभूमि पञ्चाग में इस विषय में छपा है। मुसलमान पैगंबर मुहम्मद शाह ने शक 544, कार्तिकी विक्रम सम्वत् 678 श्रावण सुदि एकम, पुराने अँग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार तारीख 15-7-622 गुरुवार की रात्रि को चन्द्रदर्शन होने पर शुक्रवार के दिन मक्का से मदीना हिजरत की, तब से हिजरी सन् की शुरुआत हुई है और उनके वर्ष केवल चान्द्रमास (किसी भी मास की शुरुआत चन्द्रदर्शन होने पर उस रात का वार और तारीख मानते हैं) के अनुसार है, इसलिए सूर्यक्रान्ति या सायन-अयन और ऋतुओं के साथ उनका पञ्चाग नहीं बैठता है। लगभग हिजरी सन् 33 वर्ष में एक वर्ष आगे चला जाता है। इस प्रकार उनके नामकरण किए मास हर एक ऋतु में आगे जाते हैं। सम्वत् 2033 में पौष मास का चन्द्रदर्शन तारीख 22-12-76 की रात को तथा हिजरी सन् 1397 बैठता है। मुस्लिम महीनों के नाम-

(1) मोहर्रम	30
(2) सफर	29
(3) रबी उलअव्वल	30
(4) रबी उलआखर	29
(5) जमादी उलअव्वल	30
(6) जमादी उलआखर	29
(7) रज्जब	30
(8) शाबान	29
(9) रमज़ान	30
(10) शव्वाल	29
(11) ज़िल्काद	30
(12) ज़िल्हेज	29
	354 दिन

मुस्लिम हिजरी सन् का जो अंक होता है उसमें 30 से भाग लगने पर 2, 5, 7, 10, 13, 16, 18, 21, 24, 26, 29 शेष रहे, उस वर्ष में 354 के बदले अन्तिम मास जुल्हेज में 1 दिवस बढ़ाकर 355 दिन होते हैं। शेष मासों में मध्यम मान के अनुसार मोहर्रम से अनुक्रम से 30–29 दिन होते हैं।

मुसलमान तो मास वृद्धि करते नहीं, किन्तु 1–1 दिन बढ़ाने की उनकी व्यवस्था, मास वृद्धि को उनके महीनों में देखने पर युग में 1801 या 1831 दिन किस प्रकार दे रही है, इसे देखते हैं।

युग के वर्षों के दिनों की मुस्लिम तिथियों से गणना				बढ़ने वाले दिन	
चन्द्र		1	354		
चन्द्र		2	354	+	1
अभि		3	354		
चन्द्र		4	354		
अभि		5	354	+	1
	(छठे वर्ष के 2 माह)		59		
			1831 दिन		
चन्द्र	(शेष 10 माह)	6	295		

चन्द्र		7	354	+	1
अभि		8	354		
चन्द्र		9	354		
चन्द्र		10	354	+	1
	(11वें वर्ष के 3माह)		89		
			1802 दिन		
अभि	(9 माह)	11	265		
चन्द्र		12	354		
चन्द्र		13	354	+	1
अभि		14	354		
चन्द्र		15	354		
	(16वें वर्ष के 5 माह)		148		
			1830 दिन		
अभि	(7 माह)	16	206	+	1
चन्द्र		17	354		
चन्द्र		18	354	+	1
अभि		19	354		
चन्द्र		20	354		
	(21वें वर्ष के 7 माह)		207		
			1831 दिन		

(अ) कितना स्पष्ट है कि सभ्यता और विकास में आगे नहीं होने के उपरान्त भी 30 वर्षों में 19 वर्ष 354 दिनों के व 11 वर्ष 355 दिनों के करके उन्होंने प्रत्येक मास का प्रारम्भ द्वितीया के चन्द्रदर्शन से शुद्ध रूप में रखा। सर्वज्ञ प्रणीत व्यवस्था में मात्र 354 दिनों का चन्द्र वर्ष मानने पर 30 वर्षों में द्वितीया का चन्द्र 11 दिन पूर्व लगभग कृष्ण पक्ष की छठ के दिन मानना कैसे युक्ति संगत हो सकता है ? लोकोत्तर मुस्लिम गणित हो अथवा भारतीय (हिन्दू, बौद्ध या जैन) सभी आकाश में सूर्य, चन्द्र व नक्षत्रों के आधार पर आधारित है, अत: उनमें परमार्थत: कोई अन्तर नहीं।

अत: 100 वर्षों के 20 युगों में 16 या 17 युग औसतन 1831 दिनों के तथा 4 या 3 युग औसतन 1801 दिन के होते हैं। जिनवाणी अप्रैल 2012 पृष्ठ 152 व 153 पर 7

जुलाई 1944 से 11 जुलाई 2044 (विक्रम सम्वत् 2001 से 2101) तक के प्रत्येक युग भी यही दर्शा रहे हैं।

ये सारे आंकडे पूरी तरह स्पष्ट कर रहे हैं कि 100 चन्द्र वर्ष (अभिवर्धित सहित) में 36529 दिन हुए; जबकि 100 सूर्य वर्ष भी इसके सन्निकट ही आते हैं। काल गणना, आयुष्य की गणना इसी आदित्य वर्ष से ही होती है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

(आ) महापुरुषों का प्राय: फरमाना रहता है कि लौकिक गणित भी पूर्वों के आधार से ही निकला होता है, अत: उसे स्वीकार करने में बाधा नहीं। मुस्लिम समुदाय को भी इन्हें बिखरे मोतियों में से यह विधि हस्तगत हुई प्रतीत होती है; अस्तु हमें लौकिक, मुस्लिम गणना के अनुरूप कतिपय युग 1801 दिन के व अधिकांश युग 1831 दिन के मानना युक्तिसंगत ही है। (जिनवाणी अप्रैल 2012, पृष्ठ 138 से 144)

(इ) वर्तमान में 1830 दिन के युग में 62 चन्द्र मासों का भाग लगाकर $29^{32}/_{62}$ दिन का चन्द्र मास मात्र औसत कथन है। द्वितीया को दिखने वाले चन्द्र में सदैव इतना अंतर होना सम्भव नहीं है। मुस्लिम समाज सामान्य-सी गणना से जिस द्वितीया के चन्द्र दर्शन से नवीन मास प्रारम्भ कर सकता है वहाँ सर्वज्ञ प्रणीत आगम में अन्यथा आए, ऐसा कदापि सम्भव नहीं है।

आश्चर्य इस बात का है कि विकसित कहलाने वाले देश आदित्य वर्ष की गणना उस समय तक ठीक-ठीक कर पाने में असफल रहे (जो अगले बिन्दुओं में स्पष्ट होगा) उस समय भी अविकसित समझे जाने वालों की गणना सही रही जो आज तक चन्द्र मास व चन्द्र वर्ष के लिए उनके यहाँ चल रही है।

(ग) विकसित कहलाने वाले यूरोपीय देशों-अमेरिका, रूस आदि में प्रचलित आदित्य वर्ष (ईस्वी सन्) की गणना में लगभग 1500 वर्ष तक किञ्चित् त्रुटि चलती रही। जन्म भूमि पञ्चाग के अनुसार एक आदित्य वर्ष 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनिट 45.4975456 सेकण्ड का होता है। जबकि 365 दिन 6 घण्टे का मानते हुए लीप ईयर में अन्तिम बारहवें महीने फरवरी को 29 की जगह 30 दिन का किया जाता था। अत: प्रतिवर्ष 11 मिनिट 14.5022544 सेकण्ड का अन्तर पड़ता था, जबकि इण्टरनेट पर इस अन्तर को 11 मिनिट 10 सेकण्ड का बताया गया। आज की तारीखों के अनुसार उस समय 25 मार्च को 1 मार्च मानकर वर्ष प्रारम्भ किया जाता था। वर्ष का प्रारम्भ विक्रम सम्वत् के सन्निकट वसंत ऋतु में ही दुनिया भर में प्रचलित था। उस समय महीनों का क्रम एवं महीनों के दिनों की संख्या इण्टरनेट के अनुसार इस प्रकार थी-

लीप ईयर

मार्च	31	31
अप्रैल	30	30
मई	31	31
जून	30	30
जुलाई	31	31
ऑगस्ट	30	30
सेप्टेंबर	31	31
ऑक्टोबर	30	30
नवबर	31	31
डिसेंबर	30	30
जनवरी	31	31
फरवरी	30	29
कुल	366	365

चेन्नई से प्रकाशित होने वाले पल्लव टाइम्स में 2012 चातुर्मास अंक में प्रकाशित एक लेख के अनुसार यातायात के साधनों का विकास होने पर भारतीय ज्योतिष विज्ञान से उन लोगों का परिचय हुआ। उन्हें महसूस हुआ कि उनकी गणना त्रुटि से मकर संक्रांति व कर्क संक्रान्ति के दिन लगभग 10 दिन आगे खिसक गए।

ज्यूलियन कॅलेंडर- ईसा से 45 वर्ष पूर्व ज्यूलियस कैसर ने सूर्य वर्ष पर आधारित 12 महीने का कॅलेंडर निकाला, 3 साल 365 दिन के 1 साल 366 दिन का इस चक्र से क्रम चलता रहा। वर्ष का अन्तिम दिन 24 मार्च था। इसके पश्चात् ग्रेगोरियन कॅलेंडर-नये तरीके से पोप ग्रेगरी 13 के द्वारा 1582 में यह कॅलेंडर बनाया गया। ज्यूलियन कॅलेंडर में परिवर्तन का कारण यह रहा कि 11 मिनिट 10 सेकण्ड की प्रति ज्यूलियन वर्ष की त्रुटि को सुधारना। प्रतिवर्ष 11 मिनिट 10 सेकण्ड का अन्तर 400 साल में लगभग 3 दिन से अधिक पड़ जाता है।

400 x 10 = 4000 सेकण्ड = 66 मिनिट 40 सेकण्ड

400 x 11 = 4400 मिनिट कुल = 4466 मिनिट = 74 घण्टे से अधिक।

इसलिए 400 साल में 3 दिन से अधिक अन्तर पड़ जाता है। इस गलती को सुधारने के लिए ब्रिटिश सरकार ने ग्रेगोरियन कॅलेंडर 1752 सितम्बर में अपनाया और यह परिवर्तन

उत्तरी अमेरिका आदि देशों में भी हुआ, रूस ने 1918 में, ग्रीस ने 1923 में यह परिवर्तन स्वीकार किया। यूरोपीय देशों में 1582 में अपनाया, पर जर्मनी, हॉलैंड, उत्तर जर्मन इन्होंने 1700 तक ग्रेगोरियन कॅलेंडर नहीं अपनाया।

सितम्बर 1752

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

दुनिया के विभिन्न ईसाई देशों के पञ्चागों में विभिन्नता रही। 400 साल में 100 दिन के स्थान पर 97 दिन बढ़ाने होते हैं। इसलिये अब यह तय कर दिया कि शताब्दी को छोड़कर शेष वर्षों में 4 का भाग जाने पर उसे लीप ईयर मान फरवरी 29 की करनी तथा शताब्दी वर्ष में 400 का भाग जाने पर ही लीप ईयर होगा अन्यथा नहीं जैसे 2000 में फरवरी 29 दिन की थी। किन्तु 1800, 1900 में फरवरी 28 दिन की ही थी तथा 2100, 2200, 2300 में 400 का भाग नहीं जाने से फरवरी 28 दिन की ही होगी।

इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय गणना शताब्दियों से आकाश के ग्रह नक्षत्रों की चाल का आकलन करने में सक्षम व सर्वश्रेष्ठ रही। सर्वज्ञों के ज्ञान में इसका आकलन पूरी तरह स्पष्ट ही था, पर गणना की विवशता से प्रत्येक वर्ष को 365 दिन 5 घण्टा 48 मिनिट 45 या 50 सेकण्ड के पश्चात् पूरा नहीं किया जा सकता। वर्ष का परिवर्तन सूर्योदय/अर्द्धरात्रि के निर्धारित समय पर ही करना होगा।

जैसा कि इण्टरनेट पर भी दिखाया गया "Our units of temporal measurement, from seconds on up to months, are so complicated, asymmetrical and disjunctive so as to make choerent mental reckoning in time all but impossible.

समय को मापने की, सेकण्ड से लेकर महीने तक की, हमारी इकाईयाँ इतनी जटिल, विषम और भिन्न हैं कि समय की सुसंगत मानसिक गणना करना असम्भव है।

इसी आदित्य वर्ष के आधार पर सारी कालगणना होती है और शेष संवत्सरों को इसके साथ समन्वित किया जाता है।

(घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्षस्कार 7 में पाँच प्रकार के संवत्सर बताए हैं-**कइ णं भंते! संवच्छरा पण्णत्ता? गोयमा! पंच संवच्छरा प., तं.-णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंवच्छरे।**

पमाणसंवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा- णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए, सेत्तं पमाणसंवच्छरे।

संवत्सर पाँच प्रकार के हैं-नक्षत्र संवत्सर, युग संवत्सर, प्रमाण संवत्सर, लक्षण संवत्सर, शनिश्चर संवत्सर। प्रमाण संवत्सर के पाँच प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र में नक्षत्र संवत्सर, चन्द्र संवत्सर, ऋतु संवत्सर, आदित्य संवत्सर, अभिवर्धित संवत्सर बताए, जबकि चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र के 12वें पाहुड में संवत्सर 5 प्रकार के बताए गए। **ता कहं णं संवच्छरा आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा- णक्खत्ते चंदे उड्ू आइच्चे अभिवड्ढिए**-नक्षत्र संवत्सर, चन्द्र संवत्सर, ऋतु संवत्सर, आदित्य संवत्सर, अभिवर्धित संवत्सर।

(1) नक्षत्र संवत्सर- चन्द्रमा 27 नक्षत्रों का भोग करता है उसे नक्षत्र मास कहते हैं। ऐसे 12 नक्षत्र मास का नक्षत्र संवत्सर कहलाता है अर्थात् एक नक्षत्र संवत्सर में चन्द्रमा एक-एक नक्षत्र का 12 बार परिभोग कर लेता है। जबकि आदित्य संवत्सर में सूर्य द्वारा 1-1 नक्षत्र सिर्फ 1 बार ही भोगा जाता है। अर्थात् इन दोनों संवत्सर की गणना का आधार भिन्न-भिन्न है।

(2) चन्द्र संवत्सर- चन्द्रमास वीर निर्वाण सम्वत्, विक्रम सम्वत् और शक् सम्वत् में शुक्ला प्रतिपदा को प्रारम्भ होकर अमावस्या को पूर्ण होता है। चन्द्रमा द्वारा 27 नक्षत्रों का भोग नक्षत्र मास कहलाता है, चन्द्रमास नहीं। चन्द्रमास की पूर्णता सूर्य के राशि अंश, कला, विकला की समानता पर होती है अर्थात् अमावस्या की घड़ी के समापन पर चन्द्रमा और सूर्य दोनों साथ रहते हैं, दोनों के साथ रहने से ही इसे अमावस्या कहते हैं।

आरे का परिवर्तन, शताब्दी, युग अथवा वर्ष का प्रारम्भ आगमीय गणना से नवीन सूर्य संवत्सर के आस-पास होता है और श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से नववर्ष, नव युग, नव आरा, नव अवसर्पिणी, नव उत्सर्पिणी, नव कालचक्र का प्रारम्भ माना जाता है। वहाँ पूर्णिमा पर चन्द्रमा सूर्य से ठीक 6 राशि (180^0) आगे रहता है अर्थात् चन्द्रमास केवल चन्द्रमा पर आधारित नहीं है, अपितु चन्द्र, सूर्य के संयोग अथवा आमने-सामने होने पर आधारित है। ऐसे 12 चन्द्रमासों का चन्द्र संवत्सर कहलाता है। चन्द्रमा लगभग सवा दो दिन में, सूर्य लगभग 30 दिन में 1 राशि को पार कर जाता है। शनि को उसी राशि को पार करने में ढाई साल लगते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक साधनों द्वारा प्रकट होने वाला सौर परिवार इस रहस्य को स्पष्ट उजागर करता है। हजारों साल पूर्व से चला आ रहा लौकिक गणित वर्तमान वैज्ञानिक गणित से प्राय: मेल खाता है अर्थात् बाहरी साधनों के अभाव में भी भारत के प्रज्ञावन्तों, महर्षियों ने भीतर की साधना से प्रकट प्रत्यक्ष ज्ञान से इस गणना को उस समय

भी प्रकट कर दिया था।

(3) ऋतु संवत्सर– साठ विपल का एक पल, साठ पल की एक घटी, दो घटी का एक मुहूर्त्त, 30 मुहूर्त्त के दिन-रात, 30 दिन-रात का ऋतुमास। आगम में आवलिका, श्वासोच्छ्वास, प्राण, स्तोक, लव, मुहूर्त्त आदि से गणना की गयी। यह संवत्सर गणना की आधार शिला के रूप में प्रस्तुत हुआ। गुणरत्न संवत्सर आदि तपों की काल की गणना में भी इसका उपयोग होता है पर यह नक्षत्रों की चाल पर आधारित न होकर गणित की विवशता से सूर्य, चन्द्र आदि संवत्सर को समझने के लिए आधार का कार्य करता है।

(4) आदित्य संवत्सर– प्रमाणकाल का यह प्रधान संवत्सर है, प्रमुख संवत्सर है। पृथ्वी से की जाने वाली गणना के कारण पृथ्वी की गति को न कहकर ज्योतिर्वेत्ता अथवा आधुनिक वैज्ञानिक सूर्य की गति को प्रकट करते हैं और पृथ्वी द्वारा एक बिन्दु से प्रारम्भ हुई सूर्य की परिक्रमा के पूर्ण होने पर पृथ्वी के पुनः उसी बिन्दु पर आने को सूर्य संवत्सर कहते हैं। आगमीय गणना में उत्तरायण की परावधि (चरम सीमा पर) अवस्थित सूर्य से (जिस दिन सबसे बड़ा दिन (भारत वर्ष आदि में) 21 जून के आस-पास नव संवत्सर प्रारम्भ होता है जैसा कि आगम में कहा गया। पुनः उसी बिन्दु पर आने पर वह संवत्सर पूर्ण होकर नया संवत्सर प्रारम्भ हो जाता है। (पृष्ठ दूसरा बिन्दु क में मूल पाठ आया है)

आगम के अनेक सूत्रों से यह पूरी तरह स्पष्ट है कि काल द्रव्य के लिए यही संवत्सर प्रधान है, प्रमुख है। इसी के आधार से युग आदि की गणना होती है।

(ङ) वैज्ञानिक गणना के अनुसार कर्क रेखा भारत के मध्य में $23^1/_2{}^0$ पर (गुजरात की राजधानी गाँधीनगर के आस-पास) दर्शायी जाती है। वहाँ जब सूर्य अवस्थित होता है (लगभग 21 जून) तब सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात्रि होती है। आगमीय गणना (जम्बूद्वीप सातवाँ वक्षस्कार सूत्र 127) के अनुसार जम्बूद्वीप में 180 योजन व लवण समुद्र में 330 योजन कुल 510 योजन तक सूर्य के मण्डल बनते हैं। अर्थात् कर्क रेखा से विषुवत् रेखा तक $23^1/_2{}^0$ अक्षांश पर 205 योजन के लगभग 3249 किलोमीटर होते हैं। उत्सेधांगुल से गणना की जाए तो यह दूरी बिल्कुल बराबर बैठ जाती है। एक हजार गुणा करके प्रमाणांगुल से नहीं बैठ पाती है। गाँधीनगर से सीधी रेखा भारत के नीचे के अन्तिम बिन्दु पर खींची जाए तो यह दूरी 180 योजन के 2304 किलोमीटर (उत्सेधांगुल) के सन्निकट ही आती है। उससे नीचे 330 योजन लवण समुद्र के माण्डले पार करता हुआ सूर्य मकर रेखा पर लगभग 22 दिसम्बर को पहुँचता है तब सबसे छोटा दिन व सबसे बड़ी रात्रि होती है।

कहने का सार यह है कि आगमीय गणना के आँकडों के अनुरूप ही लौकिक गणना व

वैज्ञानिक गणना में आदित्य वर्ष के दिनों की संख्या आदित्य के पुनः उसी कर्क रेखा पर पहुँचने पर निर्भर करती है। प्रमाण अंगुल से क्षेत्र की गणना की बात आदित्य की गति से मेल खाती हुई प्रतीत नहीं होती है, उत्सेधांगुल से काफी सन्निकट सिद्ध होती है। आदित्य की यह गति, आदित्य का यह चार, 366 दिन से कुछ घण्टे कम होने के साथ, $365^1/_4$ दिन से कुछ मिनिट व सेकण्ड कम होने के कारण आदित्य वर्ष से ही सारी काल गणना प्रभावित होने की पुष्टि कर रही है। भारतीय गणना के सम्पर्क में आने पर अँग्रेजों को अपनी भूल ध्यान में आई, लगभग 21 जून को सूर्य कर्क रेखा पर होता है, जबकि उनकी गणना में 400 वर्षों में लगभग 3 दिन बढ़ते चले जाते। अतः उन्होंने सुधार किया। हमारी गणना बिल्कुल शुद्ध ही थी। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। कर्क रेखा भरत क्षेत्र के लगभग मध्य से गुजरती है, उस पर सूर्य के होने को पुराने संवत्सर की पूर्णता और नवीन संवत्सर के प्रारम्भ के रूप में आगम में वर्णित किया ही गया है। उसी के केन्द्र से आषाढ़ी पूर्णिमा का वर्ष भी प्रायः 15 दिन आगे-पीछे पूर्ण हो जाता है। आज भी सायन गणना की कर्क संक्रान्ति उसी दिन होती है। इस प्रकार आदित्य का परिभ्रमण ही काल गणना का प्रधान आधार सिद्ध होता है। आगम व वैज्ञानिक गणना में तुल्यता क्षेत्र की अपेक्षा भी सिद्ध होती है।

(5) अभिवर्धित संवत्सर-मास- सूर्य व चन्द्र की गति पर सारी गणना आधारित है। 27 नक्षत्रों का भोगकर जब चन्द्रमा पुनः प्रारम्भिक बिन्दु पर पहुँचता है तब सूर्य उस बिन्दु से लगभग 27 अंश आगे होता है-चन्द्रमा वहाँ पहुँचेगा तब तक सूर्य कुछ और आगे होगा और 29 दिन से कुछ अधिक काल में दोनों एक ही बिन्दु पर होंगे, वह चन्द्रमास पूर्ण हुआ या चन्द्र संक्रान्ति हुई। इन दो अमावस्याओं के बीच यदि सूर्य संक्रान्ति नहीं हुई हो तो वह मास फल्गु, शून्य या अभिवर्धित मास कहलाता है और वह संवत्सर अभिवर्धित संवत्सर कहलाता है।

आगम आधारित गणना में श्रावण से पौष तक बढ़ने वाले मास को पौष मास वृद्धि व माघ से आषाढ़ तक की वृद्धि को आषाढ़ मास की वृद्धि के रूप में स्वीकार कर अभिवर्धित मास व संवत्सर की एक रीति निश्चित कर दी गई। अभिवर्धित मास चन्द्रमास ही होता है और वह वास्तव में आदित्य संवत्सर से चन्द्र संवत्सर के अन्तर को पाटने की व्यवस्था है। प्रायः 11 दिन का अन्तर चन्द्र सूर्य संवत्सर में होता है 19 वर्ष में यह 19 x 11 = 209 दिन के आस-पास हो जाता है, इसलिये 19 वर्ष में 7 मास बढा 30 x 7 = 210 दिन के अन्तर को पूरा कर दिया जाता है। अतः अभिवर्धित संवत्सर या मास स्वयं आदित्य संवत्सर से काल गणना की प्रधानता सूचित कर ही रहे हैं।

लौकिक, लोकोत्तर, अन्य मतावलम्बियों के संवत्सर कालगणना में आदित्य की

प्रधानता बता रहे हैं अत: इसकी प्रधानता को स्वीकार कर नारक, देवता आदि की आयुष्य व कालचक्र की गणना में हमें इसकी प्रधानता स्वीकार करना श्रेयस्कर है।

सार रूप में पुन: देखने का प्रयास करें-

(अ) संवत्सर युग, शत वर्ष, सहस्र वर्ष, 21,000 वर्ष के 2 आरे तथा सागरोपमों के शेष 4 आरे, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, कालचक्र आदि का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को होता है।

(ब) कर्क संक्रान्ति के दिन सबसे बड़ा दिन और सबसे छोटी रात्रि (उत्तरी गोलार्द्ध में 21 जून को) होती है, आषाढ़ी पूर्णिमा उसी केन्द्र के आस-पास होती है। 1 पक्ष पूर्व से 1 पक्ष पश्चात् तक 6 जुलाई तक चौमासा लगने पर लगभग 26 अगस्त तक (आज के निरयन गणना में 28 जुलाई तक चौमासा लगने पर 16 सितम्बर तक) संवत्सरी आराधना हो जाती है, जबकि दो श्रावण होने पर भादवा में तथा दो भादवे होने पर द्वितीय भादवा में करने वालों की संवत्सरी प्राय: 26 अगस्त (निरयन में 16 सितम्बर) पश्चात् आती है। जो भगवती शतक 11 उद्देशक 11 और जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति व चन्द्र प्रज्ञप्ति में वर्णित 18 मुहूर्त्त के उत्कृष्ट दिनमान पर आषाढ़ी पूर्णिमा के शास्त्रीय उल्लेख के प्रतिकूल है।

(स) चन्द्र संवत्सर 354 दिन से कुछ बड़ा होता है, इसीलिये मुस्लिम समुदाय पिछले लगभग 1400 वर्षों से 30 वर्ष में 11 दिन बढ़ाकर चन्द्र संवत्सर को लगभग $354^{11}/_{30}$ दिन का सूचित कर रहा है।

(द) सूर्य संवत्सर 366 दिन से छोटा होता है। $365^{1}/_{4}$ दिन का मानने वालों को भी 1752 में 11 दिन की गड़बड़ी को सुधार सायन गणना में आगे खिसकी कर्क संक्रान्ति को 21 जून पर लाने के लिए 11 दिन आगे की तारीख 2 सितम्बर से सीधी 14 सितम्बर करनी पड़ी। अत: संक्रान्ति की उसी तिथि (अँग्रेजी तारीख) की प्रामाणिकता (कर्क संक्रान्ति को उत्कृष्ट दिनमान) के आगमीय कथन से आधुनिक साधनों द्वारा बताये गये आदित्य संवत्सर का प्रमाण ही हमारे सूक्ष्म गणित में अवश्य रहा होगा। भारतीय गणना के आधार से ही उन लोगों को भूल सुधारने की जानकारी मिली।

(य) चन्द्र के 12 बार 27 नक्षत्र भोग से नक्षत्र संवत्सर लगभग 13 बार 27 नक्षत्र भोग से चन्द्र संवत्सर व सूर्य के 1 बार 27 नक्षत्र भोग से आदित्य संवत्सर व्यवहृत होता है, ऋतुसंवत्सर काल की गणना के लिए प्रारम्भिक भूमिका के रूप में व अभिवर्धित संवत्सर चन्द्र सूर्य संवत्सरों में तालमेल (सामञ्जस्य) के लिए उपयोगी होता है। आदित्य संवत्सर की प्रधानता से ही आगमकार शेष चारों संवत्सरों को इसके तुल्य होने (समान प्रारम्भ-समान अंत) का उल्लेख करते हैं।

विशेषः- सम्वत् 2080 ईस्वी सन् 2023 में दो श्रावण होने पर पुनः द्वितीय श्रावण या भाद्रपद में संवत्सरी का प्रसंग आने वाला है। पंजाब के मूर्धन्य आचार्यप्रवर श्री सोहनलालजी म.सा. आदि अनेकानेक आगम की परिपुष्ट जानकारी रखने व प्रस्तुत करने वाले आचार्यों, बहुश्रुतों द्वारा प्रस्तुत अभिप्राय के अनुरूप द्वितीय श्रावण में संवत्सरी की आराधना करने के लिए प्रयास होने पर आगम की आज्ञा आराधना सहित स्थानकवासी परम्परा में एकरूपता हो सकती है। आगम विरुद्ध किञ्चिद् भी प्ररूपणा हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

चरण-शरण

प्रभु के चरण की ही
मुझे शरण है,
समर्पित सभी
योग और करण है,
नहीं करना अब मुझे
बार-बार मरण है,
तेरे ही जैसे शुद्ध स्वरूप
का करना, मुझे वरण है।

सच्चा सुखी

जो सुखी है
वह दुःखी भी है
तो प्रश्न होता है
सच्चा सुखी कौन?
उत्तर मिला-
जो साता के
सुख की
आसक्ति से परे है।

सुविधा

स्व में रमण
करने की जिसे
आ गयी विद्या,
वहाँ नहीं फिर किसी
तरह की दुविधा,
वहाँ तो है मात्र
सुविधा ही सुविधा।

स्व-समर्पण

प्रभु के
प्रति समर्पण
व प्रभु-आज्ञा
के प्रति समर्पण
यानी
स्व का
स्व के प्रति
समर्पण।

नहीं चाहिए

मुझे नहीं चाहिए
भटकाव,
मुझे नहीं चाहिए
विभाव,
मुझे चाहिए
अलगाव,
मुझे चाहिए
स्वभाव।

ज्ञायक भाव

ज्ञायक
भाव ही है
आत्मा के लिए
सुखदायक,
राग-द्वेष
पूर्वक जुड़ाव ही है
दुःख कारक।

-संकलित

दीक्षा अर्द्धशती पर विशेष

साधना के चार बलों से शोभित आचार्य हीरा

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 19 नवम्बर, 2012 को श्रीमती राजकुंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक स्वाध्याय भवन, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, जयपुर में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती महोत्सव पर दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन-विभाग ने किया है।**-सम्पादक**

गरिमा गुरु की अनन्त है, गुण गौरव भंडार
जन जन के हो देवता, मम जीवन आधार।
वर्धमान के वीर हो, हस्ती गुरु की शान
नमन करूँ मैं भक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण।।

श्रद्धालु बन्धुओं,

हम सभी यहाँ पर श्रद्धेय को श्रद्धा के सुमन अर्पित करने के लिये उपस्थित हुए हैं। श्रद्धेय आचार्य भगवन्त हमारी श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु हैं । जिनके कारण से हमारी श्रद्धा और हमारा विश्वास दिन दूना रात चौगुना बढ़ता चला जाता है। आचार्य भगवन्त के चारित्र को देखकर पराया भी अपना बन जाता है। प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा आपने चारित्र को सुन्दर बनाया है। आप चारित्र के देवता हैं,चारित्र इनकी श्वास है। आचार्य भगवन्त हस्तीमलजी म.सा. देह से भले ही चले गये, परन्तु गुरु हीरा के अन्दर गुण रूप में आज भी विद्यमान हैं। इनके कार्यों को देखकर मन में विश्वास जागृत होता है कि गढ़ा गढ़ाया आचार्य हीरा हमें प्राप्त है । जौहरी लोग हीरे,पन्ने को गढ़कर तैयार करते हैं। कोयले में छुपे हीरे को, पत्थर में रही मूर्ति को और व्यक्ति में छुपी प्रतिभा को हर कोई नहीं जान पाता। प्रतिभा होना अलग बात है और प्रतिभा को प्रकाश में लाना उससे महत्त्वपूर्ण है। गुरु हस्ती की कुशल कार्यशाला में गुरु हीरा रूपी हीरा तैयार हुआ है, जिसकी आभा हमारी आत्मा को ऊर्जा प्रदान कर रही है। आचार्य भगवन्त के आभा मंडल में तेज है। साधना नहीं करने वाले व्यक्ति भी आचार्य भगवन्त को देखकर साधना करने को उत्सुक हो जाते हैं। आचार्य भगवन्त का हर दिन उत्सव है, इनके सान्निध्य में हर दिन दिवाली है। संयम-जीवन ऐसा स्थान है जहाँ पहुँच कर जीवन के अनमोल क्षण सार्थक होते हैं । संयम क्या है? उस

व्यक्तित्व का विकास जो बाह्य से निरपेक्ष होकर अपने आपमें परिपूर्ण, संतुष्ट और परितृप्त है। संयम की साधना में, आराध्य की आराधना में, गुरु की उपासना में हमारे प्रभु हमेशा संलग्न रहते हैं । उनके पास कोई आता है तो माल की नहीं माला की चर्चा करता है। माला फेरोगे तो माल अपने आप आ जाएगा। पैसों की नहीं परमेश्वर की चर्चा करते हैं। संसार नहीं संयम, भोग नहीं योग, राग नहीं वैराग,धन नहीं ध्यान के लिये जिनका जीवन समर्पित है ऐसे आचार्य भगवन्त के गुण देख कर ही नहीं चखकर हमारी हालत ''गूंगे का गुड़'' जैसी हो गई है । गूंगा जैसे गुड़ खा तो सकता है, पर स्वाद के बारे में बता नहीं सकता। उन आचार्य भगवन्त के गुण वर्णन करना जो मेरी माँ भी है, पिता भी है, भाई भी है, संसार के सभी संबंध को बचपन में ही छोड़कर गुरु चरणों में आने पर तब से लेकर आज तक गुरुदेव ने दोनों हाथों से सहारा देकर आगे बढ़ाया है। पिता के कर्त्तव्य को बखूबी निभाने वाले पिता हैं। माँ की एक आंख में लाड़ होता है, तो दूसरी आंख में ताड़ होती है। वह एक आंख से प्यार करती है तो दूसरी आंख से डराती रहती है। आप वात्सल्य के सागर हैं। आचार्य भगवन्त के गुणों को मैं गा नहीं सकता। उनके लिये तन-मन-जीवन समर्पित है।

ऐसे गुरु का संयोग प्राप्त होना इस युग में कठिन है । हमें ऐसे गुरु सहज ही मिल गए हैं, क्योंकि जिनके उद्देश्य उच्च हैं,उपदेश आदर्श हैं, उदारता अनुकरणीय है ऐसे गुरु का प्राप्त होना कठिन ही है । कहा भी है:-

यह तन विष की बेलड़ी गुरु अमृत सम जान ।
शीस दिया जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।

ऐसे सद्गुरु अगर एक जीवन समर्पित करने पर भी मिलें तो सस्ते ही जानो। जिनका ब्रह्मचर्य पूरे शरीर में फैल गया है, आंखों से दिखाई देता है, वाणी में उतर गया है, चेहरे पर खिल उठा है ऐसे हैं हमारे आचार्य देव। ऐसे गुरु को पाने के लिये हम तो क्या देव भी तरसते होंगे।

स्वर्णिम इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर स्वर्णाक्षर में एक नाम अंकित है वह है ''आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.''। विचार करता हूँ तो लगता है जब ये इतने भव्य भगवान हैं तो 'आचार्य श्री हस्ती' कैसे होंगे। उनको तो नहीं देखा, पर इनको देख कर लगता है वे जरूर कोई अद्भुत विरल विभूति रहे होंगे। आपश्री को पाकर आँख ही नहीं आत्मा भी पुलकित हो जाती है । आचार्यदेव गुणों के आकर हैं। इनके अनेक गुणों में एक है 'प्रवचन पटुता।' आचार्य भगवन्त के प्रवचन में प्रखरता है, प्रांजलता है, पूर्णता है, प्रभावकता है। आपके प्रवचन हर तबके और उम्र वाले के लिये ग्राह्य हैं । छोटा बालक भी

गर्दन हिला कर स्वीकृति देता है तो मूथा साहब जैसे वरिष्ठ श्रावक भी भाव विभोर हो जाते हैं। थोड़े से में बहुत सार की बात कह देते हैं, गागर में सागर भर देते हैं। ऐसे प्रभावशाली आचार्य देव जैसा गुरु पाकर हर भक्त प्रसन्न है।

लोग कहते हैं गुरु क्यों जरूरी? एक साधक से भी प्रश्न किया कि गुरु क्यों जरूरी? साधक ने कहा- तेरे प्रश्न के समाधान के पूर्व मेरे प्रश्न का उत्तर दे कि माँ क्यों जरूरी? वह जिज्ञासु बोला- "संसार में आना है तो माँ जरूरी है। साधक ने कहा संसार से जाना है, मुक्त होना है तो गुरु जरूरी है।" माता-पिता अबोध को प्रथम बोध देते हैं तो गुरु उस बोध से बुद्ध दशा की ओर अग्रसर करते हैं। संसार में सबसे जरूरी गुरु हैं। गुरु बने बिना भी मोक्ष में जाया जा सकता है, परन्तु गुरु बनाये बिना तो कभी मोक्ष उपलब्ध नहीं हो सकता है। अर्थात् गुरु बनना जरूरी नहीं, गुरु बनाना जरूरी है। आचार्य भगवन्त के द्वारा जीवन-निर्माण की प्रेरणा चलती है। सूर्यनगरी में चातुर्मास था तो भगवन्त ने एक सूत्र दिया कि अगर आप अनशन तप नहीं कर सकते तो कषाय उपशमन करो। मासक्षपण की जगह एक माह तक क्रोध का त्याग कर दीजिए। उस प्रेरणा से सैकड़ों ने कषाय उपशम के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

आचार्य भगवन्त के जीवन के मुखारविन्द से संत भले ही सीमित बन पाये, सतियां बहुत बनीं और बहुत लोगों को आपने शान्त बनाया। आचार्य भगवन्त को देखने के साथ भक्त को लगता है कि मैं भी शान्त बन रहा हूँ। ऐसे शान्तमूर्ति के दर्शन करने से भीतर में भावना जगती है कि हम भी इन गुणों को अपने जीवन में बसायें। आचार्य भगवन्त इंसान रूपी मशीन के इंजीनियर हैं। मानव को कैसे किस तरह सुधारना यह कला गुरुदेव को आती है। इसलिये आप इंसानों के इंजीनियर हैं। आप खोट पर सटीक चोट करते हैं।

साधना क्या है? साधना शिव है। जो पूर्ण रूप से अपने आपमें अचल हो गया, उसका साध्य सत्य है। साधना के अन्दर एक ही स्थान है सत्य को उपलब्ध होना। साधुता, सुन्दरता, सत्य, साध्य आपके जीवन में सभी का समावेश है ।

आज अभिव्यक्ति से अधिक अनुभूति का दिवस है, गुण की अनुभूति एक क्षण भी हो जाए तो जीवन सार्थक है। भगवन्त **चार बल से बलवान हैं:-** आत्मबल, आस्थाबल, आगमबल और आचारबल।

आचार्य भगवन्त का **आत्मबल** इतना मजबूत एवं विशिष्ट है कि विषम परिस्थिति में भी कमजोर नहीं होता । आपका विल पावर हमने देखा है। सिंधनूर में ऊपर से नीचे आये नस में दर्द हो गया। ऊपर से नीचे उतरना बैठना सभी कठिन था, किन्तु आत्मबल इतना मजबूत था कि निर्णय लिया परसों विहार करना है और उस दिन शाम के

समय 4-5 किलोमीटर का विहार किया। नस में दर्द है, फिर भी बिना रुके 5 किलोमीटर विहार किया। कइयों ने आचार्य भगवन्त से निवेदन किया अभी आपके साता नहीं है, किन्तु आचार्य भगवन्त का आत्मबल इतना मजबूत था कि चलना है तो फिर क्या सोचना। गुरुदेव की अनन्त कृपा है सब अच्छा होगा। जिनके पास आत्मबल होता है, उन्हीं का इतिहास लिखा जाता है। इतिहास तिनकों का नहीं तीरों का, कांच का नहीं हीरों का लिखा जाता है । आत्मबल से ही आधा जग जीत लिया जाता है ।

आपका दूसरा बल है-**आस्थाबल।** आप अपने गुरु के प्रति अटूट आस्था रखते हैं, आस्था से ही रास्ता निष्कंटक होता है। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के लिये आप हमेशा 'भगवन्त' संबोधन का ही प्रयोग करते हैं। आस्थाबल से आपके जीवन में कई चमत्कार घटित हए, जिससे कई रुग्ण व्यक्ति आरोग्य को प्राप्त हुए। आपकी आस्था तीर्थ और तीर्थंकरों के प्रति है। तीर्थ कायम रहना चाहिये। तीर्थंकर की वाणी जन-जन तक पहुँचनी चाहिये। आपका जप-तप प्रभावशाली है।

आपका तीसरा बल **आगमबल** है- आपके प्रवचनों में आगम का पुट जरूर रहता है। सरल व सटीक भाषा में भी आप सहजता से आगम के रहस्य को समझा देते हैं। आप अपने जीवन-व्यवहार में और संघ-सम्प्रदाय में आगम का बल रखते हैं। कहा है- "**आगमबलिया समणा**" श्रमणों के पास आगम का बल होता है। उनके पास धन,सत्ता,पद का नहीं आगम का श्रेष्ठ बल होता है।

आचार्य भगवन्त का चौथा बल है-**आचारबल।** आचार आपके दिल की धड़कन तथा श्रुत आपके नयनों की ज्योति है। ज्ञान और क्रिया का आपमें संगम है। युग के अनुसार व्यक्ति अपने सिद्धान्तों को बदल देता है, पर आचार्य देव का फरमाना है कि "सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं।" इस कारण हमारे आराध्य देव हर रूप से बलवान हैं, आस्थावान हैं, ज्ञानवान हैं, क्रियावान हैं। आज के दिन गुरु भगवन्त ने संयम ग्रहण किया था। संयम लेना इति श्री नहीं, संयम को पालना मुक्ति श्री का वरण करना है। आप संयम में रहते भाषा को उच्च बनाए हुए हैं। आप किसी छोटे से संत-सती या बालक से भी वार्ता करेंगे तो उससे 'जी,'भाई' का संबोधन लगाकर बोलते हैं। भाषा उच्च होगी तो भाव सर्वोच्च होंगे। क्योंकि जैसे भाव होते हैं वैसी भाषा होती है। समय तो सीमित है और सद्गुण असीमित हैं। भाव और भाषा के पुंज को क्या अर्घ्य चढाऊँ मेरी तो भावना है "क्या दें उपहार , प्रणत है हृद्तंत्री के तार, प्रभो निरामय रहो वर्ष हजार।"

आपके श्री चरणों में रहकर संघ और साधक निरन्तर उन्नति के शिखर पर पहुँचते रहें। आपका वरद हस्त हमारे में शक्ति का संचार करे। यही शुभ भाव भाते हैं और आपकी

साधना उज्ज्वल,उन्नत, उच्चतम बनती जाए, यही हम सबकी शुभ आशंषा है। अंत में श्रद्धेय प्रमोद मुनि जी म.सा. द्वारा रचित कड़ी कहकर अपने भावों को यहीं विराम देता हूँ:-

तव मुक्ति झटपट ही, अन्तर मन बोल रहा ।
तप-संयम कर्मों के बंधन को खोल रहा ।।
मोती सम चमक रहे, मूरत भी अति मोहनी,
गांधीवत् आजादी इस सृष्टि से करनी
वरना है लक्ष्य मुझे रग-रग में दौड़ रहा....

मानवता श्रुत श्रद्धा,संयम में वीर्य लगा
दुर्लभ तन बोल सभी कायरता दूर भगा
पुरुषार्थ भी देखो ना कितना अनमोल रहा ।

दीक्षा की अर्धशती,अनुपम है विनय-भक्ति
योगों को वश में कर शुभ में ही लगी शक्ति
संघनायक गुरु हीरा,हस्ती पट शोभ रहा । ■

Elders : A need of our Family

Miss Sneha Sukhlecha

Elders are the backbone of a family. They have the ability to keep the whole family under the same roof. Their love and affection is very important for the upbringing of their children and grandchildren. They are like salt, whose presence is not felt but its absence makes the food tasteless. Elders teach us how to face challenges in the world, with their experience. They are the roots of the family tree who extract love and affection from the soil of life.

After father being in the office, mother gets busy in the kitchen, child is left with his/her grand parents to play with or to talk with. Everybody wants to be small again when they grow up, so the elders play with their children to be like a kid. The magic moment is when people get retired from their jobs and stay at home to play with their children. They are our first teachers. They say pen is mightier than a sword but the one who makes us hold a pen is our elders.

We should never disobey our elders because every word said by them is for our sake and prosperity and to achieve higher goals in our lives. *-D/o. Ajeet Sukhlecha, 'The Oasis', 155, Sainik Colony, Nagaur (Raj.)*

संगोष्ठी-आलेख

जैनदर्शन में जीवन-प्रबन्धन के तत्त्व*

प्रो. सागरमल जैन

जीवन-प्रबन्धन दो शब्दों का एक सांयोगिक शब्द है। प्रबन्धन शब्द का सामान्य अर्थ सही ढ़ंग से व्यवस्था करना है। प्राचीन जैन दर्शन में प्रबन्धन के लिए तंत्र शब्द का भी प्रयोग होता है। वस्तुतः जीवन-तंत्र को सम्यक् रूप से समझे बिना, जीवन का सम्यक् प्रबन्धन सम्भव नहीं है। मानव जीवन एक आध्यात्मिक एवं मनोदैहिक संरचना है। हमारे जीवन के तीन पक्ष हैं- आत्मा, मन और शरीर। प्रबन्धन शब्द तंत्र की अपेक्षा भी एक व्यापक अर्थ रखता है, उसमें यथार्थ और आदर्श दोनों ही निहित हैं। जीवन व्यवस्था कैसी है, और उसे कैसा होना चाहिए- ये दोनों ही बातें प्रबन्धन शब्द में निहित हैं। वह यथार्थ और आदर्श का एक सम्ममिश्रण है। जीवन क्या है और जीवन को कैसे जीना चाहिए- ये दोनों ही बातें जीवन प्रबन्धन में हैं। जब इसे हम जैन आचार्यों की दृष्टि से देखते हैं, तो वह जैन जीवन-प्रबन्धन की विधि बन जाती है। जीवन का प्रबन्धन वस्तुतः बहुकोणीय होता है, क्योंकि जीवन स्वयं बहुआयामी है। जीवन को जीने के जो विविध आयाम हैं, उनके आधार पर जीवन-प्रबन्धन को हम विविध भागों में विभाजित कर सकते हैं।

वस्तुतः बाल्यकाल से ही जीवन-प्रबन्धन का प्रयास प्रारम्भ हो जाता है। बालक जब युवावस्था की ओर बढ़ने लगता है, तो उसे शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है। बालक की शिक्षा कैसी हो और उसे किस प्रकार दी जाए यह जीवन-प्रबन्धन का प्राथमिक तत्त्व है। जैन दर्शन की मान्यता है कि हमें जो जीवन मिला है, वह मात्र जीवन-जीने के लिए नहीं मिला है, अपितु किसी लक्ष्य या आदर्श की पूर्ति के लिए मिला है। जीवन तो पेड़-पौधे और अन्य प्राणी भी जीते हैं, लेकिन उनका जीवन लक्ष्य-विहीन होता है। जीवन में लक्ष्य का निर्धारण कर उसे पाने का प्रयत्न ही सम्यक् जीवन शैली का परिचायक हो सकता है। जीवन क्या है, कैसे उसे जिया जाना है, यह बताना ही शिक्षा का मुख्य प्रयोजन है। अतः शिक्षा विधि ऐसी होनी चाहिए, जो जीवन के यथार्थ और आदर्श का समन्वय करते हुए व्यक्ति को उसके जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ने में सहायक हो सके।

जीवन का एक लक्ष्य दुःखों से मुक्ति है, किन्तु दुःख विविध प्रकार के हैं, वे दैहिक भी हैं और मानसिक भी हैं। दैहिक दुःखों का निराकरण सम्यक् ढ़ंग से जीवन जीने के द्वारा

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

सम्भव हो सकता है, किन्तु मानसिक दुःखों से मुक्ति के लिए एक सम्यक् शिक्षण पद्धति आवश्यक होती है। शिक्षा का लक्ष्य मात्र जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है, यह सही है कि जीवन जीने के लिए जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है। जैन दर्शन की मान्यता है कि आहार, निद्रा, भय और मैथुन की प्रवृत्ति सामान्य रूप से सभी प्राणियों में पाई जाती है, किन्तु मनुष्य मात्र वासनाओं का पिण्ड नहीं है, उसमें विवेक का तत्त्व भी है। अतः वह यह विचार कर सकता है कि उसे क्या खाना है, कब खाना है और कैसे खाना है, जो उसके शरीर, स्वास्थ्य और मनोभाव का सम्यक् बनाए रख सके। यह सत्य है कि जीवन में आहार आवश्यक है, किन्तु आहार कैसा हो, कब खाया जाए और कितनी मात्रा में खाया जाए, यह सब निर्णय तो मनुष्य को करना होता है। इसी प्रकार जीवन की अन्य आवश्यकताएँ जैसे निद्रा, भय की स्थिति में सुरक्षा के प्रयत्न, कामवासना की संतुष्टि आदि भी जीवन-जीने की विद्या से अनिवार्य रूप से जुड़े हैं, फिर भी उनकी एक विवेकशील पद्धति हो सकती है। उसे ही जीवन-प्रबन्धन के नाम से जाना जाता है। प्रबन्धन मात्र एक व्यवस्था नहीं है, अपितु वह आदर्शोन्मुख एक जीवन शैली है। इन आदर्शों का बोध शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है। अतः सम्यक् जीवन-प्रबन्धन के लिए सम्यक् शिक्षा-व्यवस्था का होना आवश्यक है। शिक्षा मात्र यथार्थ की जानकारी नहीं है, अपितु वह यह भी बताती है कि जीवन का आदर्श क्या है, और उसे कैसे जिया जाता है।

प्राणीय जीवन का प्रारम्भ भी काल विशेष में होता है, और उसका अन्त भी किसी काल विशेष में होता है। जिन्हें हम जन्म और मृत्यु के नाम से जानते हैं। प्रबन्धन की दृष्टि से न तो जन्म हमारे हाथ में है और न मृत्यु ही हमारे हाथ में है। किसी उर्दू शायर ने ठीक ही कहा है-

लाइ हयात आ गये, कजा ले चली चले-चले।
न अपनी खुशी आए, न अपनी खुशी गये।।

जन्म और मृत्यु हमारे हाथ में नहीं हैं, वे कब और किस निमित्त से कहाँ हों और कैसे हों, इसकी कोई व्यवस्था सम्भव नहीं है। फिर भी जन्म और मृत्यु के दो छोरों के बीच जीवनधारा सम्यक् रूप से बहती रहती है। यह जीवन-धारा का बहना ही मनुष्य के अधिकार क्षेत्र में है कि वह जीवन को कैसे जीता है। इस जीवनधारा का सम्यक् नियोजन ही जीवन प्रबन्धन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जो समय प्रबन्धन के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है।

यह सही है कि न तो भूतकाल हमारे अधिकार क्षेत्र में होता है और न भविष्य ही। जीवन तो हमेशा वर्तमान में ही जिया जाता है। इसलिए भारतीय चिन्तकों की यह मान्यता रही है कि समय का प्रबन्धन केवल और केवल मात्र वर्तमान में ही सम्भव है। सदैव वर्तमान

के क्रिया-कलापों को सार्थक बनाने का प्रयत्न ही सम्यक् जीवन-प्रबन्धन कहा जा सकता है। भूत गुजर चुका है, वह अब हमारे हाथ में नहीं है, भविष्य कैसा होगा यह भी पूर्णतया हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। भूतकाल का रोना रोना और भविष्य के सुनहले सपने संजोना यह मनुष्य के लिए उचित नहीं है। उसका सारा प्रयत्न और पुरुषार्थ इसी में है कि उसे जो अवसर उपलब्ध हुआ है उसका सम्यक् ढ़ंग से उपयोग करे, यही समय-प्रबन्धन है।

मनुष्य जो भी करता है, वह सब उसके मन, वाणी और शरीर के माध्यम से ही सम्भव होता है। हमारा समग्र आचार और व्यवहार शरीर के माध्यम से ही सम्भव होता है। अतः शरीर को सुनियोजित ढ़ंग से सही दिशा में नियोजित करना ही शरीर प्रबन्धन है। इसमें दो तत्त्व प्रमुख होते हैं, एक स्वास्थ्य और दूसरा शारीरिक अंगों का संरक्षण। इन्हें हम पोषण और सुरक्षा के प्रयत्न कह सकते हैं। शरीर का पोषण आवश्यक है, क्योंकि यदि शरीर और उसके अंगों का सम्यक् ढ़ंग से पोषण नहीं होगा, तो शरीर अस्वस्थ हो जाएगा और अस्वस्थ शरीर के माध्यम से जीवन को जिस प्रकार जिया जाना चाहिए हम नहीं जी पायेंगे। इसके लिए हमें पूरी तरह से स्वास्थ्य-विज्ञान और आहार-विज्ञान के नियमों को समझकर, उनका पालन करना होगा। वे सारे तत्त्व जो शारीरिक रुग्णता और मानसिक तनाव को जन्म देते हैं, उनका वर्जन करना होगा। हमें सम्यक् आहार के माध्यम से शरीर का पोषण करना होगा, तब ही हम शरीर को स्वस्थ रख पायेंगे। शरीर के सम्बन्ध में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारी जीवनयापन शैली ऐसी हो जिसमें शरीर की सुरक्षा की भी सम्यक् व्यवस्था हो। अति साहस और अति भोग दोनों ही शारीरिक सुरक्षा में बाधक होते हैं। वासना के अधीन अधिक भोग और शरीर की क्षमता का ध्यान नहीं रखते हुए कार्य करना दोनों ही शरीर प्रबन्धन में बाधक होते हैं। शरीर जीवन जीने का एक सम्यक् साधन है, उसका उपयोग भी सम्यक् तरीके से होना चाहिए, शरीर प्रबन्धन हमें यही सिखाता है। यहाँ भी वासना और विवेक का सम्यक् समायोजन आवश्यक होता है, अतः व्यक्ति को यह सीखना भी आवश्यक होता है कि वह अपने शरीर और शारीरिक शक्तियों का विनियोग सम्यक् प्रकार से करे।

मनुष्य एक मनोदैहिक रचना है, अतः उसे दैहिक और मानसिक दोनों आधारों पर सम्यक् रूप से जीवन जीना होगा। जीवन-प्रबन्धन का उद्देश्य यह भी है कि वह न केवल स्वस्थ शरीर के माध्यम से जी सके, अपितु स्वस्थ मन से भी जी सके। आज जो वैश्विक समस्याएँ हैं, मानसिक तनाव उनका एक प्रमुख कारण है, क्योंकि सम्यक् जीवन के लिए स्वस्थ मानसिकता आवश्यक है। यदि व्यक्ति मानसिक विकारों और तद्जन्य तनावों का सम्यक् प्रबन्धन करने में सफल नहीं होता है, तो भी वह अपने जीवन को सही ढ़ंग से नहीं जी पाता है। मानसिक विकार और उनसे उत्पन्न होने वाले तनाव क्यों, कब और कैसी

परिस्थिति में उत्पन्न होते हैं, यह समझना भी आवश्यक है और उनसे मुक्त रहना भी आवश्यक है। यह सत्य है कि तनाव के कारण आन्तरिक और बाह्य दोनों हो सकते हैं, फिर भी तनाव न केवल एक मनोदैहिक संरचना है, अपितु वह एक मानसिक सत्य भी है। तनावों से मुक्त होकर समता और शांति पूर्ण जीवन कैसे जिया जाए यह भी जीवन के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः जीवन में मानसिक प्रबन्धन भी जीवन-प्रबन्धन का एक महत्त्वपूर्ण आधार है।

ऊपर हमने जीवन-प्रबन्धन के जो उपाय बताए उन सबका सम्बन्ध मूलतः व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन से है, किन्तु कुछ समाजगत तथ्य भी हैं, जो हमारे जीवन प्रबन्धन में साधक या बाधक होते हैं। इनमें वाणी प्रबन्धन, पर्यावरण प्रबन्धन, अर्थ प्रबन्धन, समाज और धार्मिक व्यवहार प्रबन्धन प्रमुख हैं। यह सत्य है कि ये हमारे परिवेश से जुड़ हुए हैं, और समाज के अन्य घटकों से हमारे सम्बन्ध को बनाते हैं।

संसार में जितने भी प्राणी हैं, उन सबमें मनुष्य की यह विशेषता है कि उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा या वाणी भी मिली हुई है। वाणी का सम्यक् नियोजन न होने पर भी जीवन में अनेक विसंगतियाँ आ जाती हैं। वाणी एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। किन्तु यह अभिव्यक्ति कहाँ, कब और कैसे हो, इसका सम्यक् रूप से ध्यान रखना आवश्यक होता है। जहाँ अपनी वाणी के माध्यम से हम अपने जीवन से समाज में मधुर संबंधों का स्थापन कर सकते हैं, वहीं वाणी ही एक ऐसा माध्यम है, जो हमारे जीवन को स्वर्ग या नरक बना सकती है। व्यक्ति के जीवन में अभिव्यक्ति आवश्यक होती है। यह अभिव्यक्ति हम शरीर और वाणी के माध्यम से ही प्रस्तुत करते हैं, किन्तु कहाँ, कब और किन परिस्थितियों में किस प्रकार से अभिव्यक्ति करना, यह बोध होना आवश्यक है, एक गलत अभिव्यक्ति जहाँ व्यक्ति और समाज में भी विसंवाद उत्पन्न कर देती है, वहीं एक सम्यक् अभिव्यक्ति जीवन में सुसंवाद उत्पन्न कर जीवन को सरस बना देती है। व्यक्ति का परिवार और समाज से जुड़ना और टूटना दोनों ही उसकी अभिव्यक्ति पर निर्भर करते हैं। अतः जीवन में वाणी का अथवा अभिव्यक्ति का सम्यक् प्रस्तुतीकरण कैसे हो, इसका प्रशिक्षण भी आवश्यक है। जीवन-प्रबन्धन के अन्तर्गत हमें यह जानना होगा कि वाणी का प्रयोग अथवा अपनी दैहिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग हम कैसे, कब, कहाँ करें ताकि जीवन में समरसता बनी रहे। यहाँ विशेष रूप से समझने योग्य तथ्य यह है कि अभिव्यक्ति के सम्यक् प्रस्तुतीकरण के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन में सुसंवाद और समरसता को प्राप्त कर सकता है। वाणी और अभिव्यक्ति के दुरुपयोग के क्या परिणांम होते हैं, इसे हम महाभारत से सम्यक् प्रकार से जान सकते हैं।

अतः जीवन-प्रबन्धन में वाणी का सम्यक् प्रबन्धन भी आवश्यक है।

आज मनुष्य के लिए पर्यावरण-प्रबन्धन की भी महती आवश्यकता है, क्योंकि प्रदूषित पर्यावरण से न केवल मनुष्य जीवन को खतरा है, अपितु उसके साथ सम्पूर्ण प्राणीय सृष्टि का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। यदि जल और वायु प्रदूषित हो जाते हैं, तो सम्पूर्ण प्राणीय जीवन ही समाप्त हो जाएगा। न केवल इतना ही, अपितु वनस्पति जगत् ही समाप्त हो जाएगा और वनस्पति जगत् के अभाव में प्राणीय जगत् भी जीवित नहीं रहेगा और प्राणी जगत् के अभाव में जगत् की जड़ वस्तुएँ चाहे रहें, उनके उपयोगकर्ता के अभाव में उनका कोई मूल्य ही नहीं रह जाएगा। इस प्रकार पर्यावरण-प्रबन्धन का तत्त्व भी जीवन-प्रबन्धन के साथ जुड़ा हुआ है।

चाहे जीवन-प्रबन्धन शब्द आधुनिक लगता हो, किन्तु वह तो एक सम्यक् जीवन शैली का विकास है। वह हमें यही सिखाता है कि वैयक्तिक और सामाजिक जीवन कैसे जीना चाहिए? वह हमारे यथार्थ जीवन को एक आदर्श जीवन बनाने की कला है।

वस्तुतः व्यक्ति एकाकी प्राणी नहीं है। मनुष्य की एक परिभाषा उसे सामाजिक प्राणी के रूप में भी देखती है (Man is a social animal)। यदि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो उसे समाज में कैसा जीवन जीना है, यह भी जानना होगा। साथ ही उसे समाज में पारस्परिक व्यवहार का सम्यक् तरीका भी सीखना होगा। इसे ही जैन दर्शन में सम्यक् चारित्र के रूप में जाना जाता है। समाज एक बृहद् इकाई है, यद्यपि उस इकाई के केन्द्र में मनुष्य है, किन्तु दूसरी ओर एक सभ्य मनुष्य समाज की ही देन है। उसने पारस्परिक व्यवहार का ढंग या दूसरे शब्दों में समाज में जीवन जीने का ढंग समाज से सीखा है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर आधारित हैं, वे परस्पर सापेक्ष हैं। व्यक्ति के बिना समाज और समाज के बिना व्यक्ति का कोई अर्थ नहीं है। सामाजिक जीवन शैली मानव समाज की एक विशेषता है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि समाज मात्र व्यक्तियों का समूह या भीड़ नहीं है, उसका अपना एक तंत्र या व्यवस्था है। यह सामाजिक-व्यवस्था भी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन मात्र है। स्वहित-साधन या स्वार्थ-पूर्ति यह सभ्य समाज में मनुष्य जीवन का लक्ष्य नहीं है। समाज स्वार्थ या स्वहित-साधन के मूल्य पर खड़ा नहीं होता है, उसका आधार त्याग और समर्पण के मूल्य हैं। स्वार्थी व्यक्तियों का समूह समाज नहीं होता है, दूसरे शब्दों में चोरों, डाकुओं या लुटेरों का समूह समाज नहीं होता है। समाज के निर्माण हेतु स्वहित का त्याग या स्वार्थ का त्याग आवश्यक होता है। उसका आधार सहयोग एवं मैत्री की भावना है। ये आदर्श जीवन मूल्य भी आज हमें शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होते हैं, किन्तु यह शिक्षा किसी स्कूल एवं कालेज में नहीं होती है, अपितु घर-परिवार और समाज में ही होती है। स्वस्थ मनुष्य एवं स्वस्थ समाज के लिए इन जीवन मूल्यों का प्रशिक्षण

आवश्यक है, किन्तु इसकी प्राथमिक पाठशाला घर-परिवार, समाज और धर्म ही है। सद् संस्कारों का वपन जीवन-प्रबन्धन की शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। वस्तुतः समाज-प्रबन्धन समाज का प्रबन्धन नहीं है, वह अपनी जीवन शैली का प्रबन्धन है। वह समाज के दूसरे सदस्यों के प्रति हमारी सम्यक् जीवन शैली या सम्यक् व्यवहार का ढंग सिखाता है। आज सामान्य जन की एक मान्यता यह है कि समाज सुधार से व्यक्ति का सुधार होगा, किन्तु यह एक गलत अवधारणा है। समाज का प्रमुख घटक व्यक्ति है, जब तक वैयक्तिक स्तर पर सुधार के प्रयत्न नहीं होंगे- समाज सुधार सम्भव नहीं है। भारतीय चिन्तन में जो चार पुरुषार्थ माने गये हैं उनमें से तीन- धर्म, अर्थ और काम समाजाधारित हैं।

धर्म-व्यवस्था या धर्मतन्त्र का मुख्य कार्य तो सम्यक् सामाजिक जीवन-शैली का विकास करना ही है। एक सभ्य एवं संस्कृत समाज का निर्माण त्याग एवं संयम के जीवन मूल्यों को जीवन व्यवहार में स्थान देने से ही सम्भव है। धर्म, समाज या परिवार के दूसरे सदस्यों के हित साधन हेतु त्याग, समर्पण एवं सेवा के जीवन मूल्यों को आत्मसात् करना होगा। धर्म एक नियामक जीवन मूल्य है, दूसरे शब्दों में धर्म अर्थ, काम और पारस्परिक व्यवहार का नियामक है। इसलिए कहा जाता है, कि 'आचारो प्रथमः धर्मः'। धर्म केवल जानने या मानने की वस्तु नहीं है, वह सम्यक् ढंग से जीवन जीने का एक तरीका भी है।

अर्थ और काम जीवन के आवश्यक अंग हैं, गृहस्थ को उनकी संपूर्ति भी करनी होती है, किन्तु उनका संयमन आवश्यक है। क्योंकि अर्थ और काम जीवन के साध्य नहीं हैं, साधन हैं। साधन आवश्यक होते हैं, किन्तु उनकी मूल्यवत्ता साध्य को पाने में निहित होती है। साधना को ही साध्य बना लेना या मान लेना ही जीवन की सबसे भयंकर भूल है, धर्म में इसे ही मिथ्यात्व कहा गया है। साधन को साध्य की प्राप्ति के लिए अपनाया जाता है, किन्तु हमारी रागात्मकता या आसक्ति उसे ही साध्य मान लेती है और ऐसी स्थिति में मूल लक्ष्य कहीं दृष्टि से ओझल हो जाता है। अर्थ और काम (रोटी, कपड़ा, मकान आदि) मूलतः आत्म-शान्ति के हेतु हैं, किन्तु जब व्यक्ति इन साधनों को ही साध्य बना लेता है, तो वह अपने मूल लक्ष्य आत्मतोष या आत्मशान्ति से वंचित हो जाता है। साधनों को अपनाना आवश्यक है, किन्तु ध्यान रहे कि ये साधन कहीं साध्य न बन जायें, अन्यथा तृष्णाजन्य दुःख के महासागर से पार जाना कठिन होगा। जीवन-प्रबन्धन का मूल लक्ष्य भी एक ऐसी जीवन शैली का विकास करना है, जो मानव प्रजाति को सम्यक् सुख (आनन्द) और शांति प्रदान कर सके और उसका सम्यक् दिशा में आध्यात्मिक विकास हो सके तथा वह शाश्वत जीवन-मूल्य आत्मशांति को प्राप्त हो सके।

-संस्थापक निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.)

संगोष्ठी-आलेख

आगमों में उल्लिखित प्रमुख श्रावकों की जीवन शैली *

श्री प्रकाशचन्द जैन

जैन आगमों के अनुसार प्रमुख श्रावकों की नामावलि इस प्रकार हैः-

1. **उपासकदशांग सूत्र में-** आनन्द, कामदेव आदि 10 प्रमुख श्रावक।
2. **भगवतीसूत्र-** तुंगियापुरी के श्रावक, मद्दुक श्रावक, शंख-पुष्कली, चेटक, वरूणनाग-नथुआ।
3. **ज्ञाताधर्मकथा-** अरणक, सुबुद्धिप्रधान।
4. **अन्तगडदशा सूत्र-** सुदर्शन श्रावक।
5. **रायप्पसेणीय सूत्र-** चित्त मंत्री।
6. **सुख-विपाक-** सुमुख गाथापति।
7. **उत्तराध्ययन सूत्र-** पालित श्रावक।

इन श्रावकों ने ज्योंहि भगवान का उपदेश सुना, उस पर श्रद्धा, प्रतीति रुचि हुई और 12 व्रत स्वीकार कर लिये, जीवन को मर्यादित बना लिया, जिससे उनकी सोच व जीवन प्रणाली में बदलाव आ गया। भगवान महावीर के शासनकाल में होने वाले इन प्रमुख श्रावकों की जीवन शैली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित थीं-

1. जीवन में पुण्यकार्य व धर्माराधना को विशेष महत्त्व

भगवान के सभी स्तर के श्रावक थे। पूणिया जैसा कम आय वाला भी था तो आनन्द, कामदेव जैसे धनाढ्य भी थे। वे धन को केवल मात्र जीवन निर्वाह का साधन मात्र मानते थे, साध्य नहीं। वे धन का सदुपयोग दीन-दुःखी, जरूरतमंदों की सेवा में करते थे और उनके घर के दरवाजे हमेशा सहयोग के लिए खुले रहते थे। भूखों को भोजन, प्यासों को पानी, वस्त्र, अन्न, औषध, स्थान आदि की व्यवस्था उपलब्ध कराने में अपने धन का बहुत बड़ा हिस्सा व्यय करते थे। धन बढ़ाने या इकट्ठा करने में उनकी कोई रुचि नहीं रहती थी। पुण्य कार्यों में भी वे तब तक ही रुचि लेते थे जब तक वे व्यापार-व्यवसाय से जुड़े रहते थे।

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

ज्योंहि उनके पुत्रादि व्यापार संभालने के योग्य हो जाते, वे व्यापार व सम्बन्धित पुण्यकार्यों की जिम्मेदारी उन्हें सौंप कर पूरा जीवन धर्मसाधना में व्यतीत करते थे। आनन्दादि श्रावकों ने तो साढ़े पाँच वर्ष तक पौषधशाला में रहकर गोचरी आदि लाकर घर-परिवार से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर प्रतिमाओं की आराधना में अपना समय लगाया। समाज सेवा और सहयोग आदि के कार्यों से भी संवर-निर्जरा की साधना श्रेष्ठ होती है, भगवान की इस वाणी को आत्मसात् करने में वे सन्नद्ध रहे। अन्त में एक माह की संलेखना, संथारापूर्वक देह का त्याग किया।

वर्तमान में श्रावक समाज धन कमाने की दौड़ में दौड़ रहा है, धनार्जन के साथ वह पुण्यकार्यों में भी आगे है, लेकिन जीवन के अन्तिम समय तक इसी में लगा रहता है। निवृत्ति पूर्ण जीवन वाले श्रावक नहींवत् हैं, इसमें आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

2.स्व स्थान में धर्माराधना का लक्ष्य

श्रावकों के जीवन चरित्र से यह स्पष्ट होता है कि वे अपने गांव में या गांव के बाहर भगवान या सन्त-सतीमण्डल के पधारने पर उनके दर्शन-वन्दन, प्रवचन हेतु जाते थे। कहीं दूसरे गांव में भगवान विराज रहे हैं और उनके दर्शनार्थ कोई श्रावक गया, ऐसा वर्णन देखने को नहीं मिलता। उनके जीवन में धर्माराधना का महत्त्व था। वह आराधना सन्तों की अनुपस्थिति में भी हो सकती है और उपस्थिति में भी। साधनों की कमी बाहर जाने में रुकावट नहीं थी। व्यापारादि के निमित्त वे दूर-दूर तक जाते ही थे। धर्माराधना में इसकी आवश्यकता महसूस नहीं करते थे।

आज आवागमन की प्रवृत्ति बहुत बढ़ गई है। सन्तसेवा में आकर यदि संवर-निर्जरा की साधना में अपना समय लगायें तब तो आवागमन की प्रवृत्ति भी जीवन को आगे बढ़ाने में सहयोगी हो सकती है, परन्तु आज इस प्रवृत्ति ने पिकनिक जैसा रूप प्राप्त कर लिया है। व्याख्यान के अलावा सन्तों की सेवा में बैठकर ज्ञानाराधना की प्रवृत्ति बहुत कम है। सुन्दर आवास व भोजन व्यवस्था का आकर्षण और दर्शनीय स्थलों व बाजारों में खरीदी के लोभ को संवरण नहीं हो पाता। व्यवस्था में जुटे कार्यकर्त्ताओं के लिए तो चातुर्मास बिना विशेष धर्माराधना के ही पूरा हो जाता है। अतः इस प्रवृत्ति में सुधार अपेक्षित है।

गाँव में रहकर शंख-पुष्कली आदि श्रावकों की तरह सामूहिक दया आदि की आराधना की जा सकती है।

3. व्यापार में प्रामाणिकता व विवेक, कर्मादान के त्यागी

गृहस्थ जीवन चलाने के लिए धनार्जन अनिवार्य है। अधिकांश श्रावक व्यापारी थे।

व्यापार का लक्ष्य केवल धनार्जन नहीं होता था, वे पाप से बचने का विशेष विवेक रखते थे। जिन कार्यों में त्रस जीवों की बहुतायत से हिंसा होती है ऐसे 15 कर्मादान के वे त्यागी होते थे। खेती व घड़े आदि बनाने का कार्य अधिक हिंसात्मक है, परन्तु वे उनके पैतृक व्यवसाय थे, जिन्हें एक साथ छोड़ना कठिन होता है। वे उसमें वृद्धि नहीं करते थे तथा इस बात का पूरा विवेक रखते थे कि पाप का सेवन कम से कम हो।

व्यापार चार प्रकार से अधिक होता था- 1. **गणिम**-गिनकर चीजें बेचना, जैसे-नारियल आदि। 2. **धरिम**- तोलकर देना अनाज आदि। 3. **मेय**- मापकर देना तेल आदि। 4. **परिच्छेद्य**- काटकर देना-कपड़ा आदि। व्यापार में प्रामाणिकता के कारण वे राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त करते थे। समाज में उनकी अच्छी पेठ थी।

आज समाज में प्रतिष्ठा का मापदण्ड अधिकांशतः पैसा माना जाता है, श्रावकगण पैसा कमाने की धुन में ऐसे जुट जाते हैं कि वे पैसे के लिए विवेक खो देते हैं। कर्मादान के व्यापार करने की होड़ लग रही है। हिंसा-अहिंसा का कोई विचार नहीं है। थोड़ा सा दान देकर पद-प्रतिष्ठा प्राप्ति का दौर बेतहाशा चल रहा है। इस पर रोक लगनी चाहिए।

4. सीमित आवश्यकता

आनन्दादि श्रावकों की सम्पत्ति का हिसाब लगायें तो आज के बड़े से बड़े पूंजीपति भी उनसे पीछे हैं। इतना धन होते हुए भी वे उसका अपने लिए बहुत कम उपयोग करते थे। संघ, समाज, देश आदि के लिए उदारतापूर्वक खर्च करते थे। सातवें व्रत की मर्यादा से इस बात को समझा जा सकता है। उन्होंने अपने लिए पहनने हेतु केवल दो जोड़ी सूती कपड़े रखे थे। बाकी चीजें भी बहुत सीमित रखते थे।

आज तो लोगों ने अपने व अपने परिवार पर खर्चा इतना बढ़ा लिया है कि जरूरतमंदों को दान आदि के लिए काटकसर करनी पड़ती है। मध्यमवर्गीय श्रावकों में दान की प्रवृत्ति घट रही है। अतः अपनी आवश्यकताओं को घटाना चाहिए।

5. मेढीभूत, स्वावलम्बी व स्वाभिमानी श्रावक

गाँव-नगर और समाज आदि के विवादों में लोग उनकी बात को प्रामाणिक मानते थे। समाज में उनका वही स्थान था जो शरीर में मेरुदण्ड का होता है। सबके काम आते थे। अपना सब कार्य स्वयं करते। नौकरों की सहायता नहीं लेते थे। स्वाभिमानी जीवन जीते थे किसी से दबते नहीं थे। सत्य तथ्य को कहने में बेहिचक थे।

आज समाज में बढ़ती हुई विकृतियों का एक प्रमुख कारण 'मेढीभूत' श्रावकों का अभाव नज़र आ रहा है।

6. प्राकृतिक व आयुर्वेदिक पद्धतियों की अनुपालना

वे शरद ऋतु का उत्तम गाय का घी ही काम में लेते थे, पानी केवल बरसात का ही पीने के काम में लेते थे। वस्त्र- सूती, तेल-शतपाक, सहस्र पाक, दातून-हरी मुलेठी, मस्तक के बाल धोने हेतु- दूधिया आंवला, उबटन में गेहूँ के आटे से पीठी का प्रयोग करते थे। दूध, दही, पंचगव्य आदि का उपयोग करते थे।

7. सुपात्रदान, साधर्मी वात्सल्य एवं अनुकम्पा दान

साधु-साध्वियों को सुपात्रदान की भावना के साथ विपुल अशनपानादि बहराने का स्वयं समय पर घर में उपस्थित रहकर लाभ लेते थे। गाथापति सुमुख ने तो गोचरी बहराकर संसार परीत्त कर लिया। समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए भोजनशाला, चिकित्सालय, वस्त्रादि का वितरण हमेशा चलता था। अपंग, अनाथ, गाय, चींटी, कबूतर आदि के लिए भोजन, चारा, चुग्गा आदि की व्यवस्था करने में सदा आगे रहते थे। 40 हजार-80 हजार तक गायों का पालन उनके अनुकम्पादान का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

आज हमारे श्रावक घर में महंगी कार रख सकते हैं, किन्तु गायें रखने में कई बहाने बनाते हैं।

8. तत्वज्ञ एवं शास्त्रज्ञ श्रावक

जीवाजीवादि तत्त्वों के गहन ज्ञाता थे। प्रतिदिन परस्पर एक साथ बैठकर शास्त्र के गूढ़तम विषयों पर चर्चा करते थे। अन्य मतियों को वाद में परास्त कर निरुत्तर कर देते थे। उनके लिए शास्त्रकारों ने विशारद, कोविद आदि विशेषणों का प्रयोग किया है। व्यापारादि आवश्यक कार्यों के अलावा अथवा समय इधर-उधर नहीं बिताकर स्वाध्याय, ध्यान, चर्चा आदि में लगाते थे। उसी कारण वे शास्त्रों के पारगामी बन सके। आज समाज में तत्त्वज्ञ और शास्त्रों के ज्ञाता श्रावकों की संख्या में वृद्धि हेतु ठोस कदम आवश्यक है।

9. धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण

धर्म के प्रति श्रद्धा उनके रोम-रोम में व्याप्त थी। मारणान्तिक कष्ट आने पर भी वे कभी श्रद्धा से चलायमान नहीं होते थे। धर्मक्रियाओं के प्रति वे विशेष जागरूक रहते थे। प्रतिमाह छः पौषध करते, दोनों समय प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना, स्वाध्याय, ध्यान आदि उनका क्रम था। खाते-पीते पौषध अर्थात् दयाव्रत का सामूहिक आयोजन भी समय-समय किया करते थे।

आगमकालीन श्रावकों की जीवन शैली से ''सादा जीवन-उच्च विचार'' का उद्घोष ध्वनित होता है। आज भी आगम तो हमारे सामने वे ही हैं जो उस समय थे। विषय वस्तु के

आकार में कुछ कमी हो सकती है। उससे अच्छे श्रावक तैयार होने में कोई बाधा नहीं है। आज भी कई अच्छे श्रावक हैं, लेकिन सामने कम दिखते हैं। ऐसे श्रावकों को एक मंच पर लाकर उनके ज्ञान-दर्शन-चारित्र में और विकास किया जाय। महापुरुषों के सान्निध्य में शिविर आयोजित किये जाएँ। सन्त-सतीवर्ग के अध्ययन-अध्यापन में भी उनकी सेवाएँ ली जा सकती हैं। इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु किन्हीं 2-3 सुयोग्य श्रावक-श्राविकाओं पर जिम्मेदारी डाली जा सकती है।

-प्राचार्य, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव (महा.)

गरीब कौन?

श्री जशकरण डागा

एक गरीब का नियम था, रोज जितना मिले, उसे खा लेना। एक दिन उसे एक रुपया ज्यादा मिल गया। उसने उस रुपये को किसी अच्छे काम में खर्च करने की सोची। उसने सोचा किसी गरीब को एक रुपया देकर उसका सहयोग किया जा सकता है।

अब वह सबसे पूछने लगा तुम गरीब हो? तुम गरीब हो?' पर कोई अपने को गरीब न माने। इतने में उसने सुना कि वहाँ का राजा अपने पड़ोसी राजा पर आक्रमण करने वाला है। उस राजा का धन, सम्पत्ति लूटने के लिए। उसने सोचा कि हमारा राजा वास्तव में बहुत गरीब है, इसीलिए वह पड़ोसी राज्य पर कब्जा करने और धन लूटने के लिए चढ़ाई कर रहा है। इससे सैनिकों की जान जाएगी और खून-खराबा होगा। अतः उसने वह रुपया राजा को देना चाहा। इसीलिए वह उस रास्ते पर खड़ा हो गया जहाँ से राजा एवं राजा की सेना गुजरनी थी। जैसे ही राजा अपने सैनिकों के साथ वहाँ से गुजरने लगा, उसी समय उसने वह रुपया राजा को देना चाहा। राजा ने पूछा कि वह रुपया मुझे क्यों दे रहे हो? इस पर उस आदमी ने निर्भय होकर अपनी बात राजा को कह डाली कि मैं यह रुपया गरीब को देना चाहता था। आज आप मिल गए तो दे रहा हूँ, इसे स्वीकार करें।

राजा ने पूछा- मैं गरीब......। वह बोला-मैंने सुना है, आप पड़ोसी राज्य पर हमला करने वाले हैं। इस युद्ध में लोग मरेंगे, शोषण होगा। किसलिए? पैसे के लिए। अतः आप जैसा गरीब मेरी नज़र में कोई भी नहीं है।

यह सुनकर राजा को ज्ञान हो गया और इस प्रकार से एक गरीब के रुपये ने दो राष्ट्रों को भयंकर युद्ध से बचा लिया। **(अनमोल वचन, माह नवम्बर-दिसम्बर 2012 से संकलित)**

-डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक (राज.)

English-Section

SIGNIFICANCE OF THE SIX AVASHYAKAS (ESSENTIALS)

Dr Priyadarshana Jain

THE SIX ESSENTIALS AND JAIN LIFESTYLE

There is only one Avashyaka and that is to know the self and to be the self. The six Avashyakas are elaborations of this one spiritual duty. The Agamas reveal that there are six ways of observing spirituality in our day to day life and are termed as Avashyakas which are as follows:

1. Samayika	:	Equanimity
2. Caturvimsatistava	:	Devotion of the 24 Tirthankaras
3. Vandana	:	Veneration to the holy masters or Gurus
4. Pratikramana	:	Penitential retreat including confession, expiation.
5. Kayotsarga	:	Detachment
6. Pratyakhyana	:	Taking up resolutions, to conquer the desires.

The first essential is to be equanimous in our day to day life in all favourable and unfavourable circumstances. It is also understood as Samata, Samabhava or Sthitaprajna bhava, Samayika. It is called as 'Saavadya Yogavirati' i.e. giving up the 18 fold sins. To pursue one's spiritual quest, it is important that one is calm and stress free. One cannot see one's face in troubled waters, but if the water is still one can see one's reflection in it. So also the troubled and flickering mind is not conducive for spiritual progress, hence at the very outset the aspirant vows to be equanimous. This vow of equanimity is taken up as a ritual through Pratijna Sutra, but one has to be careful to apply it in one's daily life, only then he can work towards his goal of inner peace and contentment. If one is disturbed, agitated, confused one cannot concentrate on the spiritual personality of Godhood how can then he imbibe the same and rise to Godhood. Hence it is important to first see everybody as oneself and give up all sinful activities and become

focused in life. When he becomes focused in life he realizes his shortcomings and becomes devoted to the enlightened, perfected supreme Tirthankaras and understands that his soul too has the potential of reaching that supreme status, he bows down to them and the spiritual teachers who inspire him to manifest this latent potential. Thus we have the two essentials of devotion and veneration. After this the cleansing process begins by introspection (Alocana), self-criticism (Nindana), confession (Garhana). This is the Avashyaka of penitential retreat (Pratikramana) which includes confession, expiation and resolution. Pratikramana is acknowledging and becoming aware of the sin, offences, passions that we commit in our daily life. By such awareness one is cautioned not to commit the same again. This is the fourth Avashyaka and does not involve any priest; there is direct one to one contact with the Gods and Gurus. During this ritual one repents for the transgressions, renounces evil thoughts or actions and resolves to be careful not to fall prey to the temptations of pleasures and commit the sins all over again. Through this Avashyaka one strives to exercise self-control, forgiveness, contentment and all other noble virtues. Through this Avashyaka one tries to revisit the pure soul that he actually is. 'Prati', means towards and 'kramana' means to go, i.e. to go towards oneself, towards one's inner self is Pratikramana. After he has unburdened himself through this exercise he is ready to concentrate on the spiritual self which is different from the body. This is the fifth Avashyaka of Kayotsarga.To save himself from future sin he undertakes the sixth Avashyaka of Pratyakhyana i.e. resolving to take up small exercises of self-control. Dr Vastupal Parikh remarks that, 'These rituals form part of the Jain lifestyle. The self-discipline and the principles they demonstrate through these rituals nurture an attitude of generosity, respect for others and non-aggressiveness. Collectively, such an attitude contributes to community peace, mutual help and philanthropy'[3] It is these Essentials and the Vrata culture that make the Jain community a peace loving community and its eco-friendly and healthy life-style is definitely catching up with the masses. The varied personality development programs of today offer the above Essentials

in some way or the other and echo the spirit of Jainism. Jaina practices of spirituality, meditation, detachment, positive attitude, forgiveness, respect for others' views at the intellectual level; compassion, vegetarianism, charity at the practical level; periodic fasting, eating less than required, eating before sunset, etc at the physical level- all these spring from the practice of the six essentials.

Thus we see that the six Essentials and Jain life-style are rooted in the three cardinal principles or the three A's of Jainism.

1. Ahimsa - Reverence for all life-forms
2. Anekanta - Respect for other's view points
3. Aparigraha - Minimizing one's possessions and being contented

The significance of the Essentials can be understood through the following illustration: A person who has been diagnosed of tumor is advised by the surgeon to be operated in order to get the tumor removed. For this the date of operation is fixed and the patient is admitted a day earlier, after which the senior surgeons attend to him and give the required prescription to be followed before the operation, then he is attended by the duty nurses and duty doctors who make a note of his B.P, temperature etc. On the fixed day, the patient is operated and the wound is then covered with a bandage. There upon the medicines are prescribed to heal the internal wound, after which the patient is discharged.

In this illustration, the soul in transmigration who is suffering from the tumor of karmas is the patient who is to be cured, admission to the hospital is compared to the Samayika Avashyaka where the soul has to give up all external connections and become focused inwards like a patient in the ICU. The 24 Tirthankaras are like the senior surgeons who are not always present but their orders are executed by the duty doctors i.e. the spiritual guides and Gurus. These are the second and the third Avashyaka of devotion and veneration respectively. The fourth Pratikramana Avashyaka is like the introspection of sins and offences committed in the past by the self due to ignorance and spiritual inertia. The transgressions and the shortcomings are checked and one resolves not to commit the same

again. The fifth Kayotsarga Avashyaka is like covering the wound i.e. being careful not to expose oneself to the same evils and offences. The sixth Avashyaka of resolving not to sin in future enables one to get rid of the wound of karma thoroughly. Only then the soul can be freed from the cycle of transmigration. A remarkable feature in this illustration is that the soul has to heal itself in the light of the knowledge of the omniscients. The inner self has to operate on the external self and purify itself to realize the supreme self.

Avashyaka is said to be of two types; substantial (Dravya) and essential (Bhava). Mere recitation of the lessons without any interest is not actually Avashyaka and does not serve the real purpose of Avashyaka. This kind of exercise is like a body without the soul. On the other hand when the actual ritual is accompanied with the spiritual fervor, then alone one can truly accomplish his spiritual quest of Moksha.

(Continue)

-Asst. Prof & Head I/C, Dept. of Jainology,
University of Madras, Chennai

जिनवाणी पर अभिमत

मेरे अपने जीवन में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका के निरन्तर स्वाध्याय ने एक क्रान्ति ला दी है। स्वाध्याय के रूप में यह पत्रिका एक रामबाण है। समय-समय पर इसमें इतने ज्ञानवान, रुचिपूर्ण लेख आते हैं कि सम्पूर्ण स्वाध्याय के साथ-साथ ज्ञान में बढ़ोतरी हो जाती है। सद्ग्रन्थों की सूचि में 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका एक सम्पूर्ण सद्ग्रन्थ है। पाठक को यदि कोई दूसरा सद्ग्रन्थ नहीं भी मिले तो जिनवाणी पत्रिका को पढ़कर वह सन्तुष्टि का अनुभव कर सकता है, सही मार्ग की ओर बढ़ सकता है। प्रत्येक माह जिनवाणी पत्रिका को देखते ही मेरा मन प्रफुल्लित हो उठता है। मैं इस पत्रिका जिनवाणी का कायल हूँ। जिसने भी रुचिपूर्ण तरीके से तन-मन से इस पत्रिका को पढ़ना जान लिया, उसने समझो स्वाध्याय करना सीख लिया, धर्म की ओर कदम बढ़ा दिया। इस पत्रिका के प्रति मेरे रोम-रोम से धन्यवाद-आभार निकलता है।

-श्री विजय चन्द वैद्य, 12, शान्ति प्रिय नगर, जोधपुर-342008 (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 79)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा-2)

जिज्ञासा- आगति स्थान किसे कहते हैं?

समाधान- आने के स्थानों को आगति स्थान कहते हैं। अर्थात् जिन-जिन स्थानों से जीव किसी पर्यायविशेष, घर विशेष में आता है, उन्हें आगति स्थान कहते हैं।

जिज्ञासा- गमे के थोकड़े में कुल आगति स्थान कितने बतलाये हैं?

समाधान- गमे के थोकड़े में कुल आगति स्थान 321 बतलाये हैं। इनमें भी वैक्रिय के 34 घरों में 101 तथा औदारिक के 10 घरों में 220 आगति स्थान हैं। दूसरे शब्दों में वैक्रिय के घरों में कुल 101 प्रकार के जीव आते हैं तथा औदारिक के घरों में 220 प्रकार के जीव आते हैं।

जिज्ञासा- वैक्रिय के 34 घरों के आगति स्थान कौन-कौन से हैं?

समाधान- वैक्रिय के घरों के आगति स्थान इस प्रकार समझने चाहिए-

घर 1 पहली नरक, उसमें तीन जीव आते हैं- 1. असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, 2. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यञ्च (कर्मभूमिज तिर्यंच), 3. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य (कर्मभूमिज मनुष्य)। इस प्रकार पहली नारकी के घर के आगति स्थान 3 होते हैं।

दूसरी नारकी के सातवीं नारकी तक के 6 घरों के आगति स्थान दो-दो हैं। अर्थात् इन 6 घरों में संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यञ्च आते हैं। असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पहली नरक से आगे नहीं आते हैं।

जिज्ञासा- असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पहली नरक तक ही क्यों जाते हैं?

समाधान- असन्नी तिर्यञ्च बिना मन वाले होने के कारण पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक की आयु का बन्ध नहीं कर पाते हैं। पहली नरक में जीवों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष तथा उत्कृष्ट एक सागरोपम की

होती है। जबकि दूसरी व उससे आगे के नारकी जीवों की स्थिति एक सागरोपम से अधिक ही होती है। पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक की उत्कृष्ट स्थिति पाने वाले असन्नी तिर्यञ्च इसी कारण पहली नरक तक ही आते हैं।

जिज्ञासा– पल्योपम के असंख्यातवें भाग की उत्कृष्ट स्थिति चार गतियों में कितनी-कितनी समझनी चाहिए?

समाधान– भगवती सूत्र शतक 1 उद्देशक 2 में असंज्ञी जीवों के आयुष्य का वर्णन मिलता है। वहाँ उल्लेख है कि असंज्ञी जीव चारों गति का आयुष्य बन्ध करता है। यहाँ असंज्ञी जीव से तात्पर्य असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय ही लेना चाहिए, क्योंकि वही चारों गति में जा सकता है, शेष असंज्ञी नहीं जा सकते।

असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पल्योपम के असंख्यातवें भाग जो उत्कृष्ट स्थिति आयुकर्म की बांधता है, उसमें सबसे कम देव गति की, उससे असंख्यात गुणी अधिक आयु मनुष्य गति की, उससे भी असंख्यात गुणी अधिक आयु तिर्यञ्च गति की तथा उससे भी असंख्यात गुणी अधिक आयु नरक गति की बान्धता है।

इससे यह फलित होता है कि असंज्ञी जीव देव गति के लिए जो पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग आयु बान्धता है वह उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व से अधिक नहीं समझना चाहिए। उससे आगे मनुष्य, तिर्यञ्च तथा नरक गति का जो आयुष्य बान्धता है, वह क्रमशः असंख्यात गुणा-असंख्यात गुणा अधिक समझना चाहिए।

जिज्ञासा– नारकी, देवताओं के आगति स्थानों के सम्बन्ध में क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

समाधान– नारकी, देवताओं के आगति स्थान से सम्बन्धित प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. नारकी, देवताओं के घरों में जो भी जीव आते हैं, वे सभी पर्याप्त जीव ही आते हैं। अर्थात् जिन जीवों के पर्याप्त नाम कर्म का उदय हो तथा जिन्होंने स्व-योग्य सभी पर्याप्तियाँ पूर्ण कर ली हों, ऐसे लब्धि तथा करण दोनों से पर्याप्त बने हुए जीव ही नारकी, देवता, युगलिक, केवली आदि में आते हैं।

2. नारकी, देवता के घरों से निकलकर जो जीव मनुष्य तथा तिर्यञ्च

गति में आते हैं, वे भी अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते। पर्याप्त होते ही हैं।

3. सन्नी तिर्यञ्च, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की यह विशेषता है कि अन्तर्मुहूर्त की आयु वाले भी पर्याप्त होकर नारकी, देवों में आ सकते हैं। किन्तु सन्नी मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वे पहली नरक, भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक कम से कम पृथक्त्व मास की स्थिति वाले तथा दूसरी से सातवीं नारकी में व तीसरे देवलोक से लेकर सार्थ सिद्ध विमान तक में आने के लिए कम से कम पृथक्त्व वर्ष आयु होना अनिवार्य है।

4. नारकी, देवता से निकलकर जो वापस मनुष्य तथा तिर्यञ्च गति में आते हैं, वे भी कम से कम उतनी स्थिति तो पाते ही हैं, जितनी कि नारकी, देवता के उस घर में आने के लिए आवश्यक है। जैसे-तीसरे देवलोक से निकला जीव यदि तिर्यञ्च में आता है तो कम से कम अन्तर्मुहूर्त की आयु पाकर पर्याप्त होकर मरण को प्राप्त हो सकता है। यदि वह तीसरे देवलोक से निकलकर मनुष्य बनता है तो उसे मनुष्य भव में कम से कम पृथक्त्व वर्ष रहना ही होगा। उसके बाद ही वह मरण को प्राप्त हो सकता है।

5. पहली व दूसरी नरक में छहों संहनन वाले सन्नी तिर्यञ्च व सन्नी मनुष्य आ सकते हैं। तीसरी नरक में पाँच संहनन वाले (सेवार्त्त को छोड़कर), चौथी नरक में चार संहनन वाले (सेवार्त्त व कीलिका को छोड़कर), पांचवीं नरक में प्रथम तीन संहनन वाले, छठी नरक में प्रथम दो संहनन वाले तथा सातवीं नरक में एक वज्रऋषभ नाराच संहनन वाले कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य तथा तिर्यञ्च ही आ सकते हैं।

6. भवनपति से लेकर चौथे देवलोक तक छहों संहनन वाले मनुष्य तथा तिर्यञ्च दोनों आ सकते हैं। पाँचवें-छठे देवलोक में प्रथम 5 संहनन वाले तथा सातवें-आठवें देवलोक में प्रथम 4 संहनन वाले मनुष्य-तिर्यञ्च आ सकते हैं।

9 से 12 वें देवलोक में प्रथम तीन संहनन वाले, नव ग्रैवेयक में प्रथम 2 संहनन वाले तथा पाँच अनुत्तर विमान में 1 वज्रऋषभ नाराच संहनन वाले मनुष्य ही आ सकते हैं। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

युवा-स्तम्भ

Jain Monks and Nuns
(Jain Sadhus and Sadhvis)

Sh. Sajjanraj Mehta

When a person renounces the worldly life and all the attachments, and is initiated into monkhood or nunhood, the man is called Sadhu or Muni and the woman is called Sadhvi. They are completely detached from the social and worldly activities and they do not take any part in those activities anymore. Instead, they spend their time for spiritual uplifting of their souls and guiding householders to uplift their souls.

When they get initiated into the life of Sadhus and Sadhvis, they take five major vows and act strictly in accordance with those vows. The five great vows are:

(1) Vow of absolute non-violence

First vow means sadhu and sadhvis will never cause harm or violence to any living being including even the tiniest creatures.

(2) Vow of absolute truthfulness

Second vow means they will not speak a lie.

(3) Vow of absolute non-stealing

Third vow means without the permission of the owner they will not take anything from anywhere.

(4) Vow of absolute celibacy

Fourth vow means they have to observe the celibacy with an absolute adherence to it. The sadhus or sadhvis should not even touch a member of the opposite sex regardless of their age.

(5) Vow of absolute non-attachment

Fifth vow means they do not possess anything and do not have any attachment for things they keep for their daily needs.

In summary, while taking these vows, they say, 'O Lord Arihant! I will not commit the sins of violence, express falsehood, steal and enjoy sensual pleasures, or be possessive, by speech, thought or deed; nor will I assist or order anyone to commit these sins. I will not approve or endorse anyone committing such sins. Oh Lord! I hereby

take a sacred and solemn vow that throughout my life, I will follow these five major vows and strictly follow the code of conduct laid out for a sadhu and a sadhvi."

Therefore, Jain Sadhus and Sadhvis never cause harm or violence to any living being. They live according to the pledge that they do not harm even the tiniest creatures. They always speak the absolute truth. They do not speak a lie on account of fear, desire, anger or deceptive intentions. Without the permission of the owner, they do not take even the smallest thing such as a straw. They observe the vow of celibacy with an absolute adherence to it. They will not touch the members of the opposite sex, even a child. In case the members of the opposite sex either touch them by mistake or in ignorance, they have to undergo the ritual of repentance (Prayashchitta) for self-purification. Jain Sadhus should not keep money with them. They will not own or have any control on any wealth, houses, any such movable or immovable property or organization. They will limit their necessities to the lowest limit and apart from these limits they should not have any attachments.

Some special rules of conduct for sadhus and sadhvis:

The Jain sadhus or sadhvis do not take food or water after the sunset or before sunrise. They wait 48 minutes after the sun-rise before even drinking boiled or dhovan water. Under any circumstance, they do not eat or drink anything between the hours of sunset and sunrise.

Gochari (Alm): Jain sadhus/sadhvis do not cook their food, do not get it prepared for them, or do not accept any food which was prepared for them. They go to different householders that are Jains or vegetarians and receive a little food from each house. This practice is called Gochari. Just as cows graze the top part of grass moving from place to place, taking a little at one place and a little at another, in the same way Jain Monks and Nuns do not take all the food from one house. They collect it from various houses, because they accept a little food and not all the food from one house. This way the householders do not have to cook again. The cooking process involves much violence in the form of fire, vegetable chopping, water consumption, etc., and sadhus or sadhvis do not want to be the part of any violence due to their needs. They do not receive food standing outside the house; but they go inside the house

where food is cooked or kept. This way they can understand the situation that their accepting food would not make the householders to cook again. They accept food which is within the limit of their vows.

Vihar: They always walk with bare feet. When they travel from one place to another, whatever may be the distance they always go walking. They do not use any vehicle like bullock cart, car, boat, ship or plane for traveling. Whether it is cold weather or scorching sun; whether the road is stony or thorny; whether it is the burning sand of a desert or a burning road, they do not wear any foot-wear at any time. They move about on bare foot all their life. The reason for not wearing shoes is while walking, they can avoid crushing the bugs or insects on the ground. While going places, they preach the religion (Dharma), and provide proper spiritual guidance to people. They do not stay more than a few days in any one place except during the rainy season which is about four months in duration. The sadhus and sadhvis travel after sunrise & before sunset only.. The place where they stay is called Upashray or Paushadh Shala. They may stay in places other than the Upashrayas if those places are suitable to the practice of their disciplined life and if they do not disturb or impede the code of conduct. The reason they do not stay anywhere permanently or for a longer period in one place is to avoid developing attachment for material things and the people around them.

Loch: The Jain Sadhus and Sadhvis after receiving the Diksha (initiation) do not cut their hair or shave their heads; nor do they get these things done by a barber. But twice a year or at least once a year at the time of Paryushan, they pluck off their hairs or they get the hairs plucked by others sadhu or sadhvi as the case may be. This is called Keshlochan or Loch. This way they are not dependent on others to carry out their needs. It is also considered as one kind of austerity where one bares the pain of plucking of the hairs calmly.

Clothing: They always wear un-stitched or minimally stitched white clothes. Some Jain sadhus do not wear the clothes. A loin cloth which reaches up to the shins is called a Cholapattaka. Another cloth to cover the upper part of the body is called Dupatti (Uttariya Vastra). A cloth that passes over the left shoulder and covers the body up to a little above the ankle is called a Kamali, Kamali is a woolen shawl. It is not worn by Sthanakavasi Sadhus or sadhvis. They carry a clothen or woolen mat to

sit on. Those who wear clothes have a muhapatti a square or rectangular piece of cloth of a prescribed measurement either in their hand or tied on their face covering the mouth*. They also have Ogha or Rajoharan (a broom of woolen threads) to clean their sitting place or while they are walking. Digamber Sadhus who do not wear any clothes have morpichhi and kamandal in their hands. These are the articles by which they can be distinguished. This practice may vary among different sects of Jains but essential principle remains the same to limit needs.

Jain sadhus and sadhvis bestow their blessings on all, uttering the words Dharm Labh (may you attain spiritual prosperity), Dayā palo etc. They bless everyone alike irrespective of their caste, creed. sex, age, wealth, poverty, high, or low social status. Some Shvetamber murtipujaka sadhus put Vasakshep (scented sandal dust) on the heads of people. Monks and nuns show the path of wholesome life and of a righteous and disciplined life to every one through the media of discussions, discourses, seminars and camps to attain spiritual prosperity.

The entire life of sadhus/sadhvis is directed towards the welfare of their souls. All the activities of their life have only one aim, namely, self-purification for self realization. For the attainment of this objective, besides following laid down guidelines they perform the pratikraman daily, and perform other austerities.

Conferring a title:

The Jain sadhus, after being initiated that is, after receiving the Diksha become immersed in such activities as meditation, seeking knowledge, acquiring self-discipline etc. Proceeding on the path of spiritual endeavor, when they reach a higher level of attainment, their spiritual elders, for the preservation of the four-fold Jain Sangh, confer upon them some special titles.

The Title of Acharya: This title is considered to be very high and involves a great responsibility. The entire responsibility of the Jain Sangh rests on the shoulders of the acharya. Before attaining this title, one has to make an in-depth study and a thorough exploration of the

* In Murtipujaka tradition it is kept in hand and in Sthanakavasi and Terapanthi tradition it is tied on their mouth.

Jain Agams and attain mastery of them. One must also study the various languages of the surrounding territory and have acquired a thorough knowledge of all the philosophies of the world related to different ideologies and religions.

The Title of Upadhyay: This title is given to a sadhu who teaches all the sadhus and sadhvis, and has acquired a specialized knowledge of the Agams (Scriptures).

The Title of Panyas and Gani: To secure this title, one should have acquired an in-depth knowledge of all the Jain agams. To attain the status of Ganipad one should have a knowledge of the Bhagawati Sutra and to attain the Panyas-pad one should have attained a comprehensive knowledge of all the aspects of the agams.

The Jain Sadhus, on account of the mode of their life, are unique among all the monks. The entire life of Sadhus and Sadhvis is dedicated to spiritual welfare of their souls; all their objectives, and all their activities are directed towards elevating their souls to the Paramatma-dasha, the state of the Supreme Soul.

Above discription is mostly related to Shvetambar Monks.

-Ex. President, Jain Yuva Sangathan, Banglore

रात्रि भोजन-त्याग से मिली स्वास्थ्य को शक्ति

मैं रात्रि भोजन के कारण पाइल्स की बीमारी से ग्रस्त हो गया। दो बार ऑपरेशन के पश्चात् भी पुनः इस रोग से ग्रस्त हो गया। फिर एक चिकित्सक ने बताया कि इस रोग का प्रमुख कारण कब्ज रहना है, रात्रि में भोजन करना छोड़ दो तो आराम मिलेगा।' मैंने बड़ी हिम्मत करके गुरु भगवन्त से माह में 25 दिन के लिए रात्रि भोजन नहीं करने का नियम ले लिया। एक बार दुकान पर एक माहेश्वरी बन्धु पधारे, वे बोले-'आप जैन हैं, रात्रि भोजन नहीं करते होंगे।' मैंने कहा- "माह में 25 दिन नहीं करता, किन्तु पाँच रात्रि खुली है।" वे सज्जन रात्रि भोजन नहीं करते थे। उन्होंने कहा- "कल सवेरा होगा कि नहीं? यदि एक दिन रात्रि भोजन नहीं किया तो सवेरा होने पर खा लेना, क्या फर्क पड़ेगा।" यह बात हृदय को जंच गई एवं मैंने रात्रिभोजन का त्याग कर दिया। इस नियम का मेरे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। शनैः शनैः स्फूर्तिमान् हो गया। मैं अब उस रोग से भी मुक्त हूँ तथा अपने को सदैव चुस्त अनुभव करता हूँ। आपसे भी मैं अब रात्रि-भोजन-त्याग की प्रेरणा करने का अधिकारी हूँ। *-सुरेश जैन जीरावला (उम्र 39 वर्ष), 12/75, एसीएफसी कॉलोनी, लोको रोड़, जोधपुर*

नारी-स्तम्भ

सद्गुणों के पुंज आचार्य श्री हीरा

श्री अनिल कुमार जैन

"पुष्प खिलते हैं बहुत पर सुगन्ध देता है कोई-कोई,
पूजा करते हैं बहुत पर पूजनीय होता है कोई-कोई।
जीवन के हर मोड़ पर स्वयं को स्थिर बनाकर विश्व में,
संयमनिष्ठ गुरु श्री हीराचन्द्र सा वन्दनीय है कोई-कोई।।

आचार्य श्री हीरा का महनीय व्यक्तित्व अनेक गुणों का सम्मिश्रण है। आपश्री का जीवन प्रारम्भ से ही दिनकर की भांति देदीप्यमान है। स्मित हास्य, इन्द्रिय-विजय, वाक् संयम, शुद्धाचार और सत्यानुराग आपके जीवन के मुख्य अंग हैं। सरलता, समता, कथनी-करनी में एकता आपके जीवन की विशेषताएँ हैं।

जिस प्रकार अगरबत्ती और मोमबत्ती जलकर भी सुगन्ध और प्रकाश प्रसारित कर देती है, आपश्री ने भी अपने जीवन से चहुँ दिशा में ज्ञान, दर्शन और चारित्र के द्वारा भव्यात्माओं को प्रकाश और सौरभ देकर सुगंधित किया है। आपकी अमृतमयी वाणी सुनकर भव्यों के हृदय में नव ज्योति जागृत होती है, आपकी ओजस्वी और माधुर्य रस से परिपूर्ण वाणी से शुष्क और निष्ठुर नीरस-हृदय व्यक्ति भी सरस हो जाते हैं। आपश्री के जीवन के कण-कण में, मन के अणु-अणु में वात्सल्य भरा हुआ है।

प्रभु महावीर के अन्तेवासी स्थविर भगवन्तों के जो गुण आगमकारों ने बताये हैं, वे अधिकांश गुण पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. में मौजूद हैं। आपश्री के गुणों के बारे में जितना लिखा जाये उतना कम है। आज जबकि शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है, परन्तु सद्गुण घट रहे हैं; धन बढ़ रहा है, परन्तु मानवता सिमट रही है; नित नये सुख-सुविधा के साधन विकसित हो रहे हैं, किन्तु स्नेह, संयम, प्रसन्नता का दुष्काल सा पड़ रहा है। ऐसे समय में आचार्य श्री हीरा के निम्नांकित विशिष्ट गुणों से प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये-

1. साधना शील, गुरु गंभीर व्यक्तित्व के धारी- पूज्य आचार्य श्री हीरा महान् प्रभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। मितभाषी, मिताहारी तथा ध्यान, मौन, जप, तप, स्वाध्याय में निरत आचार्यप्रवर का पावन दर्शन दर्शनार्थी को सहज ही आकृष्ट कर लेता है। उन्नत ललाट, स्मित मुखमण्डल, ऊँचा कद एवं गौरवर्ण के साथ योग-साधना, विषय-कषाय पर विजय एवं अध्यात्म में रमण आपके निर्मल व्यक्तित्व के निर्मापक तत्त्व हैं। आचार्य के समस्त

अपेक्षित गुणों से युक्त आपका आदर्श विचार-व्यवहार दर्शनार्थी के मन पर गहरी छाप अंकित करता है।

2. समयज्ञ- आपश्री समय की सत्यता के जानने वाले धीर, वीर, गंभीर, प्रज्ञाशील महापुरुष हैं। आपश्री जी सुनना, समझना सब कुछ करते हुए भी बिना अवसर के नहीं बोलते हैं। अवसर आने पर भी हितकारी वचन फरमाते हैं, वाद-प्रतिवाद करने वाले भी श्रद्धानत होकर लौटते हैं। समय की सधी हुई साधना ही साधक को निजी लक्ष्य तक, मंजिल तक पहुँचाने में फलीभूत होती है। जैसा कि कहा है-"**सव्वं जगं तु समयाणुप्पेही, पियमप्पियं कस्स वि नो करेज्जा**" अर्थात् आचार्य भगवन्त समत्व के अभ्यासी हैं।

3. अप्रमत्तता- जो समय के विज्ञ होते हैं, वे प्रमाद का त्याग कर अप्रमादी जीवन जीते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त भावों में रमण करने वाले हैं, भले ही आप श्री किसी भी अवस्था में विराजमान रहते हों।

"**से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा**"

आचार्य देव सतत जागरूक आत्मार्थी हैं। उनकी अप्रमत्त अध्यात्म-साधना निरन्तर प्रगतिमान है। आचार्य भगवन्त ने चरम तीर्थंकर ही नहीं, अपितु अनन्त तीर्थंकरों की अप्रमत्त साधना को आत्मसात् किया है। आपश्री का बाह्य एवं आभ्यन्तर जीवन अप्रमत्त भावों की अलौकिक तपस्या से अनुप्राणित है, जैसा कि नीतिकारों का कहना है-

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनः न करोति गर्वं, गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति।।

अतएव कैसी भी उचित अनुचित परिस्थितियाँ आई, परन्तु सामायिक व स्वाध्याय के शिरोमणि आचार्य देव सागर सम शांत, प्रशांत, गंभीर और अथाह बने रहे हैं।

4. ओजस्वी वाणी- प्रबल आस्था के केन्द्र पूज्य आचार्य श्री हीरा अद्भुत व्यक्तित्व के धनी हैं। आज एक ओर जहाँ संसार भौतिकवाद की चकाचौंध भरी रोशनी में खोता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर पूज्यप्रवर हैं, जो अपनी वाणी की अलौकिक शक्ति से अनेकों की जिन्दगी को सवार रहे हैं। ऐसे महापुरुषों के दर्शन मात्र से ही सभी संकट पल भर में गायब हो जाते हैं।

हमारे आचार्यप्रवर की वाणी का जादू सीधा हृदय पर होता है। ऐसे गुरु प्रदान कर पूज्य हस्ती गुरु ने हम पर जो उपकार किया है, उसे यदि लिखना भी चाहें तो लगता है- 'कहाँ से प्रारम्भ करें? कहाँ अन्त करें?' मैं तो एक कवि की कतिपय पंक्तियाँ ही प्रस्तुत कर सकता हूँ-

''कोटि-कोटि हिमगिरि सुमेरु, तेरे सम्मुख बौने हैं सब,
तेरी अनन्त ऊँचाई को, नाप सका है कौन अब।
तुझसा अनुपम सुन्दर कोई, कहीं नहीं धरती नभ पर,
तू है वह अभिनव दिव्य सुमन, जो खिलकर कभी न मुरझाता है।''

5. कुशल पराक्रमी– परमाराध्य आचार्य देव ऐसे कुशल पराक्रमी-पुरुषार्थी हैं, जैसे कि रणवीर बांकुरे होते हैं। आपश्री ने साधना के क्षेत्र में जब से प्रवेश पाया तब से चरमान्त साध्य की सिद्धि तक बढ़ते रहे हैं, साधना की रणभूमि में अनेकानेक संघर्षों का सामना करना पड़ा है, परन्तु आप श्री जी के पुरुषार्थ के समक्ष सभी बाधाओं को काफूर होना पड़ा है। आपश्री जी ने ''आसं च छंदं च विगिंच धीरे'' सूत्र को अपनाकर धीरता का परिचय दिया है। निधि उजागर करने का ही कार्य किया है। आचार्य देव ने सदैव सत् पराक्रम किया है। इसलिए हम स्पष्ट रूप से यह कह सकते हैं कि आचार्य देव ने अपने गुरुदेव एवं शासन की न तो कोई अवज्ञा ही की है और न कोई आशातना ही। आचार्य भगवन्त के कुशल पराक्रम और पुरुषार्थ का महान् फल है– (1) शिष्य-शिष्याओं की निरन्तर अभिवृद्धि, (2) त्यागी-तपस्वियों की महकती फुलवारी, (3) आध्यात्मिक सत् साहित्य का सृजन, (4) वृद्धावस्था में जगत् कल्याण के लिए निरन्तर पाद विहार।

इनके विकास को आचार्य श्री ने लक्ष्य के चरमान्त तक पहुँचाने में कोई कसर नहीं रखी है, न ही इस कठोरतम कदम की गति से विश्रान्ति ही ली है, किन्तु अनवरत रथ को आगे बढ़ा रहे हैं।

6. आकर्षण के केन्द्र बिन्दु– आचार्य श्री हीरा समूचे स्थानकवासी जैन समाज के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु हैं। जैन जगत के इस ज्योतिर्मय विचारक और युगद्रष्टा ऋषि के ज्योतिर्मय व्यक्तित्व की आज समाजव्यापी चर्चा है। आप ख्यातनामा प्रतिष्ठित एवं वरिष्ठ संत हैं, पर मिथ्याभिमान इन्हें छू तक नहीं गया है। मात्सर्य का इनमें नितांत अभाव है। ''सब कोऊ मित्र, शत्रु नहीं कोऊ'' ऐसी इनकी वृत्ति है। इनके निकट बैठना मात्र ही एक प्रकार की सांस्कृतिक दीक्षा के सदृश है। इनका व्यक्तित्व इतना निश्चल, इतना मधुर तथा इतना आकर्षणशील है कि वह बलात् हमें बहुत कुछ सीखने के लिए अनुप्रेरित, अनुप्राणित करता है।

''जो भी आता गुरु चरणों में, सच्ची शान्ति पाता है।
अटूट श्रद्धा लिये वो, झोली भर ले जाता है।''

बौद्धिक क्षेत्र में इनकी सफलताएँ सर्वप्रसिद्ध हैं, किन्तु इनकी नैसर्गिक नम्रता सहज ही इनकी विद्वत्ता का भार वहन कर लेती है।

आगमों के निगूढ़ रहस्यों को उजागर करने वाले, प्रशांत मन से जिनशासन की सेवा करने वाले, तपस्या से आत्मा को उज्ज्वल बनाने वाले ऐसे गुरुवर हीरा को पाकर हमारा मन मुदित है। आचार्यप्रवर के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में, हम वीतराग परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि गुरुवर, आप दिन दुगुनी, रात चौगुनी प्रगति करते रहें, वर्षानुवर्ष हम सभी को आपश्री मार्गदर्शन देते रहें, युगानुयुग प्रकाश स्तम्भ के समान सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान, समन्वय और साधना की रश्मियों से प्रकाशित करते रहें। हमारा भी यह परम कर्त्तव्य है कि हम अपने आराध्य श्रद्धेय आचार्य भगवन्त द्वारा प्रदत्त प्रेरणाओं, हित-शिक्षाओं तथा उनके सद्गुणों को आत्मसात् करते हुए, उनके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर अपने सक्रिय कदम बढ़ायें, अपने आचरण पक्ष को सशक्त बनायें और जिनशासन की जाहोजलाली हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करें। इसी शुभ मंगल मनीषा के साथ-

''वर्तमान के जो वर्धमान हैं, भक्तों के जो भगवान हैं,
जिनशासन की जो शान हैं, आचार्य प्रवर महान् हैं,
करते जो नित ध्यान हैं, जो अनंत ज्ञानवान हैं,
मेरी श्रद्धा के जो निधान हैं, जो विविध गुणों की खान हैं,
ऐसे आचार्यप्रवर को दीक्षा अर्द्धशती पर शत-शत नमन है,
यही शुभकामना शुभेच्छा, आप पाये लक्ष्य महान हैं।''

-'सूरज सदन' मं.नं. 7, सुमन भारती स्कूल के पास,
गुलाबबाड़ी, लाडपुरा, कोटा (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. दिलीप धींग

जिनवाणी का नये साल का अंक अभिनव रंगरूप के साथ था। जिनवाणी की विकास यात्रा के बारे में मुझे सह-संपादिका डॉ. श्वेता जी का प्रभावशाली व तथ्यपूर्ण लेख देखने को मिला। सर्वप्रथम आप सभी को, सम्पूर्ण जिनवाणी परिवार को जिनवाणी के सात दशक पूरे होने पर हार्दिक बधाइयाँ। बहुत सारे प्रेरक तथ्यों के बीच यह तथ्य गौरवपूर्ण लगा कि पूर्व सम्पादक डॉ. भानावत जी जिनवाणी के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित हुए थे। जिनवाणी की विकास यात्रा का यह परिचय मात्र था। मेरे मत में जिनवाणी पर पूरा शोध प्रबंध लिखा जा सकता है। जैन पत्रकारिता तथा धार्मिक पत्रकारिता में जिनवाणी अनेक विशेषताओं और मानदण्डों के साथ आगे बढ़ी है। पिछले दो-ढाई दशक की यात्रा का साक्षी तो मैं स्वयं भी हूँ। अनेक बातें प्रेरक और उल्लेखनीय हैं। इस उपलक्ष्य में कोई गरिमामय कार्यक्रम किया जा सकता है। उत्तरोत्तर विकास की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

-First Floor, 7, Ayya Mudali Street, Sowcarpet, Chennai-600001

दीक्षा अर्द्धशती

जिनके कण-कण में है विराट्ता

सुश्री खुशबू पटवा

जो हर समय करते हैं सिद्ध अरिहन्त का स्मरण
स्वयं आत्मा में जो हमेशा करते हैं रमण
अल्प बचा है जिनका भव-भ्रमण
वही हैं हमारे आचार्य हीरा, जिनका है उच्चतम आचरण।।

उपमा से परे है चेहरे से झलकती सुन्दरता
और कितनी प्रबल है मुख से बहती मधुरता
जिनके हर उद्देश्य में हैं दान, पुण्य, उदारता
धन्य है आचार्य हीराप्रवर को, जिनके कण-कण में है विराट्ता।।

चावल का गुण होता है उसकी धवलता
पानी का भी स्वभाव उसकी शीतलता
मिश्री में घुली होती है अत्यन्त मधुरता
इन्हीं सब गुणों से मिलती है गुरु हीरा के जीवन को महानता।।

व्यक्तित्व जितना बड़ा बनाना चाहो बन सकता है
व्यक्ति जितना चाहे आगे बढ़ सकता है
सीखो अपने गुरु हीरा से जीवन का सलीका
व्यक्ति चाहे तो प्रतिपल धर्म कर सकता है।।

आपसे हर मोड़ पर सीखा है आगे बढ़ना
ऊँचा उठे धर्म में, यही है हमें करना
सब कमाया धरा रह जायेगा यहीं पर
जो जायेगा, वो है अरिहंत सिद्ध का शरणा।।

जब जब गिरा इंसान, तूने उसे उठाया है
तू ही मेरा भगवान, तू ही मेरा साया है
खिल उठी मेरी ज़िन्दगी, जब भी तेरा नाम आया है
तुझे पाकर क्या बताऊँ, क्या मैंने पाया है।।

-सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार पटवा, 3/101, जवाहरनगर, जयपुर-302007 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

हस्ती गुरु के पट्टधर, तुमको लाखों प्रणाम

श्री जवाहरलाल कर्णावट

(तर्जः- तुमको लाखों प्रणाम........।)

हस्ती गुरु के पट्टधर, तुमको लाखों प्रणाम-2
जैन जगत के पूज्यवर, तुमको लाखों प्रणाम-2
मोतीलालजी के नन्दन प्यारे, मोहिनी माँ के नयन दुलारे,
गाँधी कुल उजियारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।1।।
संसारी सुख वैभव छोड़ा, शिवरमणी से नेहा जोड़ा,
बन्धन कर्म का तोड़ा, तुमको लाखों प्रणाम-2।।2।।
जिनशासन के उज्ज्वल तारे, रत्नवंश के दिव्य सितारे,
सर के ताज हमारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।3।।
वचन कला सुन हर्षे सारे, आगम शास्त्र सूत्र मंझारे,
सुन्दर भाव उच्चारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।4।।
ब्रह्मचर्य का पालन करते, निशदिन ध्यान प्रभु का धरते,
पंच महाव्रतधारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।5।।
आचार्य पूज्य हैं हीरा हमारे, शील सदाचार के बने प्रचारे,
प्रभु के अमर पुजारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।6।।
सूरज के सम चमक रहे हो, चन्दा के सम बरस रहे हो,
छत्तीस गुणों के धारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।7।।
वाणी प्रेम सुधा बरसाते, धर्म अहिंसा जग में फैलाते,
ओ मोक्षपति दातार, तुमको लाखों प्रणाम-2।।8।।
अष्ट सम्पदा युक्त जीवन तुम्हारा, उच्च साधना से जीवन संवारा,
भक्तों के भगवान,तुमको लाखों प्रणाम-2।।9।।
आशा हमको आपसे भारी, गुरुवर आप हो पर उपकारी,
श्री संघ के रखवाले, तुमको लाखों प्रणाम-2।।10।।
दीक्षा अर्द्धशती का वर्ष(स्वर्णिम अवसर) सुहाता,
'जवाहर' हृदय से तेरा गुण-कीर्तन गाता।
हमारी आस्था के आयाम, तुमको लाखों प्रणाम-2।।11।।

1, Murugappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079

दीक्षा अर्द्धशतीवर्ष

चरण-कमलों में करते वन्दना

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

अपनी स्नेहिल वाणी में ज्ञान का प्रकाश भर
हृदय से हरते हैं अज्ञानता का अंधकार
उन्हीं उपाध्यायश्री के चरण-कमलों में करते वन्दना।

पुरुषार्थ पर विश्वास कर, सद्गुणों को स्वीकार कर,
आचार्य भगवन्त श्री हस्ती को गुरुवर बना
निंदा-प्रशंसा से परे, शांति का कराते दिव्य अमृतपान,
उन्हीं उपाध्यायश्री के चरण-कमलों में करते वन्दना।

आगमवाणी का चिंतन-मनन कर, सूत्रों का करते बखान,
उन्हीं उपाध्यायश्री के चरण-कमलों में करते वन्दना।

जो नास्तिक को आस्तिक बनाते,
भक्ति की शक्ति से, मुक्ति की युक्ति बताते,
उन्हीं उपाध्यायश्री के चरण-कमलों में करते वन्दना।

रत्नसंघ के हैं उपाध्याय, उदारमना हैं गुरुवर,
जैन और अजैन का संताप हर, अनजानों को भी दे अपनापन,
मुस्कुराकर 'आनंद है' का करते उद्घोष हैं
उन्हीं उपाध्यायश्री के चरण-कमलों में करते वन्दना।

भावनाओं के अक्षत ले, वंदना के स्वरों से करते यही विनति,
दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष में करें जोधपुर महानगर को धन्य,
रत्नसंघीय संतों के सरदार आचार्यप्रवर,
आपके दरबार में श्रद्धा विनय सहित करते यही अभ्यर्थना।

-"हुकम", 5-ए/-1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

कविता

स्वीकारो मेरी वन्दना

श्री बाबूलाल जैन

रतन सम क्रान्तिकारी, शोभा सम शुद्धाचारी,
हस्ती के चरण पुजारी, हीरा चरणों में मेरी वन्दना।
ओ! गुरुवर शत-शत स्वीकारो मेरी वन्दना।। 1।।

माँ मोहिनी का लाल दुलारा, गांधी कुल उजियारा।
यौवन वय में बना है योगी, हस्ती नयन सितारा,
गुरुवर की सेवा भारी, शासन सुरभि विस्तारी।
करके तन मन जीवन की अर्पणा। ओ गुरुवर.....।। 2।।

सामायिक स्वाध्याय की बहाई, तुमने निर्मल धारा,
इस धारा में डुबकी लेकर, पाये जन उजियाला।
वाणी है जगहितकारी, भव्यों को वल्लभकारी,
मेटे भव-भव की दुःख कन्दना।। ओ गुरुवर.....।। 3।।

अरिहन्त संघ सिरताज कहाये, जिनशासन की शान,
आयरियाणं पद पर सोहे, हीरा पूज्य महान्।
ये हैं छत्तीस गुणधारी, तिन्नाणम् तारणहारी,
आये हैं जैसे, त्रिशला नन्दना।। ओ गुरुवर.....।। 4।।

व्यसन फैशन छोड़ो सब भाई, आपका आह्वान,
निन्दा विकथा से दूर रहे, ये उत्तम साधु की पहचान।
पाले शुद्ध पंचाचारी, मानव के जग हितकारी,
आये हैं जैसे मोहिनी, नन्दना।। ओ गुरुवर.....।। 5।।

सब मिलकर हम भायें भावना, जियो हजारों साल,
दशों दिशा में फैले तेरी, यशकीर्ति सुविशाल।
खिलती रहे शासन फुलवारी, जन-जन के मोहनगारी,
शुद्ध हृदय से मेरी वंदना।। ओ गुरुवर.....।। 6।।

-स्वाध्यायी, मौ. गोपालगढ़, भरतपुर (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

'स्वप्निका' संबंधी जिज्ञासा-समाधान

श्री नमन मेहता

'स्वप्निका' की प्रचार-प्रसार यात्रा के दौरान प्रत्येक स्थान के प्रत्येक आयु वर्ग के व्यक्ति का इस पुस्तिका के प्रति उल्लसित भाव दिखा, कई जिज्ञासाएँ साक्षात्कार में आई, विशेषतः किशोर व युवा वर्ग में, अतः अलग-अलग स्थानों पर इस वर्ग द्वारा की गई जिज्ञासाओं एवं प्रतियोगिता संयोजक नमन मेहता द्वारा किए गए समाधानों को प्रश्नकर्त्ता के नामों के साथ संकलित-सम्मिलित रूप में दिया जा रहा है-

सुमित- स्वप्निका कैसी पुस्तिका है? सामान्य जानकारी दीजिए।

समाधान- स्वप्निका वह सबसे अलग पुस्तिका है जो आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. जैसी महान् विभूतियों के संयम-जीवन के 50 वें वर्ष पर उनके संयम की अनुमोदना हेतु अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका संघ एवं युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रकाशित एक प्रतियोगिता पुस्तक है।

सुमित- इस प्रतियोगिता पुस्तक में सबसे अलग क्या है?

समाधान- यह एक ऐसी पहली प्रतियोगिता पुस्तक है जो सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन के साथ सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप की ओर अग्रसर करती है। इसमें प्रश्न नहीं होकर गुणगान, नियम, प्रेरणा, वचन, प्रवचन का आलम्बन है, इसलिए यह सबसे अलग है।

लक्ष्मी- स्वप्निका में हमें मुख्यतया क्या करना है?

समाधान- स्वप्निका चारित्र अनुमोदना की पुस्तक है, अतः इसमें नियमों के माध्यम से जीवन को संस्कारभूत आचरण से परिपूर्ण बनाने की बात कही है।

लक्ष्मी- स्वप्निका के नियमों का किस तरह पालन करना है?

समाधान- स्वप्निका में प्रत्येक पृष्ठ पर दो-दो नियम दिए गए हैं, चाहें तो दो नियमों में से एक का भी पालन किया जा सकता है।

लक्ष्मी- एकासन/बिआसन......प्रार्थना/थोकड़े......आदि का नियम 51 दिन किस प्रकार करना है?

समाधान- इन दोनों ही नियमों में सब मिलाकर भी 51 प्रार्थना/थोकड़े आदि तथा

एकासन/बिआसन आदि कर सकते हैं, दोनों नियमों में सब मिलाकर 51 किए जा सकते हैं और किसी एक में रुचि हो तो उसको भी 51 दिन या 51 बार किया जा सकता है।

निपुण– एक दिन में कितने नियम किए जा सकते हैं?

समाधान– एक दिन में चौदह के चौदह नियम किए जा सकते हैं तथा एक नियम को दिन में एक से अधिक बार भी किया जा सकता है।

संयम– इसके आधार पर परीक्षा कहाँ होगी? कैसे प्रश्न आएँगे? और परीक्षा कब होगी?

समाधान– 1. जहाँ पर भी कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ पर परीक्षा केन्द्र रहेगा।

2. परीक्षा पुस्तक में किए गुणगान, 14 स्वप्नों पर आधारित मुक्तकों, नीचे-ऊपर आए प्रेरणा एवं गुणगान पदों, दिए गए वचन-प्रवचन एवं श्लोकों पर आधारित होगी।

3. पुस्तिका के आधार पर **23 मई 2013** को एक **खुली किताब प्रतियोगिता** आयोजित होगी, जिसमें पुस्तक देखते हुए प्रश्नों का उत्तर देना होगा, और **मुख्य परीक्षा 10 नवम्बर, 2013** को आयोजित होगी, जिसमें पुस्तक की सहायता के बिना स्मृति के आधार पर परीक्षा देनी है।

4. पुस्तिका प्रतियोगिता के प्रश्न-पत्र का नमूना पुस्तिका के साथ संलग्न पेपर एवं **जिनवाणी के फरवरी के अंक** में दिया गया है।

स्वप्निल– यह पुस्तिका लेकर 3-4 व्यक्ति भी तो एक साथ भर सकते हैं तो फिर 1 व्यक्ति के लिए 1 ही पुस्तिका की आवश्यकता किस तरह से हैं?

समाधान– 1 व्यक्ति की 1 पुस्तिका होने पर स्वयं की पुस्तिका भरने की इच्छा शक्ति रहेगी, अन्यथा 3-4 जनों की शामिल होने पर भरी तो जा सकती है, परन्तु एक प्रतियोगिता परीक्षार्थी की पुस्तिका तो स्वयं की सबसे अलग होनी ही चाहिए।

शोभा– स्वप्निका को भरकर कहाँ पर भेजना होगा?

समाधान– यह सबसे अलग प्रतियोगिता पुस्तिका है, इसको कहीं पर भेजने की आवश्यकता नहीं हैं, यह एक सुन्दर-सुरम्य-मनभावन पुस्तिका गृह की धर्म शोभा बढ़ाने वाली है, अतः इसे गृह में रखने और जीवन में सजाने का लक्ष्य रखना है।

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

आचार्य हीरा के संयम का प्रभाव

श्री विमलचन्द सुराणा

इतिहास के पृष्ठों में कैद जिनशासन की प्रभावनाओं अथवा प्रभावों के जो उदाहरण उपलब्ध हैं, उन्हें युवापीढ़ी मात्र किस्से, कहानियाँ और कल्पनाएँ ही समझती है और अपनी तर्क शक्ति से उन्हें नकार देती है। पर आज के इस भौतिकवादी युग में जब कभी अध्यात्म-साधना का साक्षात् प्रभाव दिखाई दे जाता है तो इस तर्कशाली युवा वर्ग को भी जिनधर्म और संयम की महत्ता को स्वीकार करना ही पड़ता है, उसके सामने नत मस्तक होना ही पड़ता है। हमारी आगमवाणी बताती है कि तीर्थंकरों के 34 अतिशय होते हैं, हमें उन पर पूर्ण श्रद्धा है, पर मात्र हमने इन अतिशयों को सुना ही है। किन्तु हमारे गुरुदेव के अतिशयों का तो हम साक्षात् अवलोकन कर सकते हैं।

जयपुर के महावीर नगर में चातुर्मास (सन् 2012) कर गुरुदेव उपनगरों को लाभान्वित करते हुए प्रतापनगर पधारे। यहाँ पर गुरुदेव की दन्त चिकित्सा का कार्य उपस्थित हुआ। डॉ. नितिन शर्मा जो एक कुशलदन्त चिकित्सक हैं, एक सहज व्यक्तित्व के धनी सज्जन पुरुष हैं, उन्हें यह पुण्यलाभ प्राप्त हुआ। उन्हें गुरुदेव की 'रूट केनाल' करनी थी। जब रूट केनाल किया जाता है तो मसूड़ों में ड्रिलिंग की जाती है, फिर पानी का प्रेशर देकर अंदर की गंदगी बाहर निकाली जाती है। जिस उपकरण से यह कार्य होना था उसमें सचित्त जल था। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी, श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी और श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी, जो क्लीनिक में गुरुदेव की सेवा में उपस्थित थे, उन्होंने डॉक्टर साहब से इस बारे में निवेदन किया, परन्तु शायद व्यस्तता के कारण उनका ध्यान इस ओर नहीं गया। जब डॉक्टर साहब आचार्य श्री की 'रूट केनाल' कर रहे थे, तो ड्रिलिंग तो हो रही थी, पर प्रेशर डालने पर भी पानी गुरुदेव के मुख में नहीं जा पा रहा था। उन्होंने अपने जो भी उपकरण थे उनको बाहर निकालकर निरीक्षण किया। बाहर उपकरण से पानी का स्प्रे किया तो आराम से हो रहा था। वापस गुरुदेव के मुख में प्रयोग किया, फिर पानी निकलना बंद। पुनः बाहर निकाला तो वह यंत्र पूरी तरह से काम कर रहा था। फिर अंदर प्रयोग किया, पुनः वही स्थिति। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, कि यह क्या हो रहा है? अंततः डॉक्टर साहब ने ही समाधान किया कि यह पानी इनके मुख में प्रवेश नहीं करेगा, आप स्वयं का पानी दीजिए। डॉक्टर साहब के पास जो पानी था, वह सचित्त था। परमश्रद्धेय 'योगेशमुनि जी म.सा.' ने जब प्रासुक पानी उपलब्ध कराया तो न जाने कैसा चमत्कार हुआ। उपकरण

ने अपना काम करना प्रारम्भ कर दिया। धर्म शक्ति के आगे विज्ञान शक्ति पराभूत हो गई।

अब इसे क्या कहें? यह आचार्यप्रवर के विशुद्ध संयम का प्रभाव ही तो नहीं? एकेन्द्रिय कहे जाने वाले अप्काय और वायुकाय के जीव जिनमें अज्ञान ही माना जाता है, ज्ञान नहीं होता, क्या उनकी भी यही अभिलाषा थी कि जिस साधक आत्मा ने 50 वर्षों के सुदीर्घकाल तक प्रत्येक जीव को, अभयदान दिया, कहीं वे ही जीव उनके महाव्रतों में दोष का निमित्त नहीं बन जाएँ। या फिर कोई दैवीय शक्ति सेवा में उपस्थित थी जो इस संयम के देवता के नियमों को स्खलना से बचाने का भरसक प्रयत्न कर रही थी। पता नहीं कैसा चमत्कार था, कैसा अतिशय था? आचार्यप्रवर की निर्मल साधना का ही यह अतिशय प्रतीत होता है। मैंने तो मात्र इसे श्रद्धेय योगेशमुनि जी से सुना, तो गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भरे हृदय ने मानो नभ को छू लिया, पर जिन नेत्रों ने इस दृश्य को साक्षात् देखा, उन नेत्रों की धन्यता का तो कहना ही क्या। कैसा विलक्षण नज़ारा होगा वह, कैसा विचक्षण अहसास।

धन्य है हमारे गुरुवर, और धन्य है हम सब भी, क्योंकि हमने ऐसे गुरुवर भगवन्त को पाया है। जब तक संयम की महत्ता और जिनवचनों की अडिगता एवं महानता के ऐसे प्रसंग उपस्थित होते रहेंगे तब तक प्रभु महावीर का यह जिनशासन निःसन्देह अखण्ड-अक्षुण्ण बना रहेगा, इसमें कोई संशय नहीं है।

''तरंगें हवाओं की सदा, गीत जिनके गुनगुनाती है
अविरल बहती जलधारा भी, जिनको शीश नमाती है
नूतन विचारधाराएँ भी, सजदे में स्वतः झुक जाती हैं
गुरुदेव की अतिशय गाथाएँ, नित नव इतिहास बनाती हैं।''

-एस-149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.)

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'नाभि-चिकित्सा' के प्रश्नों के उत्तर 77 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा घोषित किया गया है।

पुरस्कार एवं राशि-	नाम
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्री सुन्दरलाल छाजेड़-गंगाशहर-बीकानेर (राज.)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	सीमा संचेती-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती ममता कृपालचन्द जैन-गंगापुर सिटी (राज.)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें।

बाल-स्तम्भ

आतंकवाद खतम करना है

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 अप्रेल 2013 तक श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

बच्चे-बच्चे का कोमल मन।
करुणा का पावन झरना है।
इस झरने के शीतल जल से,
आतंकवाद खतम करना है।।

मानवता के मानस्तंभ हैं,
भोले-भाले प्यारे बच्चे।
प्रेम के सन्देशवाहक,
मैत्री के उजियारे बच्चे।
उनसे प्रेरित होकर सबको,
वैर-कलह खतम करना है।
आतंकवाद खतम करना है।।1।।

बच्चे जोड़ें परिवार को,
बच्चे जोड़ें देश-समाज।
बच्चे क्या जानें सीमाएँ,
बच्चे मानवता के ताज।
उनकी निश्छल किलकारी से,
सारा जहाँ चमन करना है।
आतंकवाद खतम करना है।।2।।

बड़े प्यार से लड़ते बच्चे,
पलभर में हो जाते एक।
कोई गांठ नहीं है मन में,
ना कोई कटुता की रेख।
उन्हें देख संकल्प कीजिये,
अब ना कभी झगड़ना है।
आतंकवाद खतम करना है।।3।।

बच्चों की तुतलाती बोली,
मानव की व्यथा हरती है।
मजहब-मुल्कों की दीवारें,
उनकी हँसी व्यर्थ करती है।
जात-पाँत और वर्ग-भेद का,
षड्यंत्र विफल करना है।
आतंकवाद खतम करना है।।4।।

खूब लड़े हैं, खूब भिड़े हैं,
जीता कौन, हारा कौन ?
आयुध के सौदागर जीते,
हारी मानवता हुई मौन।
बेसहारा माँ-बच्चों के,
पुनर्वास का श्रम करना है।
आतंकवाद खतम करना है।।5।।

हिंसक भाव अगर जग जाए,
बच्चे से कर लेना प्यार।
उसकी नैसर्गिक मृदुता से,
मिट जायेगा मन का खार।
इन बच्चों के कल की खातिर,
धरती का रक्षण करना है।
आतंकवाद खतम करना है।।6।।

जहाँ अहिंसा-ज्ञान नहीं हो,
वहाँ मनुजता रोती है।
बच्चे मूल्यों के रखवाले,
मानवता के मोती हैं।
उनकी खनक शुद्ध आभा से,
हिंसा का तिमिर हरना है।
आतंकवाद खतम करना है।।7।।

-अध्यक्ष : अहिंसा विचार मंच, 53, डोरेनगर, उदयपुर-313002

प्रश्नः-

1. आतंकवाद किसे कहते हैं?
2. बच्चों के वे कौनसे गुण हैं, जिनको अपनाकर आतंकवाद समाप्त किया जा सकता है?
3. "आयुध के सौदागर जीते, हारी मानवता हुई मौन"- अभिप्राय समझाइये।
4. लेखक ने बच्चों को मानवता के मोती क्यों कहा?
5. विलोम शब्द लिखिए- पावन, मैत्री, शीतल, चमन, कटुता, तिमिर।
6. 'ता' प्रत्यय लगे हुए शब्द कविता में से चुनकर लिखिए।
7. मन का खार कैसे मिटता है?

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2013] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'तीर्थंकर पार्श्वनाथ की करुणा' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 25 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	नवीन बैद-भीनासर-बीकानेर(राज.)	28
द्वितीय पुरस्कार-200/-	भव्यता जैन-सेंती-चित्तौड़गढ़ (राज.)	26.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	अर्पित जैन-जोधपुर(राज.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	सात्विक जैन-जयपुर (राज.)	25
	उदिता मेहता-मदनगंज-किशनगढ़(राज.)	23
	ध्वनि जैन-आलनपुर (राज.)	22.5
	रक्षा जैन-हिण्डौनसिटी (राज.)	21.5
	अरिहन्त चौपड़ा-पाली (राज.)	21

कविता

गरीब की होली

रेणु सिरोया

धूल में लिपटे हुए एक मासूम ने रोते हुए
अपनी माँ से कहा-
माँ ये रंग बिरंगे रंग मुझे भी ला दो ना
एक पिचकारी मुझे भी दिला दो ना
ख्वाहिश थी छोटी सी लेकिन
माँ का दिल भर आया
उसे समझाया, गोदी में उठाया
और प्यार से गले लगाया,
फिर बोली- सुन मेरे नन्हें
वो रंग तो सारे नकली हैं
तू उनकी जिद्द ना कर राजा
आंचल बिछाया उसे बिठाया
धरती से मिट्टी उठाकर
उसके कोमल तन पे लगाया
और सीने में उसे छुपाया
नज़र बचाकर आँसू पौंछे
अपनी गरीबी को वो कौसे
नन्हा मासूम कहे रो-रोकर
माँ तुम मुझे यूं ही बहलाती हो
ये तो बस मिट्टी है
तुम यूं मुझे समझाती हो
माँ बोली सुन मेरे लाड़ले
ये मिट्टी नहीं साधारण है
सबसे अनोखा रंग है इसका, ये मिट्टी तो पावन है
सबके लिए एक रूप है और सबकी मन भावन है।।

-सिरोया मेडिकल स्टोर, 213/12, अशोकनगर, माया मिष्ठान भण्डार के पीछे, उदयपुर-313001 (राज.)

कविता

मुक्ति पथ का चयन

श्री मनमोहनचन्द बाफना

हे मन! अब बन, उपसर्ग विजेता, धर्म प्रणेता, आत्म विजेता
सफल हो मेरी उपासना, ज्ञान क्रियामय साधना,
सर्व कषायों का त्याग करने का संकल्प
राग-द्वेष से परे हटने का आचरण,
प्रभु, अब तक था मैं मोह, ममता, अहं में तना,
परिग्रह एवं परिवार से कठोर कड़ियों में जकड़ा,
उनका प्रभाव था अत्यन्त घना,
परन्तु अनंत पुण्याई, शुभ कर्मोदय से गुरु कृपा से
आपके प्रतिरूप, आगमों के अनुरूप
ज्ञान और क्रिया एवं साधना से प्रतिबोध पा
निर्ग्रंथ गणिवर गुरुदेव का सान्निध्य पा,
मन ही मन खूब गुना, स्मरण किया, स्वीकार किया,
तभी से मात्र आपको ही मन में चयनित कर लिया,
यह भटक रहा मन अनादि से बना हुआ मलिन,
दीजिए इस पर ध्यान, कृपा निधान,
आगम बोध से करा दो विद्या दान,
मन संसार से निकल, संयम पथ पर,
स्वीकार करो समर्पण, भक्तिमय अर्चन,
दिला दो, त्रिरत्नों का दिव्य दर्शन,
ऐसे प्रभु, मेरे गणिवर रत्न हस्ती से,
प्रशस्त मार्ग को पाकर, साधना के उच्च स्तर पर,
आगम रत्नाकर गणिवर हीरा, गुरु मान,
समस्त संत मुनिराज एवं गुरुणी के सान्निध्य में,
मेरा मन चाहता है ऐसे पारस से स्पर्शन
संयम ही है मुक्ति पथ को गमन।

-प्रमोद दाल मिल, 112/109, पोखरपुर, कानपुर-208010

परिचर्चा-स्तम्भ

संवाद-(2)

जनवरी माह के 'परिचर्चा' स्तम्भ में जो प्रश्न पूछा गया था उसके उत्तर अनेक प्रबुद्ध चिन्तकों ने प्रेषित किए हैं, जिनमें से एक उत्तर फरवरी माह में प्रकाशित किया गया था, दो उत्तर यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रश्न 1. विवाह-सम्बन्ध के लिए क्या जन्म-पत्रियों का मिलान आवश्यक है? क्या मात्र नामों के आधार पर राशि का मिलान करने से विवाह सम्बन्ध हो सकता है? दो पण्डितों के अलग-अलग मत होने पर आपके निर्णय का आधार क्या रहेगा? क्या जन्म-पत्रियों के मिलान से किए गए सभी विवाह सफल होते हैं?

उत्तर नं.2- संवाद के माध्यम से आप द्वारा दिया गया प्रश्न निःसन्देह आज की पीढ़ी के लिए एक विचारणीय विषय है। यह कतई आवश्यक नहीं है कि विवाह सम्बन्ध के लिए जन्म पत्रियों का मिलान किया जाये। क्योंकि जन्म-पत्रियों के मिलान से किये गये विवाह भी असफल होते देखे गये हैं। मात्र नामों के आधार पर राशि मिलान करने से विवाह करने वाली आज की पीढ़ी के प्रतिशत का ग्राफ निरन्तर बढ़ रहा है। चाहे लड़के के माता-पिता हों या लड़की के माता-पिता, वे समय पर अपनी सन्तान के हाथ पीले होता देखना चाहते हैं, उनकी इस राय को भी बल मिलता है कि होनी या अनहोनी भाग्य पर निर्भर करती है। जन्मपत्री या नाम के आधार पर मिलान करने में यदि दो पण्डितों के अलग-अलग मत होने पर लड़का-लड़की की स्वयं की छवि, समाज में उनकी पारिवारिक छवि, मित्र मण्डली में उनकी साख और उनके संस्कार को प्राथमिकता देखकर ही निर्णय लिया जाना सर्वोपरि होगा। यह कतई आवश्यक नहीं है कि जन्म-पत्रियों के मिलान से किये गये सभी विवाह सफल होते हैं। आज भी समाज में अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने जन्म-पत्री से मिलान कर विवाह किये हैं और वे तलाक की कगार तक पहुँच चुके हैं या उनमें आये दिन खटपट होती है।

-गौतमचन्द गांधी, 60, आशीर्वाद, अमरावती नगर, बालाजी नगर के पास, रिलायन्स टावर के सामने, पालरोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

उत्तर नं. 3- विवाह एक पवित्र बन्धन है। यह समाज में रहते हुए मर्यादित, सयंमित जीवन जीने के लिए किया जाता है। संसार में जीवन चलाने के लिए दो रास्ते है-पहला योग का एवं दूसरा भोग का। महान् आत्माएँ योग की ओर अपने कदम बढ़ाती है, शेष भोग के कीचड़ में फँस जाते हैं।

बदलते परिवेश में विवाह सम्बन्ध कठिन हो गए हैं। कारण कई हैं- जन्म-पत्री का

नहीं मिलना, लड़का कम पढ़ा होना, बिजनसमेन होना, गाँव का होना इत्यादि। विवाह सम्बन्धों में जन्म-पत्रियों का मिलान किया भी जाता है एवं नहीं भी किया जाता है। यह व्यक्ति की अपनी सोच पर निर्भर है, आवश्यक नहीं है। हमें अपनी एकान्त विचारधारा को त्यागकर हालात से समझौता करना चाहिए।

जन्मपत्री के मिलाने से सब अच्छा नहीं हो सकता एवं न मिलाने से बुरा भी नहीं हो सकता है।

कुण्डली मिलान एवं यज्ञ के द्वारा शादी करने पर भी कई विवाह टूट जाते हैं, मिट्टी के घरौंदों की तरह बिखर जाते है। नई-नवेली दुल्हन के घर में कदम रखते ही पति परलोक सिधार जाते हैं, बेचारी असहाय-बेबस होकर अपना सारा जीवन आँखों के आँसू पोंछते हुए बिताती है। होनी को कोई नहीं रोक सकता।

दो पण्डितों की अलग-अलग सलाह उलझन में डाल देती है। हर व्यक्ति की सोचने समझने की शक्ति अलग-अलग होती है, सभी की एक राय नहीं होती है। हमें पण्डितों के चक्कर में नहीं उलझकर अपने विचारों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

हमें नौकरीपेशा व शहरी व्यक्ति का मोह त्याग देना चाहिए, कारण कि आज सरकार के पास हमारे लिए नौकरियाँ नहीं हैं और हम नौकरी तलाश रहे हैं, कहाँ से मिलेगी नौकरी? बिजनसमेन व्यक्ति उद्योग लगाकर कई व्यक्तियों को नौकरी दे सकता है। गाँव हो या शहर, उससे क्या फर्क पड़ता है, रहने को तो मकान चाहिए जो सभी के पास होता है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हमें लड़का-लड़की सुशील, समझदार व संस्कारयुक्त होने पर जन्मपत्रियों का मिलान नहीं होने पर भी विवाह सम्बन्ध कर लेने चाहिए। इससे समाज का विघटन नहीं होगा, घर में समाज की लड़की आयेगी तथा विवाह सम्बन्धी समस्याएँ नहीं रहेंगी। लड़के-लड़कियों की उम्र भी ज्यादा नहीं होगी तथा बच्चे अपनी मर्यादा का उल्लघंन नहीं करेंगे।

जन्म-पत्रियों का मिलान हो जाय तो उत्तम, अन्यथा हमें इन सब बातों को छोड़कर सीधा सरल तरीका अपनाना चाहिए। योग्य वर-वधू मिलने पर सम्बन्ध कर देने चाहिए। पति-पत्नी को अपने दाम्पत्य जीवन को सुरक्षित रखने के लिए अपने 'अहम्' का त्याग कर एक दूसरे का विश्वास जीतना चाहिए। शंका होने पर तुरन्त समाधान करना चाहिए।

एक दूसरे की समस्या को समझकर उसको दूर करना चाहिए, एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए, प्रेम भाव रखना चाहिए, अपनत्व रखना चाहिए। इससे परिवार में आपसी सामंजस्य बना रहेगा तथा वैवाहिक जीवन सफल बनेगा।

-पुष्पा मेहता, पीपाड़ सिटी (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (35)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह आठवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अप्रेल 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.436 से 500 तक से प्रश्न)

एक के उत्तर संख्या में दीजिये:-

1. उपदेश माला में ....गाथाएँ हैं।
2. मदुरा में ....जैन श्रमणों को घाणी में पिलवा दिया।
3. अपूर्ण रही हुई वृत्ति को..... श्लोक परिमाण में पूर्ण किया।
4. नरसिंह वर्मन का शासनकाल....... से ....ई. माना गया है।
5. श्रमण भगवान महावीर के ....वें पट्टधर आचार्य श्री हरिषेण हुए।

इन प्रश्नों के भी उत्तर दीजिये:-

6. जैनों पर शैवों द्वारा किये गये अत्याचारों के सम्बन्ध में किसने लिखा?
7. 14 वर्ष की अल्प वय में श्रमण धर्म की दीक्षा किसने ग्रहण की?
8. आगम का दूसरों को ज्ञान कराने वाला गौतम को ही माना है, सुधर्मा को नहीं, वह कौन?

9. चतुर्दशी के दिन पाक्षिक प्रतिक्रमण करने की परिपाटी किसने प्रारम्भ की ?
10. उच्चकोटि की विदुषी साध्वी किसकी शिष्या थी ?
11. मैं कवि भी हूँ, वादी भी हूँ और पण्डित भी हूँ, ये वाक्य किसके हैं ?
12. विद्वान् कवि वादीभसिंह के गुरु का नाम क्या है ?
13. 'कुवलयमाला' नामक ग्रन्थ की रचना किसने की ?
14. हाथी, नाग और गाय के आकार से मिलती-जुलती पहाड़ियाँ कितनी थी ?
15. वीर प्रभु के 31 वें पट्टधर कौन हुए ?

इन शब्दों के अ पर नाम बताइये:-

16. मामल्लपुरम्
17. बलदेव
18. शिरुत्तोंडा
19. हारिलसूरि
20. पेरिम्पिडुगु मुत्तुरायन (प्रथम)

'हाँ' या 'ना' में उत्तर दीजिये:-

21. जैन श्रमण की दिनचर्या के कठोर कार्यों में कतई छूट नहीं दी।
22. रत्नकरण्ड श्रावकाचार को अन्यकर्तृक सिद्ध किया है।
23. धर्मगुरु पाण्ड्यराज को इस रोग से मुक्त करा देगा वही राजपुरोहित होगा।
24. शताब्दियों से यह आगम जैनों में बड़ा ही लोकप्रिय रहा।
25. पाण्ड्यराज ने उन्हें स्वदेश लौटने की अनुमति प्रदान नहीं की।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (33) का परिणाम

जिनवाणी जनवरी, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर .... व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- जगदीश प्रसाद जैन-कोटा (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- शान्ता महेन्द्र बाफना-नाशिक (नासिक)

तृतीय पुरस्कार- पंकज जैन-अजमेर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. वन्दना अनिल खींचा-सूरत (गुजरात)
2. उमा अग्रवाल-जयपुर (राज.)
3. राजकुमार बांठिया-पाली (राज.)

4. विमला भंसाली-सूरत (गुजरात)

5. बसन्ता मदनलाल संकलेचा-धूले (महा.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता- Smt.Chandlata Mehta-Jaipur, **Rajkumar Banthiya-Pali**, Smt.Pista Gulecha-Jaipur, Anil Kumar Jain-Kota, Manila Parakh-Jaipur, Sushila Tater-Bhilwara, **Uma Agrawal-Jaipur**, Pramila Mehta-Ajmer, Suman Chajed-Jaipur, **Sou.Vandana D/O.Anil kincha-Surat**, Smt.Pramila Mehta-Jaipur, Tara Kumari Runiwal-Jaipur, **Pankaj Jain-Ajmer**, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, **M/S.Shanta Mahendraji Bafna-Nashik**, **Jagdish Prasad Jain-Kota**, **Smt.Basant Madan Lalji Sanklecha-Dhulia**, Vikram .M. Chopra-Coimbator, Lalitha Gadiya-Hyderabad, Anjana .V. Chopra-Coimbator, Prakash Chand Gadiya-Hyderabad, Lalitha Ajit Bafna-Nagpur, Kavita Jain-Mumbai, Ragini Jain-Sawai Madhopur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Smt.Seema Jain W/O.Naresh Jain-Nadbai, Smt.Prasan Gang-Mumbai, H.Vinod Jain-Shimoga, Sudha Daga-Bikaner, Miss.Reema Jain W/o.Mr.Dinesh jain-Ludhiana, **Smt.Vimla Bhansali-Surat**, Mrs.Kamala Singhvi-Jaipur, N.Mahaveer Chand Tater-Chennai, Heera Rameshji Karnawat-Ahmednagar, Kuntal kumari Jain-Jaipur, Bharatsa Mahendra Shah, kalpana Dhhakad-Ajmer, Chitra Shrimal-Merthacity, Ayushi Jain-Nadbai, Chandra kala Dilip Jain-Bhadgwan, Manchand Sukraj-Ghandrgrah, Pramila Mehta-Dudu, Dharmender Jain-Sawai Madhopur.

24.5 अंक प्राप्तकर्ता- Meenakshi Lodha-Gurgaon, Manju Dilip Jain-Mumbai, Hemlata Jain-Beawar (Raj), Sri.P.M.Lunawat-Ahmedabad, Shobha Rajendra Chhajed-algaon, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Sunil Kumar Jain-Karauli, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Sushila .Ranka-Jalgaon, Johari Mal Chajed-Jodhpur, Mrs.Ratan Karnawat-Jaipur, Sou.Leela Bai Prakash Chandji Munot-Ichalkaranji, Mrs.Kanak Badner-Delhi, Hema Kothari-Jaipur, Kapil Kothari-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Shilpa Surana-Ajmer, Mohnot Hansraj Jain-Jaipur, Mrs.R.R.Kothari-Dhulia, Manjula Vasanth Kumar Jain-Mumbai, Sou.Sangita .A. Singhvi-Dhule, Nen Chand Bafna-Jodhpur, Pramila Babulalji Pokhrana-Dhulia, Sou.Vimal Bai Ranulalji Kochar-Nasik, Sou.Bharti Sandeepji Mandlecha-Poona, Sou.Shashikala Pradeepji Lunawat-Nasik, Kanchan Lodha-?, Varsha Anand Badera-Beed (MH), Padam Chand Gandhi-Jodhpur, Smt.Veena Tarunji Kimtee-Rampura (M.P), Hema Kishore Bagmar-Secunderabad, Anshu Jain-Beawar (Raj), Pawan Gugale-M.No.9595379531, Nilima Yogesh Chopda-Ichalkaranji, Subhash Mohanlalji Dhadiwal-Thane, Kamala Surana-Jodhpur, Smt.Kusuam Singhvi-Jodhpur, Sou. Madhubala Pramodkumarji Bora-Ichalkaranji, Prabha Gulecha-Bangalore, Vikas Bamb-Mumbai, Sou.Kusum Preshji Ponmia-Ichalkaranji, Dharam Chandra Dhammani-Ahmedabad, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, Meena Vijay Bora-Mumbai, Chandanmal Palrecha-Jodhpur, Arpit Palrecha-Jodhpur, Pushpa Jain-Jaipur.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Smt.Prasan Kothari-Jodhpur, Dimpal Ostwal-Pali, Jugan Chand Chajed-Jodhpur, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Smt.Vimla .N. Mehta-Jodhpur, Sou.Sarla .Sha.Kankaria-Jalgaon, Sou.Sangeetaji Nensukhji-Jalgaon, Smt.Siddhi Kothari-Balod, Smt.Reena Kothari-Balod,

Mrs.Chanchal Gollechha-jaipur, Sri.Pukh Raj Jain-Ajmer, Pushpa Devi Bardia-jaipur, Sou.Shakuntala Bai Khushal Chandji Khivsara-Jalgaon, Smt.Prasan Kothari-Jodhpur, Sagar Mal Nahar-Chittorgarh, P.Urmila Chordia (Jain)-Surat, Bhopal Chand Sethiya-Jodhpur, Pushpa Surana-jaipur, Neetu Gulecha-Secunderabad, Shobha Nahar-Secunderabad, Ugam Dosi-Secunderabad, Bhagwan Raj Singhvi-Pali, Smt.Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Suraj Nahar-Delhi, Babu Lal Jain-Bharatpur, Preeti Nahar D/O.Sagar Malji Nahar-Chittorgarh, Paras Chand Jain-Bharatpur, Smt.Meera Lohiya W/O.Goutam-Sawai Madhopur, Nirmala H.Surana-Bikaner, Miss.Seema Jain W/O.Sri Jambu Kumarji Jain-Tonk, Smt.Kamalesh Gailra-Ajmer, Dilkhshraj Jain-Baroda, Mohan Bai Prakashmal Lodha-Ajmer, Khimji .R. Shah-Mumbai, Kiran Kothari-jaipur, Sushila Bhandari-Bangalore, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Prem Lata Saand-Pali, Monika jain-Indore (M.P), Gunmala Jain-Mumbai, Lalita Ganechadji Surana-Solapur, Vandana Punamia-Pali, Suresh kumar sand-Pali, Dharmesh punamia-Pali, Deepmala Singhvi-Pali, vandana Lodha-Bhilwara, Sou.Mangala Prakash Gadiya-Jalgoan, Smt.Shiromani Jain-Shahjapur(M.P), Rohit Osawal-Jaipur, Sangeeta Ranka-Faridabad, Smt.Narendra Gopi Chand Bamb-Mumbai, Smt.Kamal Choradia-Jaipur, Sunita Oswal-Jaipur, Meenu Mehta (Jain)-Jaipur, Sunita Doshi-Beawar, Nathmal Kothari-Balod, Jaya Bhandari-Beawar, Parth Jain-Bellary, Kiran Kumar Sugan Chand-Nasik, Rajendra Tejmal Jain-Jalgoan, Smt.Sunita Navlakha-Kota, Smita Rajeshji Runwal-Bijapur, Neelam Jain-Gurgoan, Mrs.Seema Dhing-Udaipur, Meena Choradia-Chennai, Mrs.Chetana .B.Bothra-Mumbai, Mrs.Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Miss.Suvarna Nitinji Bora-Ichalkaranji, Sou.Prakash Bai Premchandji-Bhandara, Parasmal Daulatrajji Baghmar-Barmer (Raj), Leena .M. Jain-Chiplun, Smt.Hansa Jaroli-Udaipur, Smt.Anjana Rajendra Karkani-Dewas, Balwant Singh Chordia-Jhalara Patan, Smitha Nilesh-Ichalkaranji.

23 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Renu Virendra Jain-Mumbai, Poonam Jamer-Jaipur, Suresh Chand Jain-Kherali, Sou.Meenabai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Mrs.Trupti Pritamji Bora-Ichalkaranji, Jyothi Bhansali-Bangalore, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Rajni Bhandari-Gurgoan, Smt.Prem Lata Lodha-jaipur, Sapna Jain-Sawai Madhopur, Usha Bardia-Dhulia, Basanthi Champalal Bhatewara-Dhulia.

आभार

मेरी धर्मसहायिका सौभाग्यवती सुमित्रादेवी जी बाफना के दिनांक 20 जनवरी, 2013 को असामयिक निधन पर देश भर से गुरुभ्राताओं, बहिनों व युवा साथियों से प्रत्यक्षतः व पत्र द्वारा मेरे परिवार का इस वेला में मनोबल बढ़ाया है, वस्तुतः आप-सब प्रेम व पूज्य गुरु भगवन्तों की पावन कृपा ही हमारा संबल है। मैं अपनी ओर से, मेरे पुत्र आदित्य व शुभेन्द्र तथा सभी परिजनों की ओर से आप सबके प्रतिं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। *-ज्ञानेन्द्र बाफना, गुरुचरणरजकृपाकांक्षी*

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 06 जनवरी 2013 को आयोजित जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। जिन्होंने दोनों प्रश्न-पत्रों में मिलाकर सर्वाधिक अंक प्राप्त किये है, उन्हें वरीयता सूची में सम्मिलित किया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 31 मार्च 2013 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

ग्रुप A

विद्यार्थी का नाम	निवास स्थान	प्रथम प्रश्न-पत्र	द्वितीय प्रश्न-पत्र	कुल योग	स्थान
गरिमा निर्मल जैन	सांगरिया	99.50	100.00	199.50	प्रथम
सुषमा संजय रूणवाल	निफाड़	99.25	99.25	198.50	द्वितीय
प्रेमलता विजयचंद कोचर	नागपुर	99.50	99.00	198.50	द्वितीय
प्रीती विजय भण्डारी	विदिशा	98.75	99.25	198.00	तृतीय

ग्रुप B

विद्यार्थी का नाम	निवास स्थान	प्रथम प्रश्न-पत्र	द्वितीय प्रश्न-पत्र	कुल योग	स्थान
वर्षा अशोक सुराणा	घोटी	99.25	99.50	198.75	प्रथम
हेमलता अमित पीपाडा	कोण्डीतोप	99.25	99.50	198.75	प्रथम
प्रभा नरेन्द्रमोहन जैन	सवाईमाधोपुर	98.75	99.75	198.50	द्वितीय
ललिता पदम नाहर	सैदापेट	99.00	99.25	198.25	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

ग्रुप A

(केवल प्रथम प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

106, 111, 198, 199, 200, 303, 921, 931, 939, 945, 947, 949, 1022, 1038, 1055, 1060, 1071, 1083, 1155, 1156, 1163, 1178, 1179, 1246, 1248, 1253, 1266, 1299, 1307, 1397, 1415, 1437, 1447, 1501, 1656, 1750, 1837, 2029, 2046, 2066, 2123, 2129, 2231, 2246, 2431, 2472, 2473, 2474, 2476, 2478, 2480, 2518, 2519, 2521, 2545, 2551, 2553, 2554, 2562, 2563, 2572, 2574, 2575, 2579, 2581, 2582, 2584, 2585, 2626, 2627,

2628, 2632, 2636, 2637, 2638, 2639, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2647, 2649, 2670, 2748, 2779, 2789, 2791, 2796, 2805, 2812, 2813, 2835, 2841, 2843, 2845, 2847, 2880, 2881, 2889, 2901, 2902, 2940, 2956, 2980, 2991, 2996, 2997, 2999, 3001, 3002, 3003, 3005, 3007, 3012, 3092, 3093, 3100, 3106, 3110, 3111, 3133, 3137, 3141, 3143, 3144, 3146, 3147, 3148, 3169, 3174, 3179, 3192, 3196, 3201, 3205, 3207, 3217, 3219, 3223, 3246, 3255, 3271, 3298, 3300, 3320, 3322, 3324, 3327, 3328, 3330, 3331, 3334, 3335, 3337, 3338, 3339, 3340, 3341, 3342, 3344, 3345, 3350, 3351, 3352, 3353, 3354, 3355, 3359, 3362, 3363, 3365, 3366, 3367, 3368, 3369, 3370, 3371, 3372, 3373, 3397, 3398, 3402, 3403, 3416, 3422, 3430, 3431, 3446, 3447, 3448, 3449, 3450, 3451, 3453, 3454, 3455, 3457, 3459, 3482, 3490, 3496, 3497, 3498, 3499, 3505, 3516, 3521, 3522, 3532, 3534, 3545, 3546, 3549, 3553, 3558, 3559, 3560, 3561, 3580, 3589, 3590, 3594, 3595, 3608, 3610, 3615, 3616, 3640, 3641, 3643, 3644, 3650, 3654, 3668, 3670, 3671, 3674, 3681, 3682, 3683, 3684, 3686, 3687, 3688, 3689, 3690, 3692, 3693, 3695, 3703, 3707, 3715, 3716, 3720, 3723, 3724, 3726, 3728, 3731, 3733, 3736, 3741, 3747, 3749, 3750, 3751, 3752, 3755, 3757, 3758, 3759, 3783, 3787, 3792, 3793, 3795, 3796, 3800, 3802, 3804, 3805, 3807, 3820, 3824, 3825, 3826, 3827, 3828, 3829, 3835, 3840, 3849, 3851, 3869, 3873, 3887, 3889, 3897, 3898, 3899, 3902, 3903, 3904, 3907, 3910, 3911, 3913, 3914, 3915, 3916, 3924, 3926, 3927, 3930, 3938, 3941, 3943, 3954, 3955, 3958, 3959, 3969, 3974, 3978, 3979, 3980, 3981, 3982, 3995 (Total Student : **330**)

(केवल द्वितीय प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

3, 108, 210, 224, 225, 226, 228, 231, 232, 233, 285, 347, 444, 447, 485, 487, 496, 504, 567, 609, 610, 615, 616, 617, 620, 624, 625, 626, 627, 635, 693, 743, 831, 856, 858, 864, 865, 874, 877, 878, 879, 943, 1031, 1034, 1042, 1045, 1047, 1053, 1054, 1072, 1113, 1127, 1158, 1161, 1162, 1165, 1172, 1176, 1185, 1207, 1249, 1255, 1263, 1264, 1270, 1283, 1286, 1287, 1302, 1308, 1320, 1354, 1391, 1425, 1429, 1432, 1433, 1485, 1487, 1488, 1497, 1499, 1504, 1507, 1508, 1512, 1517, 1518, 1519, 1536, 1543, 1544, 1585, 1586, 1588, 1595, 1596, 1597, 1598, 1599, 1654, 1660, 1682, 1683, 1712, 1715, 1774, 1782, 1790, 1805, 1808, 1811, 1812, 1814, 1816, 1817, 1818, 1821, 1822, 1823, 1832, 1834, 1835, 1909, 1940, 2021, 2028, 2057, 2061, 2063, 2065, 2068, 2069, 2071, 2110, 2193, 2200, 2201, 2257, 2277, 2392, 2398, 2419, 2441, 2446, 2458, 2713, 2800, 3101, 3103, 3104, 3105, 3436, 3562, 3563, 3565, 3569, 3570, 3571, 3573, 3574, 3769, 3770, 3771, 3772, 3775, 3900, 3901, 3922, 3923, 3940, 3944, 3945, 3947, 3948, 3949, 3950, 3951, 3952, 3953 (Total Student : **180**)

(प्रथम एवं द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

केवल प्रथम प्रश्न-पत्र में उत्तीर्ण- 173, 391, 1777, 1868, 2535, 2550, 2568, 2609, 2616, 2671, 2672, 2769, 2807, 2840, 2992, 3159, 3228, 3270, 3290, 3414, 3437, 3439, 3441, 3442, 3444, 3445, 3866, 3867 (Total Student : **28**)

केवल द्वितीय प्रश्न-पत्र में उत्तीर्ण- 741, 2032, 2703, 2762, 2795, 2869, 2966, 2970, 2984, 3191, 3432 (Total Student : **11**)

प्रथम व द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण- 8, 9, 32, 38, 66, 70, 89, 90, 97, 98, 99, 112, 128, 142, 192, 196, 211, 212, 245, 324, 326, 327, 329, 333, 441, 465, 514, 536, 542, 672, 688, 721, 744, 816, 884, 887, 892, 897, 909, 910, 916, 923, 942, 960, 1028, 1030, 1033, 1061, 1064, 1096, 1122, 1149, 1199, 1241, 1245, 1272, 1321, 1337, 1396, 1441, 1449, 1569, 1571, 1572, 1573, 1688, 1696, 1744, 1748, 1749, 1780, 1788, 1844, 2105, 2107, 2133, 2162, 2183, 2206, 2481, 2485, 2486, 2487, 2496, 2500, 2502, 2508, 2509, 2510, 2513, 2523, 2532, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2543, 2546, 2547, 2556, 2557, 2558, 2559, 2565, 2567, 2569, 2593, 2603, 2610, 2611, 2617, 2618, 2630, 2634, 2653, 2654, 2656, 2658, 2659, 2661, 2663, 2664, 2665, 2667, 2668, 2669, 2674, 2678, 2679, 2680, 2682, 2685, 2689, 2690, 2691, 2692, 2694, 2695, 2696, 2697, 2698, 2699, 2700, 2701, 2702, 2705, 2706, 2708, 2709, 2710, 2711, 2712, 2714, 2715, 2719, 2720, 2721, 2722, 2723, 2724, 2725, 2726, 2727, 2728, 2733, 2736, 2737, 2739, 2741, 2742, 2743, 2744, 2749, 2752, 2759, 2760, 2763, 2767, 2770, 2771, 2774, 2780, 2792, 2802, 2803, 2816, 2817, 2818, 2819, 2822, 2823, 2824, 2825, 2827, 2828, 2830, 2833, 2834, 2836, 2838, 2842, 2850, 2861, 2882, 2883, 2884, 2886, 2891, 2893, 2894, 2896, 2897, 2898, 2911, 2913, 2914, 2915, 2916, 2917, 2918, 2919, 2920, 2923, 2925, 2926, 2927, 2928, 2929, 2930, 2931, 2932, 2933, 2934, 2935, 2941, 2943, 2945, 2946, 2947, 2948, 2949, 2951, 2952, 2953, 2954, 2960, 2961, 2962, 2972, 2973, 2974, 2976, 2979, 2983, 2988, 2989, 2993, 2998, 3019, 3020, 3022, 3026, 3029, 3030, 3044, 3045, 3046, 3047, 3051, 3052, 3053, 3054, 3055, 3057, 3058, 3075, 3080, 3085, 3086, 3094, 3096, 3098, 3107, 3108, 3112, 3113, 3116, 3117, 3118, 3126, 3128, 3131, 3149, 3150, 3165, 3167, 3171, 3172, 3176, 3177, 3180, 3182, 3186, 3193, 3195, 3199, 3200, 3209, 3210, 3211, 3212, 3215, 3216, 3220, 3222, 3224, 3225, 3227, 3229, 3230, 3231, 3235, 3236, 3237, 3238, 3239, 3241, 3242, 3243, 3244, 3247, 3253, 3262, 3272, 3273, 3274, 3307, 3308, 3311, 3313, 3314, 3317, 3318, 3319, 3347, 3358, 3360, 3361, 3374, 3375, 3376, 3377, 3380, 3381, 3382, 3405, 3411, 3413, 3418, 3420, 3426, 3428, 3434, 3435, 3438, 3443, 3452, 3463, 3464, 3465, 3466, 3469, 3474, 3478, 3480, 3481, 3483,

3485, 3486, 3487, 3493, 3494, 3501, 3502, 3504, 3508, 3509, 3510, 3511, 3512, 3513, 3515, 3530, 3531, 3533, 3535, 3540, 3541, 3556, 3557, 3564, 3566, 3567, 3576, 3577, 3581, 3582, 3583, 3584, 3586, 3588, 3591, 3592, 3593, 3600, 3601, 3603, 3606, 3607, 3609, 3612, 3613, 3614, 3617, 3618, 3620, 3621, 3622, 3623, 3635, 3637, 3642, 3655, 3656, 3657, 3659, 3660, 3661, 3662, 3663, 3698, 3702, 3706, 3711, 3712, 3717, 3718, 3739, 3740, 3745, 3754, 3760, 3761, 3768, 3776, 3777, 3781, 3784, 3785, 3797, 3798, 3819, 3822, 3823, 3831, 3845, 3847, 3865, 3870, 3871, 3876, 3879, 3886, 3892, 3893, 3894, 3895, 3896, 3906, 3908, 3909, 3912, 3917, 3918, 3919, 3920, 3921, 3931, 3932, 3933, 3934, 3935, 3936, 3937, 3939, 3942, 3946, 3957, 3961, 3962, 3963, 3964, 3965, 3966, 3967, 3968, 3970, 3971, 3973, 3975, 3976, 3983, 3984, 3985, 3986, 3987, 3988, 3991, 3992, 3993, 3994 (Total Student: **522**)

ग्रुप B

(केवल प्रथम प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

87, 155, 268, 443, 445, 460, 493, 503, 508, 510, 513, 515, 516, 930, 970, 973, 1025, 1077, 1129, 1210, 1260, 1275, 1317, 1359, 1369, 1375, 1376, 1420, 1491, 1524, 1642, 1643, 1809, 2001, 2002, 2072, 2237, 2259, 2260, 2279, 2281, 3009 (Total Student: **43**)

(केवल द्वितीय प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

178, 946, 2395 (Total Student: **3**)

(प्रथम व द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

केवल प्रथम प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण- 121, 167, 1367, 1368, 1542, 1559, 1644, 1723, 1994, 2309, 2338 (Total Student: **11**)

केवल द्वितीय प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण- 191, 246, 450, 482, 1099, 1124, 1440, 1661, 1767, 2104, 2147, 2276 (Total Student: **12**)

प्रथम व द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण- 2, 5, 6, 7, 10, 12, 13, 22, 23, 24, 26, 27, 28, 31, 33, 34, 35, 37, 41, 45, 50, 51, 55, 57, 68, 71, 77, 79, 82, 83, 85, 86, 93, 94, 96, 113, 114, 117, 125, 129, 130, 131, 133, 134, 138, 141, 153, 157, 159, 160, 176, 179, 180, 190, 201, 202, 204, 206, 221, 243, 244, 250, 252, 257, 261, 288, 294, 297, 299, 304, 313, 337, 344, 345, 357, 358, 363, 370, 374, 376, 389, 390, 410, 411, 412, 413, 415, 416, 417, 421, 424, 425, 426, 427, 428, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 449, 463, 473, 474, 475, 477, 478, 479, 480, 481, 483, 489, 494, 518, 521, 526, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 538, 543, 547, 557, 559, 568, 569, 570, 574, 575, 576, 580, 581, 582, 583, 584, 588, 589, 590, 592, 593, 594, 602, 629, 632, 633, 637, 638, 639, 641, 665, 667, 668, 669, 670, 671, 675, 686, 708, 711, 712, 723, 727, 728, 729, 734, 750, 752, 754, 766, 781, 782, 784, 805, 807, 809, 813, 817, 819, 822, 825, 826, 828, 829, 832, 834, 836, 838, 842, 843, 859, 861, 863, 868, 880, 885, 888, 889, 891, 913, 914, 915, 926, 928, 934, 937, 940, 944, 950, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 961, 965, 966, 969, 974, 978, 982, 987, 996, 1004, 1015, 1016, 1017, 1019, 1032, 1079, 1082, 1100, 1101, 1104, 1107, 1108, 1115, 1117, 1123, 1126, 1130, 1141, 1146, 1148, 1151, 1152, 1168, 1181, 1182, 1184, 1189, 1190, 1208, 1218, 1254, 1273, 1278, 1282, 1292, 1303, 1310, 1313, 1334, 1336, 1344, 1346, 1349, 1350, 1352, 1353, 1355, 1356, 1358, 1360, 1362, 1363, 1364, 1365, 1366, 1373, 1378, 1383, 1389, 1392, 1399, 1435, 1436, 1438, 1439, 1448, 1452, 1454, 1455, 1456, 1461, 1462, 1463, 1471, 1475, 1478, 1479, 1480, 1481, 1482, 1483, 1484, 1492, 1495, 1498, 1500, 1506, 1520, 1527, 1531, 1532, 1533, 1534, 1539, 1540, 1545, 1546, 1548, 1549, 1550, 1552, 1553, 1555, 1556, 1557, 1558, 1560, 1564, 1565, 1568, 1574, 1575, 1576, 1577, 1578, 1579, 1580, 1678, 1680, 1685, 1687, 1691, 1694, 1695, 1706, 1707, 1709, 1710, 1711, 1714, 1734, 1735, 1739, 1740, 1743, 1747, 1755, 1756, 1757, 1769, 1773, 1781, 1783, 1792, 1793, 1810, 1813, 1827, 1830, 1838, 1991, 1992, 1993, 1997, 1998, 2015, 2016, 2018, 2019, 2020, 2026, 2035, 2039, 2040, 2044, 2060, 2064, 2067, 2074, 2075, 2077, 2084, 2093, 2094, 2099, 2100, 2103, 2111, 2126, 2127, 2132, 2135, 2136, 2137, 2149, 2150, 2151, 2163, 2192, 2195, 2197, 2224, 2227, 2228, 2233, 2235, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2256, 2262, 2264, 2265, 2266, 2294, 2307, 2308, 2321, 2339, 2341, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2354, 2355, 2356, 2360, 2362, 2363, 2364, 2365, 2393, 2394, 2396, 2401, 2402, 2409, 2410, 2412, 2413, 2414, 2416, 2418, 2422, 2423, 2425, 2427, 2428, 2445, 2450, 2452, 2453, 2457, 2459, 2460, 2648, 2718, 2729, 3188, 3189, 3604, 3972, 3989, 3990 (Total Student: **499**)

परिणाम रोका गया

1075, 1139, 1880, 1905, 2417, 3872.

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल केन्द्र
2787	1889	1567	82.95%	157

बोर्ड की आगामी परीक्षा 30 जून, 2013 को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 30 जून, 2013 रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। आवेदन फार्म संलग्न है। आवेदन-पत्र, सम्बन्धित कक्षा की पुस्तकें प्राप्ति हेतु तथा परीक्षा-सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें: website : www.jainratnaboard.com, Email-info@jainratnaboard.com

सुरेश चोरडिया	नवरतन गिड़िया	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार	कार्यालय
094440-28841	094141-00759	093515-89694	0291-2630490

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान : जयपुर
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4. प्रकाशक का नाम : विनय चन्द डागा
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम : डॉ. धर्मचन्द जैन
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते: जिनका पत्र पर स्वामित्व है : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

मैं विनय चन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2013

हस्ताक्षर- विनय चन्द डागा
प्रकाशक

'स्वप्निका' के माध्यम से श्रद्धाभिव्यक्ति करें

तीर्थंकर भगवन्तों की माताओं के शुभ स्वप्नों से निसृत अनुभूतियाँ शब्दों के वस्त्र पहनकर वृहत्तर समाज के साधनार्थ स्वप्निका के रूप में प्रकट हुई है। 'स्वप्निका' में अन्तर्निहित शब्द मात्र ज्ञान व साहित्य के कागज नहीं वरन् वे प्रकाशवान, प्राणवान ऊर्जा के उद्‌गम हैं। स्वप्निका के अक्षर व त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा अगम्य ज्ञान की प्रखर प्रामाणिक पाठशाला की आधारशिला व व्यक्तित्व के रूपान्तरण की वैज्ञानिक प्रयोगशाला की भाँति है। आकर्षक कलेवर, मनमोहन शब्दावली, प्रभावी प्रस्तुतिकरण व साधना में चरण बढ़ाने वाले प्रत्याख्यानों की रूपरेखा से सुसज्जित 'स्वप्निका' के माध्यम से सभी साधकगण त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर आचार्य हीरा व उपाध्याय मान को अपनी सच्ची व श्रेष्ठ श्रद्धाभिव्यक्ति करें।

कैलाश हीरावत

दिनांक : 11.02.2013

कैलाश चन्द्र हीरावत
सह-संयोजक, शासन सेवा समिति

'स्वप्निका' मेरे मन को भा गयी

1. चतुर्विध संघ के चहेते, चतु: धर्म के चितेरे, पूज्य आचार्य भगवन्त एवं पूज्य उपाध्याय भगवन्त के संयम जीवन के 50वें वर्ष को व्रत-नियमों के द्वारा मनाने के का 'स्वप्निका' के माध्यम से श्री संघ को सुनहरा लाभ प्राप्त हो रहा है।
2. 'स्वप्निका' हीरे की तरह छोटी होती हुई भी अनमोल और महत्त्वपूर्ण पुस्तिका है, जो मेरे मन को भा गई।
3. मैं नमन करना चाहता हूँ सुमति चन्द मेहता को, जिन्होंने 'नमन' जैसे पुत्र को जन्म दिया।
4. 'स्वप्निका' को आधार बनाकर हम आराध्य की स्तुति करें और इस लोकोपयोगी प्रयास को सफल बनाएँ व आत्म-साधना के पथ पर अग्रसर हों।

इन्हीं शुभभावनाओं के साथ.......

दिनांक : 31.01.2013

पी.एस. सुराणा
कार्याध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आवश्यक सूचना

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी सुप्रसंगे प्रस्तुत सुरम्य पुस्तिका 'स्वप्निका', जिसकी खुली किताब प्रतियोगिता 23 मई, 2013 को रखी है, उसमें जो स्वप्निका भरने वाले भाग लेना चाहते हैं, वे निम्न व्यक्तियों में से किसी एक के पास अपना रजिस्ट्रेशन करा रजिस्ट्रेशन नम्बर अवश्य ही ले लेंवे-

1.	श्री नमन जी मेहता	मो. 094141-16766
2.	श्री तरुण जी	मो. 091661-90574
3.	श्रीमती उर्मिला जी बोथरा	मो. 093145-01856
4.	डॉ. मंजुला जी बम्ब	मो. 093142-92229
5.	श्रीमती मोना जी गोलेच्छा	मो. 093144-66039

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

ॐकार : एक अनुचिन्तन- उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म., ***प्रकाशक***- श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर-313001(राज.) दूरभाष-0294-2413518, ***पृष्ठ***- 12+108, ***मूल्य***-30 रुपये, द्वितीय संस्करण 2012

'ॐकार' भारतीय परम्परा का महत्त्वपूर्ण शब्द है। इसे प्रणव भी कहा गया है। इसे ईश्वर अथवा ब्रह्म का वाचक भी स्वीकार किया गया है। यह ब्रह्मा (अ), विष्णु (उ) एवं महेश (म्) का भी वाचक है। जैन परम्परा में भी 'ॐ' को आवश्यक निर्युक्ति में परमेष्ठी (अ+अ+आ+उ+म्) का वाचक अंगीकार किया गया है। जैन ग्रन्थ में मंगलाचरण के रूप में कहा गया है-

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः।।

उपाध्याय पुष्कर मुनि जी ने प्रस्तुत पुस्तक में ॐकार की महिमा, उसकी सर्वमान्यता, निष्पत्ति, उद्‌गम, जाप आदि पर प्रकाश डालने के साथ मनोविजय एवं ध्यानयोग में भी इसकी महत्ता अंगीकार की है। इस प्रसंग से ध्यानयोग, भक्तिसाधना एवं पंच महाव्रत, नवपद एवं मिथ्यात्वादि पांच आस्रव हेतुओं की भी चर्चा की गई है। पुस्तक के प्रथम संस्करण का सम्पादन आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी एवं पं. शोभाचन्द्र जी भारिल्ल द्वारा 1964 में किया गया था। द्वितीय संस्करण का प्रकाशन उपाध्याय श्री के 103 वें जन्म-दिवस पर किया गया है।

जिज्ञासा-समाधान (प्रथम भाग)- श्री धर्मचन्द जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003, फोन-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, Email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***-6+234, ***मूल्य***-25 रुपये, सन्-2012

आगम के विविध विषयों को आधार बनाकर जिनवाणी मासिक पत्रिका में विगत 7-8 वर्षों से श्री धर्मचन्द जैन द्वारा 'आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ' शीर्षक के अन्तर्गत जो लेखन किया जा रहा था, उसे 'जिज्ञासा-समाधान' (प्रथम भाग) के रूप में प्रकाशित किया गया है। समकित के भेद-प्रभेद, परीषह, गुणस्थान स्वरूप, कायस्थिति, समुद्‌घात, औदारिक-वैक्रिय, आहारक काययोग, पंचविध निर्ग्रंथ आदि से सम्बद्ध प्रश्नोत्तरों के रूप में इस पुस्तक में उपयोगी सामग्री संकलित है, जो जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं, नव दीक्षित सन्त-सतियों आदि के

लिए पठनीय है। पुस्तक का प्रकाशन गुरु हीरा-गुरुमान के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में किया गया है।

सबको प्यारे प्राण- रतनलाल सी. बाफना (संकलनकर्त्ता), ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003, फोन-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, Email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***-16+144, ***मूल्य***-25 रुपये, सन् 2012

अहिंसा एवं शाकाहार के प्रति समर्पित व्यक्तित्व श्री रतनलाल सी. बाफना ने समय-समय पर अपनी डायरियों में अहिंसा एवं शाकाहार से सम्बद्ध विविध विचारों, लेखांशों, कविताओं, प्रेरक प्रसंगों आदि का संकलन किया था, जिन्हें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा की प्रेरणा से पुस्तकाकार रूप दिया गया है। पुस्तक का कुशल सम्पादन कवि डॉ. दिलीप धींग ने मनोयोग से किया है।

पुस्तक के गद्य भाग में 64 तथा पद्य भाग के अन्तर्गत 19 शीर्षकों में सामग्री संयोजित है। अन्त में दो परिशिष्ट हैं जो माननीय बाफना साहब के अहिंसा एवं शाकाहार मिशन को प्रतिबिम्बित करते हैं, जिनमें 'आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्त्ता अवार्ड' एवं 'अहिंसा-तीर्थ' का परिचय दिया गया है।

हमारे उपासक- श्रमणसंघीय सलाहकार श्री दिनेश मुनिजी, ***प्रकाशक***- श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर-313001 (राज.), फोन-0294-2413518, ***पृष्ठ***-82, ***मूल्य***-20 रुपये, सन् 2012

'उवासगदसाओ' अंग आगम में भगवान महावीर के 10 श्रावकों का वर्णन आता है। श्री दिनेशमुनि जी ने उसी वर्णन को आधार बनाकर आनन्द, कामदेव, चुलनीपिता, सुरादेव, चुल्लशतक, कुण्डकौलिक, शकडालपुत्र, महाशतक, नन्दिनीपिता एवं सालिहीपिता नामक श्रमणोपासकों का कथानक रोचक शैली में प्रस्तुत किया है, जिसमें आगम का हार्द हृदयंगम हो जाता है।

समाधान यात्रा (भाग-1)- आचार्य श्री जयघोषसूरीश्वरजी, ***प्रकाशक***- दिव्यदर्शन ट्रस्ट, 39, कलिकुंड, मकलीपुर चार रास्ता, धोलका-387810 (गुजरात) ***अन्य प्राप्ति स्थान***- अरविन्द भाई जे. शाह, 89, शेख मेनन स्ट्रीट, दूसरा माला, मुम्बई-400002 (महा.), ***पृष्ठ***-272, ***मूल्य***-60 रुपये, ***हिन्दी संस्करण***-2012

प्रस्तुत पुस्तक में देवता, गुरु, ज्ञान, सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चक्खाण, आहार, सम्यक्त्व, सामाचारी, कर्मग्रन्थ प्रकीर्णक/विविध, देवद्रव्योपयोग, गुरुद्रव्य, देव-देवी द्रव्य आदि विषयों पर लगभग 500 प्रश्नोत्तरों का संकलन है। गुजराती भाषा में प्रकाशित प्रश्नोत्तरों का यह हिन्दी रूपान्तरण है।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(28 फरवरी, 2013)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7 जयपुर से विहार कर चाकसू, रामपुरा, कोथुन, मुण्डिया, निवाई, पहाड़ी, पराना, नटवाड़ा, सिवाड़, सारसोप आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए आज ढिण्डास पधारे हैं। अग्रविहार पावडेढा, चौथ का बरवाड़ा होते हुए अलीगढ़-रामपुरा की ओर संभावित है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पड़ितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 गोटन से विहारकर टालनपुर, धनप्पा, खवासपुरा, चौकड़ी, सियारा, कोसाना, साथीन आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए पीपाड़शहर पधारे हैं। कुछ दिन यहाँ विराजकर अग्रविहार जोधपुर की ओर संभावित है।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर से विहार कर चाकसू, मुण्डिया, निवाई, चौथ का बरवाड़ा, चौरू आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए अलीगढ़-रामपुरा पधारे। अग्रविहार कोटा की ओर संभावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक से विहारकर सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा पधारे हैं। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 बड़ौद से विहारकर डग, पगारिया, बोलिया, मिश्रोली, पचपहाड़, भवानी मण्डी आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए भैंसौदा मण्डी पधारे। अग्रविहार कोटा की ओर संभावित है।
- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 मेड़तासिटी से विहारकर बौरूंदा, हरियाढाणा, रणसीगांव, पीपाड़शहर आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए सेठों की रियां पधारे हैं। अग्रविहार जोधपुर की ओर चल रहा है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 जयपुर के बापूनगर, तिलकनगर आदि क्षेत्रों को फरसते हुए रतन स्वाध्याय भवन सुखशांतिपूर्वक विराजमान हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 सवाईमाधोपुर से विहारकर बजरिया, कुश्तला, पचाला, चौरू आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए अलीगढ़ रामपुरा पधारे हैं। महासतीवृन्द के पोरवाल क्षेत्र में विचरने की संभावना है।

- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 नसीराबाद से विहारकर किराप, जामोला आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए मसूदा पधारे हैं। मसूदा के आसपास क्षेत्रों में विचरने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 गुलाबपुरा, सेलड़ी आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए भीलवाड़ा पधारे हैं। अग्रविहार शाहपुरा-केकड़ी की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 जयपुर के उपनगरों को फरसकर राव का फार्म हाउस, कालवाड़ आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए खेजड़ावास पधारे हैं। अग्रविहार जोबनेर की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 नागौर से विहार कर बारानी, अलाय, नोखा, रानीसर, देशनोक आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए पलाना पधारे। अग्रविहार बीकानेर की ओर चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 सेलम, कलाकुर्ची, चारदुर्गम, ऋषिवनम आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए त्रिरकोयलूर पधारे हैं। अग्रविहार तिरूवन्नमलाई की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 कडनूर से विहारकर सेलम, कलाकुर्ची, चारदुर्गम आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए ऋषिवनम् पधारे हैं। अग्रविहार तिरूवन्नमलाई की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 औरंगाबाद के उपनगरों को फरसते हुए जालना पधारे हैं। जालना के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 बडेर से विहार कर सैंथली, बड़ौदामेव, रामगढ़ आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए नौगांवा पधारे है। पल्लीवाल क्षेत्र में विचरने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 मेड़ता से विहारकर गोटन, खारिया खंगार, खांगटा, साथीन आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए पीपाड़शहर पधारे हैं। अग्रविहार जोधपुर की ओर संभावित है।
- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 जयपुर के उपनगरों को फरसकर जयपुर से शिवदासपुरा होते हुए चाकसू पधारे हैं। अग्रविहार टोंक की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 श्योपुरकला से विहारकर सोई, ांतरदा, भरावंडा, बोदल, लहसोड़ा, फलोदीक्वारी, कुशालीधरा आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए पटेल नगर बजरिया पधारे हैं। पोरवाल क्षेत्र में विचरने की संभावना है।

आचार्यप्रवर का जयपुर से सवाईमाधोपुर क्षेत्र की ओर विहार, श्रावकों में अपूर्व उत्साह

आगममर्मज्ञ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 7 का जयपुर से चौथ का बरवाड़ा एवं अलीगढ़-रामपुरा की ओर विहार चल रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर का जहाँ-जहाँ भी विचरण हुआ, उनके आचार पक्ष एवं प्रभावी प्रवचन शैली से हर वर्ग का श्रावक प्रभावित हुआ है। दक्षिण प्रवास के समय साधना सम्पन्न विशिष्ट क्रिया वाली छवि आज भी वहाँ के भाई-बहिनों की स्मृति में है। फलस्वरूप वहाँ के भाई-बहिन इधर आने पर दर्शनों का लाभ लेने का लक्ष्य रखते हैं।

जयपुर में 27 जनवरी को सम्पन्न दीक्षा के पश्चात् राष्ट्रीय कोन्फ्रेंस के मानद् संरक्षक श्री केसरीमल जी बुरड़ ने 28 जनवरी को मानसरोवर जयपुर में पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनों का लाभ लिया। श्री महेश जी सेठी की धर्मपत्नी श्रीमती लाड़कंवर देवी ने 85 वर्ष की वय में संथारा स्वीकार करने की भावना पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में प्रेषित की, किन्तु चांदपोल की दूरी अधिक होने के कारण आचार्यप्रवर ने सुज्ञ श्रावक के माध्यम से संथारा करवाया। 31 जनवरी को जब आचार्यप्रवर पद्मावती पोरवाल भवन, गौरी विहार में विराज रहे थे, तब धर्मदासजी की परम्परा के क्रियानिष्ठ संतरत्न श्री कानमुनि जी के सान्निध्य में दीक्षित होने वाले मुमुक्षु बोदवड़ निवासी श्री कपिल जी कांकरिया उपस्थित हुए जहाँ उनका सम्मान किया गया। 2 फरवरी को महारानी फार्म के सिडलिंग स्कूल में बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई। 3 फरवरी को शांतिनगर में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने परिवार सहित गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लिया। 4 व 5 फरवरी को पूज्य प्रवर महावीर नगर विराजे। 6 फरवरी को गोकुलवाटिका में खोह ग्राम का संघ महासती मण्डल के चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। 7 फरवरी को सांगानेर पधारकर गुरुदेव श्री अभयराज जी हींगड़ की भावना को साकार किया। 8 फरवरी को प्रतापनगर पधारे जहाँ चेन्नई-हैदराबाद एवं ब्यावर निवासी श्री भंवरलाल जी डोसी के परिवारजन ने दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। पूज्यप्रवर यहाँ 10 फरवरी तक विराजे। सुश्रावक श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा एवं श्री प्रकाशचन्द जी ढड्ढा ने 2 जून 2012 से 10 फरवरी 2013 तक गुरुदेव की सन्निधि में प्रतिदिन रात्रिसंवर साधना की। यहाँ प्रतापनगर सांगानेर संघ ने चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। यहाँ से 11 फरवरी को विहारकर एन.आर.आई. कॉलोनी, के.जी.कोठारी फार्म हाउस, बीलवा, कठवला होते हुए 15 फरवरी को चाकसू पधारे। यहाँ पर श्री विनोदकुमार जी बरगमा वाले,

श्री भागचन्द जी भंवरलाल जी झामड़ ओस्तवाल परिवार ने श्रद्धा भक्ति के साथ तीन दिन सेवा का लाभ लिया। यहाँ पर चेन्नई, बैंगलोर, मैसूर, अहमदाबाद, धूलिया, लासुर, गोटन संघ सदस्यों के साथ ज़ामोला संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्य गुरुदेव के चरणों में उपस्थित हुआ। यहाँ से 18 फरवरी को विहार करते हुए रामपुरा बुजुर्ग, कोथून, मुण्डिया होते हुए 21 फरवरी को निवाई की धरा पर पदार्पण हुआ। उल्लेखनीय है कि महावीर नगर जयपुर निवासी समर्पित गुरु भक्त लोढ़ा परिवार, सिंघवी परिवार, सुराणा परिवार ने विचरण विहार में पैदल सेवा का लाभ निवाई पहुँचने तक लिया। निवाई में 21 फरवरी को अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, टोंक, देई, उनियारा के संघ सदस्य फाल्गुनी चौमासे की विनति लेकर पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट शब्दों में फरमाया कि पोरवाल संघ में जागृति हेतु जो संघ सामूहिक भोज में रात्रि भोजन का त्याग करता है वहाँ होली चातुर्मासी करने की भावना है। यहाँ से 22 फरवरी को सायंकाल वन-विभाग की चौकी पर पधारे। 23 फरवरी को विहार कर पहाड़ी पधारे। यहाँ अलीगढ़-रामपुरा संघ द्वारा सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन के त्याग के आशय वाला निवेदन पत्र प्रस्तुत करने पर पूज्य आचार्यप्रवर ने अलीगढ़-रामपुरा संघ को होली चातुर्मासी का लाभ प्रदान करने की स्वीकृति फरमायी, साथ ही चौथ का बरवाड़ा को फरसने की भावना अभिव्यक्त की। पहाड़ी की धरा पर प्रातःकाल 6.27 बजे भूकम्प का आभास हुआ। पूज्यप्रवर द्वारा विराजित धर्मशाला में भी कम्पन की अनुभूति हुई। लेकिन किसी प्रकार की कोई हानि नहीं हुई। 24 फरवरी को पूज्यप्रवर पराना पधारे। यहाँ मण्डावर के संघ सदस्य चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। पूज्य आचार्यप्रवर का 17 वर्ष पूर्व विजयनगर में चातुर्मास हुआ था तब से वहाँ के श्रावकरत्न श्री अमरचन्द जी सांड़ एवं श्री पारसमल जी खटोड़ हर पूर्णिमा को गुरुदेव के दर्शन वन्दन का लाभ लेते हैं। वे पूर्णिमा के दिन पराना जैसे छोटे से ग्राम में भी उपस्थित हुए। 25 फरवरी को नटवाड़ा पदार्पण हुआ, जहाँ चौथ का बरवाड़ा संघ की ओर से भी सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन के त्याग का निवेदन पत्र पूज्य गुरुदेव के पावन श्रीचरणों में प्रस्तुत किया गया। श्री केवलचन्द जी जैन महारानी फार्म जयपुर वालों ने गुरुदेव के जयपुर पधारने से लेकर यहाँ तक विचरण विहार में सेवा का लाभ लिया। यहाँ से सिवाड़, सारसोप होते हुए डिढायत पधारे जहाँ अहमदाबाद संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। यहाँ से एक मार्च को पावडेढा ग्राम पधारे जहाँ प्रवचन सभा में सवाईमाधोपुर क्षेत्र के लगभग 400 लोग उपस्थित थे। चाकसू से ही अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, बजरिया सवाईमाधोपुर आदि स्थानों के श्रावकों द्वारा सेवा का लाभ लिया जाता रहा।

आचार्यप्रवर द्वारा फाल्गुनी चौमासी की स्वीकृति अलीगढ़-रामपुरा को

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने माघशुक्ला त्रयोदशी दिनांक 23 फरवरी, 2013 को वनस्थली निवाई के समीप पहाड़ी ग्राम में पदार्पण के पश्चात् श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलीगढ़-रामपुरा के सभी सदस्यों द्वारा रात्रि में सामूहिक भोज आयोजित न करने तथा उसमें भाग न लेने के निर्णय एवं संघ की प्रबल विनति को मान देते हुए साधुमर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ फाल्गुनी पूर्णिमा (होली चौमासी, 26 मार्च 2013) पर अलीगढ़-रामपुरा विराजने की स्वीकृति प्रदान की है। आचार्यप्रवर का निवाई से चौथ का बरवाड़ा की ओर विहार चल रहा है। वहाँ से अलीगढ़-रामपुरा (टोंक) पधारने की सम्भावना है। सम्पर्क सूत्र- 1. श्री गोपाललाल जी वैद्य, मेन बाजार, पो. अलीगढ़-रामपुरा-304023, जिला-टोंक(राज.),मो. 098295-01262, 2. श्री घनश्याम जी जैन-अध्यक्ष, फोन नं. 01436-266388, 94143-77997, 3. श्री लड्डूलाल जी जैन-मंत्री, मो. 94135-31433, 4. युवारत्न श्री पवन कुमार जैन-98296-27060 **आवागमन के साधन-** अलीगढ़ के लिए बजरिया, सवाईमाधोपुर एवं टोंक से रोडवेज की बसें उपलब्ध रहती हैं। नजदीक का रेलवे स्टेशन सवाईमाधोपुर एवं चौथ का बरवाड़ा है। अलीगढ़-रामपुरा सवाईमाधोपुर से 30 किमी. एवं चौथ का बरवाड़ा से 15 किमी. की दूरी पर स्थित है। सवाईमाधोपुर के लिए दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, आगरा, मथुरा, जयपुर आदि सभी स्थानों से ट्रेनें उपलब्ध हैं।

अक्षयतृतीया सवाईमाधोपुर में दो दीक्षाएँ सवाईमाधोपुर में तथा एक दीक्षा चेन्नई में

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने 27 जनवरी, 2013 को दीक्षा के दिन जयपुर में मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आंचलिया सुपुत्री श्री कांतिलालजी आंचलिया, सुपौत्री श्री नेमीचन्दजी आंचलिया-शोरापुर की जैन भागवती दीक्षा वैशाख शुक्ला पंचमी 15 मई, 2013 को वेपेरी-चेन्नई में होने की स्वीकृति प्रदान की। इसी प्रकार बड़ी दीक्षा के दिन मानसरोवर में 2 फरवरी, 2013 को परम कृपालु आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु प्रभा जैन एवं मुमुक्षु अन्तिमा जैन सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन-सवाईमाधोपुर की जैन भागवती दीक्षा 15 मई, 2013 को सवाईमाधोपुर में सम्पन्न होने की स्वीकृति प्रदान की। इसके साथ ही **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अक्षय तृतीया 13 मई, 2013 पर सवाईमाधोपुर विराजने की स्वीकृति सवाईमाधोपुर श्रीसंघ को प्रदान की है।** इससे

सवाईमाधोपुर क्षेत्र हर्षित एवं प्रमुदित है। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख कर सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने पधारने की सूचना संघ के प्रधान कार्यालय घोड़ों के चौक, जोधपुर ई-मेल absjrhssangh@yahoo.com फोन-0291-2636763/ 2641445 पर भिजवाने का श्रम करावें। **सम्पर्क सूत्र**-1. श्री राधेश्याम जी जैन गोटावाले-94618-63233, 2. श्री गणपतराज जी जैन-94603-17013, 3. श्री पारसचन्द जी जैन-94130-23430, श्री कुशलचन्द जी गोटे वाले-94604-41570

उपाध्यायप्रवर का विहार पीपाड़ एवं जोधपुर की ओर

मेड़ता के यशस्वी चातुर्मास के पश्चात् उपाध्यायप्रवर पंडित रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा का लगभग दो माह सकारण मेड़ता विराजने पर मेड़तावासियों को सहज सन्तों के सान्निध्य का लाभ मिला। इस दौरान परमपूज्य युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्मदिवस तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस पर दया, संवर, एकाशन में आशा से अधिक संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह दिखाया। संतवृन्द के द्वारा महान् योगी पूज्य हस्ती के अप्रमत्त जीवन पर प्रकाश डाला गया। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि संतों ने उपाध्यायप्रवर के संयमनिष्ठ जीवन का गुणानुवाद भावभीने शब्दों में प्रस्तुत किया। 2 फरवरी को जब उपाध्यायप्रवर ने मेड़ता से विहार किया तब मेड़तावासी भारी मन से गुरुजनों की विदाई में उपस्थित थे। संतों के सान्निध्य में उन्हें प्रवचन, ज्ञानचर्चा, धर्माराधन, सुपात्रदान आदि का जो संयोग प्राप्त हुआ, उसके अब सुलभ न होने का भाव सबके चेहरों पर अंकित था। प्रत्येक व्यक्ति चातुर्मास की उपलब्धियों के आनन्द का अनुभव कर रहा था एवं अपने को धन्य समझ रहा था। उपाध्यायप्रवर मेड़ता से मध्यवर्ती गांवों को फरसते हुए गोटन पधारे जहाँ लगभग 9 दिन विराजे। गोटन वासियों ने बढ़चढ़ कर धर्म लाभ लिया तथा प्रमोद का अनुभव किया। भोपालगढ़, पीपाड़, जोधपुर, कोसाणा आदि क्षेत्रों ने अपने-अपने क्षेत्र फरसने की भावभीनी विनति प्रस्तुत की। उपाध्यायप्रवर शारीरिक अशक्तता के बावजूद भी मनोबल से विहार कर कोसाणा होते हुए 27 फरवरी को पीपाड़ पधार गये हैं। पीपाड़ वासी सरल, शांत, चौथे आरे की बानगी एवं त्यागमूर्ति संत को अपने बीच पाकर प्रफुल्लित एवं प्रसन्नचित्त हैं। यहाँ चातुर्मास जैसा धार्मिक माहौल बना हुआ है। जोधपुर संघ की निरन्तर विनति को ध्यान में रखकर जोधपुर की ओर विहार की

संभावना है।

मध्यप्रदेश क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, इन्दौर के संयुक्त तत्त्वावधान में 20 से 23 फरवरी 2013 तक मध्यप्रदेश क्षेत्र के कालुखेड़ा, उन्हैल, उज्जैन, शाजापुर, सारंगपुर, आकोदिया मण्डी, शुजालपुर मण्डी, आष्टा, मगरदा, हाटपिपल्या, बागली, चावड़ा, इन्दौर, बागोद, सनावद, बड़वाह, करही आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर, इन्दौर स्वाध्याय संघ के प्रभारी श्री मोहन जी पीपाड़ा-इन्दौर तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शिखरचन्द जी छाजेड़-करही की भी सेवाएं अल्पकाल के लिए प्राप्त हुई। सभी स्थानों पर स्थानक में आकर सामायिक-स्वाध्याय करने हेतु, बच्चों की धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने हेतु, नये स्वाध्यायी बनाने हेतु, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने हेतु, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेने हेतु प्रेरणा की गई तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान कई स्थानों पर शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए। 13 नये स्वाध्यायी इस यात्रा के दौरान बनाए गए। जिनवाणी के सदस्य बनाने के साथ ही सभी स्थानों पर बच्चों के लिए रविवारीय संस्कार शिविर प्रारम्भ करने की प्रेरणा की गई।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

रेलवे में मात्र शाकाहारी भोजन की व्यवस्था हेतु रेलमन्त्री को लिखें पत्र

प्रतिदिन लाखों यात्रियों के लिए रेलगाडी के रसोईयान तथा प्लेटफार्म पर उपलब्ध रेलवे की भोजन प्रणाली भोजन सुलभ कराती है। रेलवे के विश्रामगृहों सहित बहुआयामी सुविधा केन्द्रों पर भी भोजन की व्यवस्था है। रेलवे की इस योजना में शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन तैयार होता है। इसलिए जहाँ मांसाहारी भोजन बनता है, वहाँ बने शाकाहारी भोजन का भी शाकाहारी लोग परित्याग करने को विवश हैं। भारत की बहुसंख्यक जनता शाकाहारी है। जो लोग मांसाहारी हैं वे भी दैनन्दिन जीवन में शाकाहार का प्रयोग करते हैं। केवल विशेष अवसरों पर ऐसे लोग मांसाहार का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार हमारे देश की सर्व-सामान्य भोजन प्रणाली शाकाहार है। इस कारण बहुत बड़ा वर्ग

रेलवे के भोजन का उपभोग नहीं कर पाता और रेलवे को आर्थिक नुकसान होता है। भारत राष्ट्र का आदर्श भी अहिंसा है। अतः इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए रेलवे को मात्र शाकाहारी भोजन की व्यवस्था रखनी चाहिए। इस हेतु जैन संघों द्वारा आन्दोलन किया जा रहा है। अतः सभी संघों से अनुरोध है कि वे रेल मंत्रालय को पत्र या ईमेल भेजकर शाकाहार-आन्दोलन में भागीदारी निभाएँ। *-महेश नाहटा-नगरी, शंकरलाल जैन-बालोद*

श्री जैन सेवा संघ मुम्बई द्वारा प्रतिभाओं का सम्मान

श्री जैन सेवा संघ मुम्बई द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत जैन अग्रणी प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस डॉ. विनीत जी कोठारी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न इस समारोह में मुख्यवक्ता पद्मश्री वरिष्ठ पत्रकार मुजफ्फर हुसैन एवं विशेष अतिथि बी.बी. संघवी थे। इस भव्य समारोह में 'समाज रत्न' से अग्रांकित महानुभावों को सम्मानित किया गया- 1. श्री मोतीलाल ओसवाल (चेयरमेन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर मोतीलाल ओसवाल फायनेन्सियल सर्विस लि.), 2. शिक्षा प्रेमी एवं समाजसेवी भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री सुमतिलाल कर्णावट, 3. सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट एवं टेक्सेशन के लेखक एन.एम. रांका, 4. फिजीशियन एवं शाकाहार के प्रणेता डॉ. कल्याण गंगवाल, 5. जैन दर्शन की विदुषी डॉ. प्रियदर्शना जैन , 6. समाजसेवी एवं गोसेवा क्षेत्र छत्तीसगढ़ के अग्रणी श्री अचलदास पारेख। मुख्यवक्ता मुजफ्फर हुसैन ने अपने संबोधन में कहा कि 21वीं सदी जैनियों की होगी। जैन समाज के लोगों को पूरे भारतवर्ष में जगह-जगह जैन यूनिवर्सिटीज की स्थापना करनी चाहिए ताकि भगवान महावीर के सिद्धान्तों को शिक्षा के माध्यम से युवा पीढ़ी तक पहुँचाया जा सके। मुख्यातिथि जस्टिस डॉ. विनीत जी कोठारी ने जैन समाज को संगठित होने व शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने का अनुरोध किया। कार्यक्रम में समाज के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

लुम्बिनी, नेपाल में बौद्ध एवं जैन दर्शन पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

लुम्बिनी इण्टरनेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट, नेपाल द्वारा 12 से 15 फरवरी, 2013 तक बौद्ध एवं जैन दर्शन पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, थाईलैण्ड, जापान, अमेरिका, भारत एवं नेपाल के 22 विद्वानों ने भाग लिया। भारत से डॉ. हम्पना नागराजैया-बैंगलोर एवं डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर (सम्पादक, जिनवाणी) ने भाग लिया। संगोष्ठी में थाईलैण्ड के पीटर स्कीलिंग ने मध्य

भारत में बौद्ध धर्म के उत्थान एवं पतन पर, जर्मनी की जूलिया हेजवाल्ड ने जैन एवं बौद्ध कला तथा स्थापत्य की समानताओं व भेदों पर पावर पोइन्ट प्रस्तुति दी। जर्मनी के ही वोल्कर बेह ने कुन्दकुन्द के समयसार एवं नागार्जुन के आधार पर आत्मा एवं तत्सम्बद्ध सिद्धान्तों की चर्चा की। फ्रांस की विदुषी नलिनी बलबीर ने इसिभासियाइं एवं बौद्धग्रन्थों में काव्यगत तुलना प्रस्तुत की। फ्रांस की ही एनी क्लेवल ने रोहिणी नक्षत्र के उदय को देखकर कृत्तिका नक्षत्र के उदय के अनुमान पर विश्लेषणात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किया। अमेरिका के कोइची शिनोहरा ने बौद्ध परम्परा में मण्डल के रीतिरिवाज पर, फिलिस ग्रेनॉफ ने बृहत्कल्पभाष्य में पश्चात्कृत पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। अमेरिका के ही क्रिस्टोफ चैपल ने शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव में महाभूत धारणाओं तथा बुद्धघोष के विशुद्धिमग्ग में कसिणों पर प्रकाश डाला। इंग्लैण्ड के पीटर फ्लूगल ने सात निह्नवों पर तथा जोनार्डन गनेरी ने जैन एवं बौद्ध ज्ञान-संस्कृति की वैज्ञानिकता तथा तर्क पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। जापान के फ्युजी नागशिन ने व्यवहारभाष्य पीठिका पर तथा दिवाकर आचार्य ने नेति-नेति, मध्यमा प्रतिपद् तथा अनेकान्त पर वैचारिक शोधपत्र प्रस्तुत किए।

भारत के हम्पना नागराजैया ने उत्तरी कनार्टक क्षेत्र में 12 वीं शती में जैन एवं बौद्ध जैन केन्द्रों पर हुए आक्रमणों पर प्रकाश डाला तथा धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने बौद्धन्याय एवं भारतीय परम्परा में निर्विकल्पता की अवधारणा पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। जेरोम पेटिट, त्रिखा, अल्बर्ट हनीश आदि के भी शोधपत्र प्राप्त हुए। सभी शोधपत्रों पर चर्चा हुई तथा प्रत्येक की प्रस्तुति हेतु 45 मिनट का समय दिया गया। विद्वानों ने लुम्बिनी एवं निकटवर्ती ऐतिहासिक स्थलों, अशोक के स्तम्भों आदि का अवलोकन किया। यह संगोष्ठी इसकी साक्षी रही कि जैन एवं बौद्ध दर्शन के सम्बन्ध में विश्व के अनेक देशों के विद्वान सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

प्राकृत भाषा एवं साहित्य विषयक कार्यशाला में प्रवेश हेतु स्वर्णावसर

बी.एल. इन्सटीट्यूट दिल्ली द्वारा पिछले चौबीस वर्षों से निरन्तर ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा और साहित्य के गहन अध्ययन हेतु प्रत्येक वर्ष कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। 2013 में इस कार्यशाला के पच्चीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अतः इस रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित यह कार्यशाला तीन सप्ताह के स्थान पर चार सप्ताह की दिनाँक 12 मई 2013 से 09 जून 2013 तक आयोजित होगी। इस कार्यशाला में संस्कृत, प्राकृत, पालि, हिन्दी, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा इनसे सम्बन्धित प्राच्य

विषयों में अच्छे अंकों से स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी, शोधार्थी एवं शिक्षण संस्थानों में इन विषयों में अध्यापन कार्यरत प्राध्यापक प्रवेश ले सकते हैं। संस्थान की वेबसाइट www.blinstitute.org से फार्म एवं जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। संस्थान में आवेदन-पत्र- प्राप्ति की अंतिम तिथि 31 मार्च 2013 है। **सम्पर्क सूत्रः-** प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-निदेशक, 011-27202065, 27206630, मो. 09868883648, Email:-director@blinstitute.org

प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास हेतु सुझाव

दिल्ली- 'राष्ट्रीय संस्कृत परिषद्' की बैठक केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री एम.एम. पल्लं राजु जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में प्रो. फूलचन्द जी 'प्रेमी' द्वारा प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास हेतु प्रमुख छह सुझाव दिए गए, यथा-

1. भारत सरकार द्वारा भाषाओं की मान्य आठवीं अनुसूची में प्राकृत भाषा को भी सम्मिलित किया जाये, ताकि इसकी चरणबद्ध रूप में निरन्तर प्रगति होती रहे।
2. आरम्भिक चरण में कम से कम एक प्राकृत महाविद्यालय एवं एक प्राकृत शोध संस्थान को आदर्श योजना के अन्तर्गत गृहीत करके राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के अन्तर्गत स्थापित किया जाए।
3. केन्द्रीय विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन हेतु स्वतन्त्र विभाग नहीं हैं। अतः कुछ प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के स्वतन्त्र विभाग की स्थापना की जाये।
4. सभी माध्यमिक परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में वैकल्पिक रूप में प्राकृत भाषा के पाठ्यक्रम के अध्ययन का प्रावधान किया जाये।
5. प्राकृत विद्वानों को प्रतिवर्ष राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया जाये। साथ ही पुरस्कार की सम्मानित राशि भी संस्कृत भाषा के पुरस्कार की जितनी प्रदान की जाये।
6. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के 10 परिसरों में से किसी भी परिसर में प्राकृत का स्वतन्त्र विभाग नहीं है, अतः स्वतन्त्र विभाग की स्थापना कीजिए।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पावन सान्निध्य में माघ शुक्ला द्वितीया 12 फरवरी, 2013 को घोड़ों का चौक स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, असीम आत्मशक्ति के धनी पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 93 वीं दीक्षा-जयन्ती तप-त्यागपूर्वक

मनाई गई। इस दिन करीब 100 दया, उपवास एवं एकाशन हुए। साध्वीप्रमुखा एवं महासती मण्डल ने पूज्य आचार्यश्री हस्ती के जीवन पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने भी संक्षिप्त एवं प्रेरणादायी विचार रखे। साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की 67 वीं दीक्षा-जयन्ती माघ शुक्ला त्रयोदशी 23 फरवरी, 2013 को सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में व्रतप्रत्याख्यान एवं तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। महासती मण्डल ने शासनप्रभाविका जी की स्वाध्याय एवं संयम के प्रति जागरूकता पर प्रकाश डाला। श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्री पारसमल जी गिड़िया एवं संघ अध्यक्ष श्री धनपतचन्द जी सेठिया ने अपने मनोभाव प्रकट किये। रविवारीय संस्कार शिविर के बालक-बालिकाओं ने पूज्या महासती जी के जीवन पर सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की। इस दिन लगभग 125 दया-संवर के प्रत्याख्यान हुए।

बोलिया (म.प्र.)- आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की 93 वीं दीक्षा जयन्ती माघ शुक्ला 2 मंगलवार दिनांक 12.2.2013 को **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा**. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में बोलिया (म.प्र.) में त्याग-तप की आराधना के साथ मनाया गया। उसी दिन व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. का भी 50 वां दीक्षा दिवस था। प्रात: 9.15 बजे प्रवचन सभा में महासती श्री सुमनलताजी म.सा., महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. महासती श्री यशप्रभाजी म.सा. ने गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. के अनेक गुणों की व्याख्या करते हुए जनसाधारण को प्रभावी प्रेरणा की। इस अवसर पर मारवाड़ संभाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी गिड़िया-जोधपुर, मध्यप्रदेश संभाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुमेरमलजी चोरड़िया-इन्दौर एवं संघ मंत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन-कोटा भी उपस्थित थे।

दीक्षा-दिवस के पावन प्रसंग पर सामायिक व्रत की आराधना के साथ 125 एकाशन हुए। महासतीजी के मालवा क्षेत्र के विचरण-विहार एवं दीक्षा दिवस के कार्यक्रम को सफल बनाने में बोलिया (म.प्र.) के सर्व श्री दिनेशजी चंगेरिया, श्री पुखराजजी कुण्डल बोहरा, श्री पवनजी रामसणा, श्री अशोकजी लोढ़ा, श्री प्रकाशजी भण्डारी, श्री मंगलेशजी लोढ़ा, श्री आशीषजी विजावत आदि युवा साथियों ने महती सेवाएं प्रदान की। बोलिया के आसपास के क्षेत्रों से पधारे अनेक भाई-बहिनों ने महासतीजी के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर ने किया।

सवाईमाधोपुर- यहाँ महावीर भवन में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के सान्निध्य में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 79 वां जन्मदिवस हजारों श्रद्धालुओं

की उपस्थिति में मनाया गया। श्रद्धेय महासती जी ने अपने संबोधन में फरमाया कि इस युग में ज्ञानी भी बहुत हैं, संत भी अनेक हैं, उपदेशकों की कोई कमी नहीं है परन्तु जो सिद्धान्तों पर दृढ़ रहकर अपनी साधना में लीन रहते हैं उनकी संख्या बहुत कम हैं। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. ऐसे संत हैं जिनका जीवन बोलता है। वे ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम हैं, जिन्होंने पचास वर्ष के संयमी जीवन में कभी कोई दाग नहीं लगने दिया। आचार्यश्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री जयश्री जी ने उपाध्यायप्रवर को ज्ञानक्रिया में मान नहीं रखकर उस पर दृढ़ता से चलने वाला महावीर का सच्चा सिपाही बताया। महासती श्री रुचिता जी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर को अद्भुत योगी एवं सेवा की बेमिसाल प्रतिमूर्ति बताया। इस अवसर पर 100 से अधिक श्रावकों ने 5-5 सामायिक तथा लगभग 80 साधकों ने संवर-साधना कीं।

मण्डावर महुआ रोड- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 25 जनवरी को युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्ती का 103 वां जन्मदिवस उपवास, एकाशन, आयंबिल, बेले-तेले के साथ मनाया गया। लगभग 75 की संख्या में तपस्याएँ हुई। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 5-5 सामायिकें की गई। महासती श्री मुक्तिप्रभा जी पल्लीवाल क्षेत्र में धर्माराधन का प्रबल अभियान चला रही हैं। उनकी प्रेरणा से आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष में 103 सजोड़े शीलव्रत के नियम कराये जा चुके हैं।

सुमेरगंजमण्डी (इन्दरगढ़)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तप-त्यागपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महासती जी की प्रेरणा से आयंबिल/ उपवास की लड़ी चलाने का संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में पोरवाल संघ के अध्यक्ष श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा, मंत्री श्री सुरेशचन्द जी जैन-कुश्तला, कोषाध्यक्ष श्री अशोक जी जैन-कोटा, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर आदि पदाधिकारियों सहित विभिन्न ग्राम-नगरों के लगभग 500 धर्मावलम्बी उपस्थित हुए।

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर, कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजू जी भण्डारी-बैंगलोर, श्रीमती मीना जी गोलेच्छा-जयपुर एक दिवसीय प्रवास पर जोधपुर पधारीं। श्रीमती लोढ़ा की अध्यक्षता में स्थानीय श्राविकाओं की आयोजित बैठक में चतुर्विध संघ-सेवा के कार्यक्रम के अन्तर्गत बालक-बालिकाओं व महिलाओं में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास कैसे हो, पर प्रकाश डाला गया। सामायिक-प्रतिक्रमण अर्थ सहित, बारह व्रत, भ्रूण-हत्या-निषेध शिविर, वर्ष में दो बार धार्मिक शिविर का आयोजन, विहार सेवा में भाग लेना,

स्वधर्मी भाई-बहिनों की सहायता, दस वर्ष के ऊपर की आयु की बालिकाओं को सलवारसूट मय दुपट्टा (पूर्ण परिधान) के बिना स्थानक में अन्य परिधान में प्रवेश नहीं करना आदि प्रेरणा करने हेतु श्राविकाओ से निवेदन किया गया। उन्होंने भावी योजनाओं के बारे में श्राविकाओं को जानकारी भी प्रदान की। *-बीना मेहता (महासचिव)*

हैदराबाद- उपाध्यायप्रवर पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 79 वां जन्मदिवस एवं दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की विदुषी शिष्या महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी आदि ठाणा के सान्निध्य में काचीगुडा जैन स्थानक में श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

भीलवाड़ा- श्री प्राज्ञ भवन में आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी का 93 वां जन्मदिवस तप-त्याग प्रत्याख्यानपूर्वक मनाया गया। आचार्यप्रवर के जीवन एवं कृतित्व का गुणानुवाद करने के साथ 175 से अधिक सामूहिक एकाशन हुए तथा 5-5 सामायिक की गई। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. एवं महासती मण्डल ने आचार्यप्रवर के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

अहमदाबाद- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 103 वां जन्मदिवस तथा श्रमणसूर्य मरुधर केशरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की 29 वीं पुण्यतिथि 26 जनवरी, 2013 को महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तप-त्याग के साथ मनाई गई।

जोधपुर- महावीर पाठशाला एवं संस्कार समिति जोधपुर द्वारा बालक-बालिकाओं के ग्रीष्मकालीन अवकाश (15 मई से 30 जून-2013 तक) में दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश एवं पंजाब में धार्मिक शिविरों का आयोजन किया जाना है। शिविर में सेवा देने के इच्छुक शिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर 29 से 31 मार्च 2013 तक जोधपुर में रखा गया है। **सम्पर्क सूत्रः**- श्री अनिल जैन-094132-93279

जयपुर- जीतो द्वारा यू.पी. एस.सी. एवं आर.पी.एस.सी. की परीक्षाओं की तैयारी के लिए निःशुल्क सुविधाएँ उपलब्ध करायी जा रही हैं। आवेदन की अन्तिम तिथि 31 मार्च 2013 है। प्रवेश हेतु परीक्षा 07 अप्रेल, 2013 को होगी। **सम्पर्क सूत्रः**- रत्नेश कुमार पोखरना-09314087490, www.jitoatf.org

मेड़ता- "श्री जयमल जैन छात्रावास" में प्रवेश प्रारम्भ हो गए हैं। छात्रावास में छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। **सम्पर्क सूत्र-** श्री सुशील भण्डारी-अधीक्षक, फोनः- 01590-231160, मो.94141-19283, 9660529022, Email-jaimaljainhostal@gmail.com

वैशाली- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान द्वारा डॉ. गुलाबचन्द चौधरी स्मारक

व्याख्यानमाला का 31 जनवरी, 2013 को "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जैन समाज का योगदान" विषय पर आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता श्री कुंदकुंद जैन पी.जी. महाविद्यालय, खतौली (उत्तरप्रदेश) के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. कपूरचंद जैन एवं जैन संदेश की सम्पादिका डॉ. ज्योति जैन थे। बिहार विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष इतिहासज्ञ डॉ. हरिशचन्द्र सत्यार्थी कार्यक्रम के अध्यक्ष थे।

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आचार्य श्री हस्ती की 103 वीं जन्म जयन्ती पर 08 फरवरी, 2013 को संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल अस्पताल में प्रातः 9.00 बजे से 4.00 बजे तक विशाल रक्त-दान शिविर का आयोजन किया गया।

अहमदाबाद- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शांत क्रांति संघ के तत्त्वावधान में "संस्कार संत-दर्पण" (लेखिका- साध्वी डॉ. चिन्मय श्री जी) पुस्तक पर खुली किताब प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रश्न पुस्तिका भेजने की अंतिम तारीख 15 अगस्त, 2013 है। इस प्रतियोगिता में देय पुरस्कार इस प्रकार हैं- शतप्रतिशतांक- 31000 रुपये, प्रथम- 21000 रुपये, द्वितीय- 11000 रुपये, तृतीय- 5000 रुपये, चतुर्थ- 3000 रुपये, पंचम- 2000 रुपये तथा 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को प्रोत्साहन पुरस्कार। पुस्तक का मूल्य 80 रुपये, प्रश्नप्रत्र का मूल्य 50 रुपये है तथा पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका पूर्ण सेट का मूल्य 100 रुपये है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा। **सम्पर्क सूत्र-** सुरेश चोरड़िया, ए- ग्राउण्ड फ्लोर, आनन्द व्यू अपार्टमेन्ट, शाही बाग, रेलवे क्रासिंग के पास, अहमदाबाद (गुजरात) मोबाइल- 09377462463

जोधपुर- महावीर इंटरनेशनल जोधपुर एवं दिव्या लोक संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में 21 से 26 फरवरी, 2013 तक निःशुल्क घुटनों का उपचार शिविर डॉ. मोहन भारती एवं उनके सहयोगी चिकित्सकों के सान्निध्य में लगाया गया। शिविर में लगभग 200 रोगियों ने लाभ प्राप्त किया। दिव्या लोक संस्थान जोधपुर द्वारा 17 फरवरी, 2013 को अहमदाबाद के नानक वरलानी के सान्निध्य में एकदिवसीय "स्वस्थ एवं सुखी जीवन" प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया।

बधाई

अक्षिता जैन

खुशबु गांधी

श्रेणिक चौपड़ा

अभिषेक कवाड

मयंक भंसाली

जोधपुर- सुश्री अक्षिता जैन (सुपुत्री श्रीमती ममता जी एवं श्री धर्मचन्द जी जैन (रजिस्ट्रार- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर) ने प्रथम प्रयास में ही C.S. (कम्पनी सेक्रेटरी) फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जोधपुर- सुश्री खुशबु गाँधी सुपुत्री श्रीमती ललिता-गौतमचन्द जी गाँधी एवं सुपौत्री श्री पद्मचन्द जी गाँधी ने एम.बी.ए. (आनर्स फाइनेन्सियल सर्विस) में वरीयता सूची में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

बालोतरा- श्री श्रेणिक कुमार चौपड़ा सुपुत्र श्रीमती अनिता-धर्मेशकुमार चौपड़ा एवं सुपौत्र श्री खीमराज जी चौपड़ा कवास वाले ने C.S. (कम्पनी सेक्रेटरी) की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

पीपाड़- श्री अभिषेक जैन सुपुत्र श्रीमती शरबत-सुरेश जी कवाड़ एवं सुपौत्र श्री झूमरलाल जी कवाड़ ने सी.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

जोधपुर- श्री मयंक भंसाली सुपुत्र श्रीमती सुलेखा जी-अशोक जी भंसाली, जोधपुर ने प्रथम प्रयास में C.S. (कम्पनी सेक्रेटरी) फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं जोधपुर में छठा स्थान प्राप्त किया है।

श्रद्धाञ्जलि

पीपाड़शहर- वीर पिता, समता के साधक, संत-सेवी श्रावकरत्न श्री शांतिलाल जी

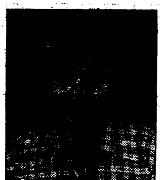

लुणावत का 21 फरवरी, 2013 को संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। संथारे का प्रत्याख्यान शासनप्रभाविका महासती जी की शिष्या महासती निरंजना जी ने कराए। श्रावकवर्य की आचार्य श्री, उपाध्याय श्री एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट आस्था थी। श्री लुणावत साहब का जीवन धार्मिक संस्कारों से युक्त था। आप गुरुभक्ति, सेवानिष्ठा एवं संघ-समाज की प्रवृत्तियों में सदैव समर्पित रहने वाले श्रावक थे। उन्होंने अपनी सुपुत्री को रत्नसंघ में दीक्षित कर संघ के गौरव में अभिवृद्धि की, जो सम्प्रति रत्नसंघ में महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. के रूप में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करते हुए जिनशासन की प्रभावना में सन्नद्ध हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर- संघहितैषी सुश्राविका श्रीमती सोहनकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री उत्सवचन्द जी भण्डारी का 31 जनवरी, 2013 को देहावसान हो गया। आपका जीवन उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से सुरभित था। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण

घर-परिवार, संघ-समाज में आप प्रतिष्ठित श्राविका थीं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती अंजू जी भण्डारी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की सचिव रही।

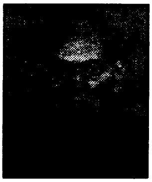

जयपुर- प्रबुद्ध सुश्रावक श्री रेखराज जी मेहता (जोधपुर निवासी) का 85 वर्ष की वय में 22 फरवरी, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप सहज एवं निष्कपट प्रवृत्ति के श्रावक थे। आप सबके हितैषी थे प्रेमभाव से रहना सिखाते थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित है एवं सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहता है।

जयपुर- सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ समाजसेवी सुश्रावक श्री सागरमल जी भण्डारी का 09 फरवरी, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के संथारे के समय पर निमाज में आपने एवं आपके पारिवारिकजनों ने जो सेवाएँ प्रदान कीं, उसकी स्मृतियाँ आज तक ताजी हैं।

घोड़नदी- स्नेहमयी, सहिष्णुता की साक्षात् प्रतिमूर्ति श्रीमती कमलबाई जी धर्मपत्नी श्री

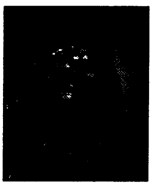

भवरीलाल जी फूलफगर 13 फरवरी, 2013 को 79 वर्ष की वय में कालधर्म को प्राप्त हो गईं। आपका समता और सरलता से युक्त जीवन था। आपकी विशेषताओं को देखते हुए उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. ने एक समारोह में आपको 'अन्नपूर्णा' की उपाधि से सम्मानित किया था।

राजनांदगाँव- सुश्रावक श्री मानकचन्द जी चौपड़ा का संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। आपने अंतिम समय में नेत्रदान एवं देहदान की इच्छा व्यक्त की। जलगांव निवासी श्री दलीचन्द जी भंवरलाल जी चोरडिया ने कर्मवीर मानकचन्द चौपड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट बनाने की घोषणा की है।

बालोतरा- तपस्वी साधिका श्रीमती उदयकंवर जी धर्मपत्नी श्री पुखराज जी चौपड़ा

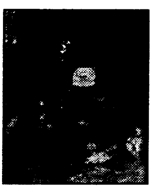

(बाड़मेर) का 73 वर्ष की उम्र में 10 फरवरी, 2013 को 26 घंटों के सजगता पूर्ण संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आपने अपने जीवन में उपवास से अठाई तक की अनेक तपस्याएँ की। आप नित्य 7-8 सामायिक करती थीं एवं आपके रात्रि-भोजन का त्याग एवं शीलव्रत का नियम था। आपकी संसार पक्षीय पुत्री विदुषी पुनीता श्री जी म.सा. आचार्य श्री नानेश के शासन में शोभा बढ़ा रही हैं। आपके पति श्री पुखराज जी चौपड़ा ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के बाड़मेर प्रवास पर तन-मन से सेवा करने का लाभ लिया।

जयपुर- सुज्ञ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी चौपड़ा (गंगाशहर निवासी) का रेल दुर्घटना में आकस्मिक निधन 22 फरवरी, 2013 को हो गया। उनका जीवन सहज एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपके मन में रत्नसंघ के प्रति गहरी निष्ठा थी।

कुशतला (सवाईमाधोपुर)- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री लड्डूलाल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री भंवरलाल जी जैन पुसेदा वालों का 85 वर्ष की आयु में 13 जनवरी, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप आजीवन रात्रिभोजन एवं जमीकंद के त्यागी थे। आपने 50 वर्ष की वय में साध्वीप्रमुखा महासती जी म.सा. से आजीवन शीलव्रत एवं 12 व्रत धारण किए थे। नित्य प्रति स्थानक जाकर ही सामायिक करते थे। आपने अंतिम समय में समता भाव के साथ संलेखना संथारा के प्रत्याख्यान किए।

जयपुर- धर्मानुरागी सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी कर्णावट का 18 फरवरी, 2013 को स्वर्गवास हो गया। कर्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता, मृदु भाषिता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

मदनगंज-किशनगढ़- मितभाषी, प्रामाणिक जीवन जीने वाले सुश्रावक श्री पारसमल जी

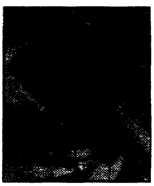

मेहता पुत्र स्व. श्री पूनमचन्द जी मेहता (हरमाड़ा वाले) का 66 वर्ष की वय में 16 जनवरी, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आपने संतों की प्रेरणा से पूरे परिवार सहित कई लौकिक आडंबरों का त्याग किया। श्री संघ द्वारा सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद के लिए आग्रह करने के बाद भी बिना पदभार लिये ही श्री संघ के तन-मन-धन से सहयोगी रहे। आपके पीछे आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है।

भवानीमण्डी- समता में धर्म स्वीकार करने वाली सुश्राविका श्रीमती अनोकबाई धर्मपत्नी

श्री सौभाग्यमलजी छाजेड़ जागीरदार का 31 अक्टूबर 2012 को देहावसान हो गया। आप नित्य 5-6 सामायिकें करती थीं। आपने मासखमण एवं कई तपस्याएँ कीं। आचार्य हस्ती हीरा मान के प्रति गहरी आस्था थी। आप प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लेती थी।

अलसूर (बैंगलोर)- सेवा की प्रतिमूर्ति, परोपकारी सुश्राविका श्रीमती शांताबाई धर्मपत्नी श्री सुगालचन्द जी तालेरा का 71 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन प्रेरणास्पद था। दीन-दुःखियों के प्रति आपके मन में सहायता का भाव रहता था। साधु-साध्वीजी की सेवा

शुश्रूषा के साथ नित्य नियमों का सजगता से आप पालन करती थीं।

जयपुर- श्राविकारत्न श्रीमती पूर्णिमा जी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द जी ढढ्डा का स्वर्गवास 12 फरवरी, 2013 को हो गया। आप नियमित सामायिक करती थीं। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं।

जयपुर- मृदुभाषी सरलमना सुश्राविका श्रीमती कान्ता देवी जी पोरवाल धर्मपत्नी श्री हरीशचन्द्र जी पोरवाल ने 25 दिसम्बर 2012 को संथारा सहित देह त्याग दी। सामायिक-स्वाध्याय आपकी दिनचर्या थी। संयम, सेवा और सहिष्णुता में अनुरक्त श्राविका के रात्रि-भोजन का त्याग था।

निझर (तापी)- श्रद्धायुक्त सुश्रावक श्री भंवरलाल जी कांकरिया का 81 वर्ष की वय में 3 फरवरी, 2013 को सागारी संथारे सहित समाधिमरण हो गया। वे 60 वर्षों से नित्य दो सामायिक करते थे, अन्य त्याग प्रत्याख्यान के भी नियम थे। उपाध्याय श्री के यहाँ पधारने पर आपने बहुत सेवा भक्ति की।

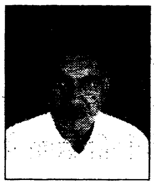

रीयां सेठों की (पीपाड़)- समर्पित सुश्रावक श्री झूमरलाल जी मूथा सुपुत्र श्री सुगनचन्द जी मूथा का 71 वर्ष की वय में 20 फरवरी, 2013 को देहावसान हो गया। वे समाज एवं संघ के प्रति निष्ठावान तथा समर्पित श्रावक थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अर्जन के साथ विसर्जन आवश्यक

दान देने से धन बढ़ता है, यह मैंने गुरुओं से सुना है एवं जीवन में कई बार अनुभव भी किया है। कई बार तो इसका फल तत्काल मिलते भी मैंने देखा है- इधर रसीद कटवाई, उधर मोबाइल पर कमाई की सूचना आई।

बन्धुओं! अर्जन के साथ विसर्जन अत्यन्त जरूरी है। अगर खाने के साथ जाना (उत्सर्जन) नहीं हो तो अनेक बीमारियाँ घर कर लेती हैं। पानी फिल्टर पीना पसंद, सोना शुद्ध पसंद है, तो दान देकर पैसे, सम्पत्ति, सम्पदा को क्यों हम फिल्टर नहीं करते। दान की महिमा अपरम्पार है। कई गुणा वापस होकर लौटती है। दानदाताओं को फलते-फूलते समृद्धिशाली वैभवशाली बनते देखने के पीछे भी यही कारण है। कुछ न कुछ देने का भाव हमेशा प्रतिदिन मन में रखना चाहिए। चाहे वह कबूतरों को चुग्गा हो, भिखारी, गाय, कुत्ते को रोटी, चारा, पानी हो अथवा असहाय गरीब को शिक्षा-खर्चा हो या घर में उनकी दुआओं से सुख-शांति-समृद्धि दौड़ी-दौड़ी आती है।

-श्री नरेन्द्र कक्कड़, ताराचन्द कक्कड़ स्मृति भवन, जयपुर-302018 (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

754 श्री विनयजी मरटिया, चर्च घर के पास, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

500/- की सदस्यता शुल्क द्वारा गत माह जिनवाणी पत्रिका के 22 आजीवन सदस्य बने।

250/- की अर्द्धमूल्य योजना के अन्तर्गत श्री प्रसन्नचन्दजी, पुनवानचन्दजी, ओस्तवाल परिवार (भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई) के सौजन्य से 69 आजीवन सदस्य तथा श्री लाभचन्द जी कोठारी-जयपुर के सौजन्य से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरणजी के सिद्धि तप के उपलक्ष्य में 26 आजीवन सदस्य बने हैं।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री संतोष कुमारजी खिंवसरा (निमाज वाले), अयनावरम-चेन्नई, चि. आकाशजी व पुत्रवधू सौ. ज्योतिजी द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन मुखारविन्द से गुरु आम्नाय ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री सुशीलजी, इन्द्राजी सिंघवी (ब्यावर वाले), जयपुर, चि. शशांक का शुभ विवाह सौ.कां. सोनलजी सुपुत्री श्री विनोद-नीराजी मेहता, दूदू वालों के संग 23.01.2013 को सुसम्पन्न होने पर।

5100/- श्रीमती मंजूजी कोठारी, जयपुर, श्री पदमचन्दजी कोठारी की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री माणकलालजी, मिश्रीलालजी कटारिया, रतलाम, श्री माणकलालजी कटारिया का स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर से 08 फरवरी, 2013 को सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री शान्तिलालजी, राजेन्द्र कुमारजी, विनोद कुमारजी ढाबरिया, भिनाय-अजमेर, चि. विपिनजी सुपुत्र श्रीमती शिमलाजी-शान्तिलालजी का शुभविवाह 17 जनवरी को सौ.कां. कीर्तिजी सुपुत्री श्रीमती सुनीताजी-स्व.श्री जितेन्द्र कुमारजी बुरड़, जयपुर के संग सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री नेमीचन्द जी ढढ्ढा, जयपुर, श्रीमती पूर्णिमा जी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द जी ढढ्ढा, पुत्रवधू श्री पूनमचन्द जी ढढ्ढा एवं सुपुत्री श्री गणपतलाल जी कोठारी का स्वर्गवास 12 फरवरी, 2013 को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती धनकँवरजी, संजय कुमारजी, मनोज कुमारजी, विशाल कुमारजी, सौरभ कुमारजी एवं कोविद कुमारजी मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, पूज्य श्री पारसमलजी मेहता का 16 जनवरी, 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्रीमती मनोहरदेवीजी धर्मपत्नी श्री केवलचन्दजी जैन, जोधपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्रीमती बिदामी देवी, श्री चन्द्रराज जी, महावीरराज जी मेहता, जयपुर, पिताश्री रेखराज जी मेहता (जोधपुर निवासी) का स्वर्गगमन 22 फरवरी, 2013 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1101/- हेमराज जी, दिलीपकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. इन्द्रकुमार जैन का शुभविवाह सौ. शिल्पी सुपुत्री श्री प्रेमबाबू जी जैन के साथ सम्पन्न होने पर।

1101/- डॉ. सम्पतराजजी-प्रेमलता जी जैन, जयपुर, चि. निखिल सुपुत्र ललित जी-नीलमजी जैन, अजमेर

का शुभविवाह सौ.कां. आकांशा सुपुत्री श्री सौभाग्यमल जी-सुशीला जी.लोढ़ा, जयपुर के साथ 28 जनवरी, 2013 को होने पर।

1100/- श्री रूपकुमार, मोहनराज, मदनराज, धर्मेशकुमार चौपड़ा कवासवाले, बालोतरा, श्रेणिककुमार चौपड़ा सुपुत्र श्री धर्मेशकुमारजी चौपड़ा द्वारा प्रथम प्रयास में C.S. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती मुन्नीदेवी जी धर्मपत्नी श्री नवरतन जी बाफणा, जोधपुर, सुपुत्र श्री दीपक-प्रियंका के विवाह की प्रथम वर्षगांठ पर।

1100/- श्री अनुपमजी लोढ़ा, मालवीय नगर-जयपुर, श्रीमती प्रीतिजी लोढ़ा के भजन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने की खुशी में।

1100/- श्री नेमीचन्दजी, निर्मल कुमारजी बुरड़, जयपुर, सौ.कां. अदिति का शुभविवाह चि. नवदीप के संग दिनांक 28 दिसम्बर 2012 को सुसम्पन्न होने पर।

1100/- श्रीमती प्रियंकाजी जैन धर्मसहायिका श्री रिंकु कुमारजी जैन (निसूरा वाले), हिण्डौनसिटी, पुत्र रत्न जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्रीमती रतनदेवीजी, संजयजी, शैलेशजी बोकाड़िया, धूलिया, स्व. श्री पन्नालालजी सुगनचन्दजी बोकाड़िया की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सुरेश जी, अमित जी, सुमित जी खिंवसरा, चेन्नई, परमपूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 67 वें दीक्षा-जयन्ती के पावन पर्व पर।

1000/- श्री राजेन्द्रजी कर्णावट, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1000/- श्री सन्तोषचन्दजी गाँधी, अजमेर, सुपौत्री के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1000/- श्री नेमीचन्द जी, गिर्राजप्रसाद जी, नरेशकुमार जी, इन्दौर, श्रीमती स्व. मन्नीदेवी जी जैन की पावन स्मृति में।

1000/- श्री दिलीप चन्द जी सुपुत्र स्व. श्री महिपालचंद जी भण्डारी, चेन्नई, परमपूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 67 वें दीक्षा-जयन्ती के पावन पर्व पर।

1000/- श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई, परमपूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 67 वें दीक्षा-जयन्ती के पावन पर्व पर।

501/- श्री सौभाग्यमलजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, सुपुत्र श्री सुनीत कुमारजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर, के कृषि अधिकारी (कृषि विभाग राजस्थान) के पद पर पदोन्नत होने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

501/- श्री महावीर प्रसादजी जैन (जुवाड़ वाले), जयपुर, चि. जितेशजी का शुभविवाह सौ.कां. नयनिकाजी सुपुत्री श्रीमती ललितादेवीजी-श्री अनिल कुमारजी जैन (सूरवाल वाले), जयपुर, के संग सुसम्पन्न होने पर।

501/- श्री त्रिलोकचन्दजी, अक्षयजी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. राहुलजी सुपुत्र श्री त्रिलोकचन्दजी जैन के क्यू-3 टैक्नोलाजी कम्पनी लि., गुडगाँव में सोफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्य ग्रहण करने पर।

501/- श्री सूरजमलजी, सौभाग्यमलजी (गाडोली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. सुनील कुमारजी सुपुत्र श्री सौभाग्यमलजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

501/- श्री जम्बुकुमारजी, नवीन कुमारजी, आलनपुर वाले, चि. प्रवीण कुमारजी जैन सुपुत्र श्री जम्बुकुमारजी जी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

501/- श्री रतनलालजी, पदमचन्दजी जैन, कुश्तला-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री लड्डूलालजी जैन (पुसेदा वाले) की पुण्य स्मृति में।

501/- श्री राजेन्द्र प्रसादजी, कमलकुमारजी, अशोक कुमारजी जैन, मालपुरा, पूज्य पिताश्री श्री मूलचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।

501/- श्री गौतमचन्दजी, पारसचन्दजी, रिखबचन्दजी, धर्मचन्दजी, जितेशजी, अजीत कुमारजी जैन, इन्दौर, पूज्य पिताश्री श्री परमानन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले) की पुण्य स्मृति में।

501/- श्री पारसमलजी जैन (सोनी), केकड़ी-अजमेर, चि. राहुलजी जैन का शुभविवाह दिनांक 07 दिसम्बर 2012 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

501/- श्री सत्येन्द्रजी एवं नलिनीजी कुम्भट, पाली-मारवाड़, चि. मोहितजी एवं खुशबूजी जैन के पुत्र रत्न जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम।

500/- श्री प्रकाशचंदजी जैन, अलवर वाले, सुपुत्र श्री अभिषेकजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

500/- श्रीमती छविजी सुराणा, बीकानेर की ओर से सप्रेम।

500/- श्रीमती कान्ता मेहता धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपनी पौत्री श्रद्धा का प्रतीक सिंघवी के साथ 22 दिसम्बर, 2012 को विवाह सम्पन्न होने पर।

500/- श्री प्रमोद जी, श्रेयांस जी बाफना, जोधपुर, परमपूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 67 वें दीक्षा-जयन्ती के पावन पर्व पर।

500/- श्री झुमरलाल जी शांतिलाल जी कवाड़, पीपाड़ सिटी, अपने सुपुत्र श्री अभिषेक सुपुत्र श्रीमती शरबत देवी धर्मपत्नी श्री सुरेश जी कवाड़ के प्रथम प्रयास में सी.ए. उत्तीर्ण करने की खुशी में।

500/- श्री अनराज जी, चंचलराज जी बोथरा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री प्रियंका बोथरा सुपुत्री श्री शांतिलाल जी बोथरा के सी.ए. में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में।

500/- श्री चन्द्रालाल जी, रमेशचंद जी, श्याम जी सोपवाले, गुलाबवाड़ी-कोटा, अपनी माताजी स्व. श्रीमती कमलाबाई जी की पुण्य तिथि पर।

500/- श्री सौभाग्यमल जी जैन छाजेड़ (जागीरदार), भवानी मण्डी, श्रीमती अनोकबाईजी का स्वर्गवास 31 अक्टूबर, 2012 को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

500/- श्रीमती उजास जी डाकलिया धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलाल जी, जोधपुर, सुपुत्र चि. रौनक का सौ. कां. रेखा सुपुत्री श्री इन्दरचन्द जी कर्णावट के साथ विवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

500/- श्रीमती सुलेखा अशोक जी भंसाली, जोधपुर, अपने पुत्र मयंक भंसाली के सी.एस. परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण होने तथा जोधपुर में छठा स्थान प्राप्त करने के प्रसंग में।

500/- श्री चान्दमलजी जैन (बूंदी वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सुपुत्र श्री सुनितजी जैन की राजकीय महाविद्यालय उनियारा (टोंक) में कम्प्यूटर इन्सट्रक्टर के पद पर नियुक्ति होने पर।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्री रितेश जी चोरड़िया, उज्जैन, श्री पारसमलजी चोरड़िया अपने सुपौत्र के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री हेमराजजी, दिलीपकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. इन्द्रकुमारजी सुपुत्र श्री हेमराजजी जैन का शुभविवाह सौ. शिल्पीजी सुपुत्री श्री प्रेमबाबूजी जैन के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्री शुभकरण जी जैन, अलीगढ़, चि. नवनीत जैन के शुभ विवाह की खुशी में।

501/- श्री महावीर प्रसादजी जैन (जुवाड़ वाले), जयपुर, चि. जितेशजी का शुभविवाह सौ.कां. कनिका जी सुपुत्री श्रीमती ललितादेवीजी-श्री अनिल कुमारजी जैन (सूरवाल वाले), जयपुर, के संग सुसम्पन्न होने पर।

501/- श्री बाबूलाल जी, कैलाशजी, ओमप्रकाशजी, मुकेश जी जैन,जरखोदा, श्रीमती शान्तिबाई जी धर्म

पत्नी स्व. श्री केसरलाल जी जैन की पुण्य स्मृति में।

501/- श्री जम्बुकुमार जी, नवीन कुमार जी जैन, आलनपुर, चि. प्रवीण कुमार का शुभ विवाह सौ.कां. कल्पना सुपुत्री श्री ज्ञानचंद जी जैन के साथ सम्पन्न होने पर।

501/- श्री सूरजमल जी, सौभाग्यमल जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. सुनीलकुमार सुपुत्र श्री सौभाग्यमल जी जैन का शुभविवाह सौ.कां. मौनिका के साथ सम्पन्न होने पर।

500/- श्री झुमरलाल जी शांतिलाल जी कवाड़, पीपाड़ सिटी, अपने सुपुत्र श्री अभिषेक सुपुत्र श्रीमती शरबत देवी धर्मपत्नी श्री सुरेश जी कवाड़ के प्रथम प्रयास में सी.ए. उत्तीर्ण करने पर।

500/- श्री सुभाष जी, प्रवीण जी, रविन्द्र जी, संदीप जी, आगमजी हुण्डीवाल, जोधपुर, परमपूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 67 वें दीक्षा-जयन्ती के पावन पर्व पर।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार प्राप्त

5501/- श्री महावीर प्रसादजी जैन (जुवाड़ वाले), जयपुर, चि. जितेशजी सुपुत्र श्रीमती कांतिदेवीजी-श्री महावीर प्रसादजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. नायिकाजी सुपुत्री श्रीमती ललितादेवीजी-श्री अनिल कुमारजी जैन (सूरवाल वाले), जयपुर, के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

100000/- श्री प्रकाशचंदजी हीरावत, जयपुर, पुस्तक 'आवश्यक मलयगिरि निर्युक्ति' का नूतन संस्करण मुद्रित कराने हेतु सप्रेम।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

80000/- श्री अशोक जी कवाड़, जोधपुर, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

60000/- श्री दुलीचन्द जी बागमार, चेन्नई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में एवं आप द्वारा छात्रवृत्ति योजना में प्रतिवर्ष सहयोग करने की भावना हेतु।

50000/- श्री चांदमल जी कर्णावट एवं परिवार, मुम्बई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

48000/- श्री बादलचन्द जी सुनीलकुमार जी बोहरा जोधपुर वाले, चेन्नई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री किस्तूरचन्द जी बाफना, जलगाव, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, चेन्नई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री सिखबचन्द रतनकंवर जी सिंघवी, जोधपुर, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं

पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

संशोधन

गतमाह पृष्ठ सं. 122 पर प्रकाशित साभार-प्राप्त-स्वीकार सूची में श्री घीसूलाल जी, वीरपिता श्री प्रकाशमलजी, रौनककुमार जी छल्लाणी, का गांव 'हीरादेसर' के स्थान पर 'असावरी' पढ़ा जाए।

आगामी पर्व

फाल्गुन कृष्णा 30, सोमवार	**11.03.2013**	**पक्खी**
फाल्गुन शुक्ला 8, बुधवार	**20.03.2013**	**अष्टमी**
फाल्गुन शुक्ला 14, मंगलवार	**26.03.2013**	**चातुर्मासिक पक्खी, चतुर्दशी**
चैत्र कृष्णा 8, बुधवार	**03.04.2013**	**अष्टमी, भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75 वां जन्मदिवस**
चैत्र कृष्णा 14, मंगलवार	**09.04.2013**	**चतुर्दशी**
चैत्र कृष्णा 30, बुधवार	**10.04.2013**	**पक्खी**

आवश्यक सूचना

27 जनवरी, 2013 को जयपुर में आयोजित सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक में ''जिनवाणी'' की उत्कृष्टता हेतु कतिपय निर्णय लिए गए हैं, जिनमें से कुछ नियम निम्नानुसार हैं-

1. **साभार-प्राप्ति-स्वीकार के अन्तर्गत अब आजीवन सदस्यों के नामों का उल्लेख नहीं किया जाएगा, जो इस बार से लागू कर दिया गया है।**
2. **अप्रेल-2013 के अंक में 1100 रुपये या इससे अधिक राशि प्रदान करने पर ही जिनवाणी में नाम प्रकाशित किया जाएगा तथा विवरण दो पंक्तियों से अधिक नहीं होगा।**
3. **1 अप्रेल 2013 से जिनवाणी की सदस्यता 20 वर्षों के लिए प्रदान की जाएगी तथा सदस्यता शुल्क 500 रुपये से 1000 रुपये हो जाएगा।**

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है ।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

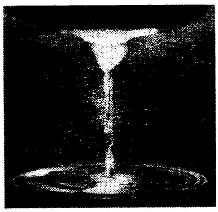
Electric Arc Furnace

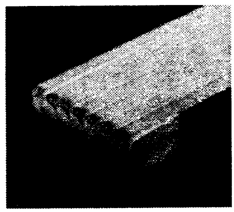
Billets

Rolling Mill

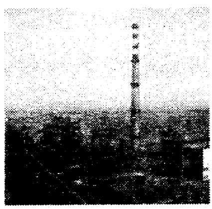
Captive Power Plant

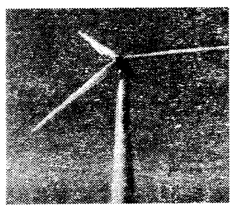
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक - अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

दीक्षा अर्द्धशती के पावन प्रसंग पर छात्रवृत्ति में सहयोग कर लाभ लिरावें...

आचार्य हस्ती के पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12,000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र सहयोग करावें।

दीक्षा अर्द्धशती महान्
जय गुरु हीरा, जय गुरु मान्

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा कर या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. AAATG1995J
Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

बुधमल बोहरा	हरीश कवाड़	मनोज कांकरिया	रविन्द्र जैन
संयोजक	सह-संयोजक	सह-संयोजक	सचिव
मो. 9444235065	मो. 9500114455	मो. 9414563597	मो. 9413401835

अनूठा दान छात्रवृत्ति का,
जीवन बनता एक विद्यार्थी का।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ जाहिर करते हैं कि "जिनवाणी" के उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में हमारा सहर्ष सदैव सहकार रहेगा।

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2013 ★ फाल्गुन, 2069

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

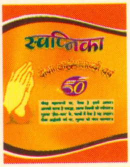

स्वप्निका

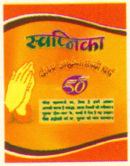

के लिए प्राप्त अभिमत

दो विरल विभूतियाँ एवं महान् साधक धर्म-गुरुओं आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर की दीक्षा अर्द्ध-शताब्दी के पावन प्रसंग पर सरल एवं सामान्य नियमों (व्रतों) की यह पुस्तिका ''स्वप्निका'' एक ऐतिहासिक प्रयास है। इसमें निरूपित व्रत नियमों का पालन हर आबाल-वृद्ध के लिए सुगम है। चौदह स्वप्नों को आधार बना कर दिये गये ये नियम (व्रत), दीक्षा-अर्द्धशताब्दी पर गुरुचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करने का सुनहरा मौका है जिसका लाभ उठाना हर श्रावक-श्राविका का कर्त्तव्य है। आशा है सभी सुश्रावक एवं सुश्राविकाएँ इस धार्मिक-व्रतों के यज्ञ में अपना अर्घ्य चढ़ाकर स्वयं को कृतार्थ करेंगे।

दिनांक : 15.01.2013

जसराज चौपड़ा
पूर्व न्यायाधिपति

'स्वप्निका उद्गार'

अन्तस्तोष होता है जब कोई विशेष कार्य देखने में आता है। स्वप्निका 14 स्वप्नों को त्याग-प्रत्याख्यान से जोड़कर, रुचि जगाने का कार्य कर रही है। स्वप्निका का अवलम्बन लेकर देश विदेश (बैंकॉक, हाँगकाँग, न्यूयार्क) में धर्म आराधना, गुरु भक्ति की एक सुन्दर लहर देखने/सुनने में आ रही है।

स्वप्निका में सुन्दर भावों से सृजित मुक्तक मंत्र मुग्ध करने वाले हैं, तो प्रेरणाओं के प्रवाह से जीवन को प्रकाशित करने वाली सूक्तियाँ भी समाविष्ट हैं। मैं आशा करता हूँ कि ये त्याग-प्रत्याख्यान की मणियों की माला स्वप्निका, श्रावक-श्राविकाओं के लिए जीवनोपयोगी बन कर्म निर्जरा में हेतु बनें। इसके अन्तर्गत समाविष्ट नियमों का सम्यक् आचरण करें। स्वप्निका स्वप्नों के माध्यम से बनायी एक कृति है, इन स्वप्नों को साकार करने का कार्य हम सब करें, ऐसी मंगल मनीषा है।

दिनांक : 05.02.2013

सुमेर सिंह बोथरा
निवर्तमान अध्यक्ष
अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन